हिंदुस्तानी संगीतकी

एनसाईक्लोपिडिया

पुस्तक नं. ५.

इस पुस्तकमें —

आसावरी, भैरवी और **तोडी** इन तीन थाट के २० रागों का विस्तारपूर्वक शास्त्रीय बयान, उनके आलाप, सुप्रसिद्ध सरगम, उस्तादी खान्दानि ध्रुपद, धमार, तराणा, ठुमरी, इत्यादि नोटेशनसह दियें हैं.

लेखक और प्रकाशक:

पंडित फिरोझ फ्रामजी, संगीतशास्त्री.

ख्याल गायकी, दिलखुश उस्तादी गायकी, तान प्रवेश, संगीत कला शिक्षक, हिंदुस्तानी संगीत विद्या (तीन भाग), राग सिरीझ (छे भाग), सन्त गीत लेहेरी, सितार होम ट्युटर, सितार गत-तोडे संग्रह इत्यादि ग्रंथों के कर्त्ते.

३२२, मेन स्ट्रीट, कँप, पुना.

सन १९३४.

मूल्य २ रु.

प्रास्ताविक हृदयानिवेदन.

हिंदुस्तानी संगीत की एनसाईक्लोपिडिया का यह पांचवा पुस्तक है. इसमें **आसावरी, भैरवी** और **तोडी** थाट के **२०** रागों के शास्त्रीय वर्णन, आलाप, सरगम, उस्तादी खान्दानि पदें इ० नोटेशनसह दियें हैं.

इस पुस्तक हमारे गुरुवर्य **श्रिमान पंडितजी विष्णु ना. भातखंडे,** बी. ए. एलएल.बी., वकील, हाई कोर्ट, बम्बई के "**हिंदुस्थानी संगीत पद्धति**" नामक ग्रंथ के चौथे पुस्तक के संक्षिप्त सारांश है, जो इस पुस्तक में लिखनेको पंडितजी ने महेरबानीसे परवानगी दी है, परंतु उसके शुद्धता के बाबतमें मैं जुमेदार हूं.

वैसाही हमारे गुरुबंधु **आली जनाब राजा मुहम्मद नव्वाब अलीखां,** एम.एल.सी., ताल्लुकेदार, अकबरपुर, इन साहबने भी अपने "**मआरिफुन् नगमात**" ग्रंथमें से कई पदें हमारे एनसाईक्लोपिडिया के ग्रंथमें लिखनेकी महेरबानीसे आज्ञा दी है, इस वास्ते वे दोनो विद्वान गुणीजन का मैं मनःपूर्वक आभार मानता हूं. और इस शास्त्रमें व कलामें तज्ज्ञ होकर प्रांजलतासे इस विद्या का दान करनेवालें तथा प्राचीन अर्वाचीन ग्रंथकार इत्यादि सर्वों का मैं कृतज्ञ हूं.

३२२, मेन स्ट्रीट, कँप,
पूना. ता. १५-८-१९३४.

आपका—
पंडित फिरोझ फ्रामजी.

रागों की सूची

आसावरी थाट के राग.

भैरवी थाट के राग.

तोडी थाट के राग.

सूचना.

इस पुस्तक के छपाईमें जिस जगह **कोमल स्वर** की ` यह निशानी न छपी हो उस जगह संगीत अभ्यासी राग के नियमानुसार दुरुस्ती कर लेंगे ऐसी विनंती है.

आसावरी ठाट–विचार.

इस थाट में ९ रागों का समावेश किया है. उनके नाम :—

(१) **आसावरी**, (२) **जौनपुरी**, (३) **गंधारी**, (४) **देवगंधार**, (५) **देसी**, (६) **खट**, (७) **दरबारी**, (८) **अडाणा**, (९) **कौंसी**.

आसावरी, जौनपुरी, गंधारी, देवगंधार, देसी और **खट** इन छे रागोंका गानेका समय दिनका दूसरा प्रहर है, और आश्रय राग **आसावरी** के अंगसे गायें जातें हैं. **“म् प, नी ध् प, म् प, ग्, रे, सा”** (ग् के ऊपर म्) यह तान **आसावरी** अंग को प्रदर्शित करनेवाली है. शेष **दरबारी, अडाणा** और **कौंसी** इन तीन राग **कानडा** के प्रकारें हैं, और उनका गानेका समय रात्रिका तीसरा प्रहर है.
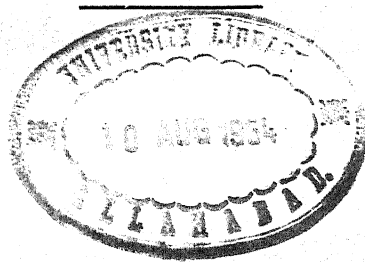
(१) राग आसावरी.

इसका ओडव-संपूर्ण वर्ग है. इसके आरोहमें **गांधार** तथा **निषाद** वर्ज है. आरोहमें यादि **निषाद** स्वर वर्ज है तो भी "**म् प, ध्, सां, नीसां**" ऐसा **षडज** की जोडमें अल्प प्रमाणमें लिया जाता है. जलद तानोंमें कभी कभी **नीषाद** स्वर "**म्पध्न्सां**" ऐसा सीधा भी लगा देते हैं. आरोहमें **गांधार** स्वर वर्ज है वो नियम नहीं तोड सकता, क्योंकि "**रे, म् प**" यह तान इस रागमें प्रधान है. इसमें **धैवत** स्वर पर "**नीध्, नीध्, प**" ऐसा आंदोलन का प्रयोग करतें है, जो विना यह राग गा नहीं सकते. इसमें **ऋषभ** तथा **गांधार** पर **मध्यम** की तथा **धैवत** पर **निषाद** की मींड अधिक अपेक्षित है. इस रागमें **ग्, प** व **ध्** इन तीन स्वरों का बहुलत्व है. इसके पूर्वांगमें "**म् प ग्,**" "**म्पध्म्प ग्**" तथा उत्तरांगमें "**रे, म् प, नी ध्, प**" यह तान बारबार आती है, जो रागवाचक भाग है. अवरोहमें **मध्यम** स्वर बहुधा गौण रखतें हैं, जैसे "**म्पध्म्प ग्,**" "**नी ध् प, ध् ग्, रे सा**". जलद तानोंमें अवरोहमें **मध्यम** स्वर "**नीध्पम्ग्रेसा**" ऐसा सीधा लगातें हैं.

अवरोहमें "**सां नी ध् प**" यह तानसे **भैरवी** राग की आशंका है, अतएव इस रागमें "**सां नी ध्, प** ऐसा **धैवत** स्वर पर ठहरकर **पंचम** स्वर लेते हैं. किंवा "**सां, रें नी ध्, प**" ऐसी तान लेतें है. इस राग के उत्तरांग **भैरवी** राग के सदृश है, अतएव इसको **भैरवी** से बचानेकी विशेष अवश्यकता है वो ध्यानमें रक्खें.

इसके अंतरे का उठाव "**म् प, ध्, सां; सां, रें सां**" ऐसा बहुधा होता है. इसकी गती तीनों सप्तकोंमें है. इसका वादी स्वर ध् है. गानेका समय दिनका दूसरा प्रहर है. यह समय के रागों में "**म् प, नी ध् प; म् प, ध् ग्, रे सा**" यह तान बारबार आती है. जिस राग में यह तान हो विस रागमें **आसावरी** अंग है ऐसा समजना. यह सब रागों के चलन उत्तरांगमें विशेष है. यह बहोत मधुर राग होनेसे आति लोकप्रिय है. इसमें विनय तथा शृंगार रस है. इसमें धृपद, ख्याल, तराणें, भजन आदि बहोत उत्तमतासे गाये जातें है. इसमें मींड का प्रयोग अधिक होता है.

ग्रंथके **आसावरी** रागमें **ऋषभ** स्वर **कोमल** है. **उत्तर हिंदुस्तान** में यह राग में **कोमल ऋषभ** का ही व्यवहार करतें है, और उसमें धृपद का अधिक प्रचार है. आरोहमें **गांधार** वर्ज होनेसे जलद तानों में **कोमल ऋषभ** से **मध्यम** पर आना कुछ कठिन होनेसें

ख्यालियोंने **तीव्र ऋषभ** का व्यवहार करना शुरु किया ऐसी समजूत है. ख्याल का प्रचार अधिक होने के लिए **आसावरी** रागमें सर्वदा **तीव्र ऋषभ** का व्यवहार किया जाता है.

इस राग का आरंभ बहुधा **मध्यम** स्वर से होता है याने **मध्यम** इस राग का ग्रह स्वर है. यह कुछ कडक नियम नहीं, क्योंकि कभी **धैवत** स्वरसे, तो कभी **ऋषभ** स्वरसे भी आरंभ होता है.

आसावरी, जोनपुरी, गांधारी, देसी, खट आदि को **तोडी** के विविध प्रकार मानतें है. संस्कृत ग्रंथ की **तोडी** का थाट अपना हिंदुस्तानी **भैरवी** थाट समान है वो ध्यानमें रक्खें.

आरोहावरोह स्वरुपः

म्   नी   म् सा
सा, रे म् प, ध्, सां । सां, नी ध्, प; म् प ग्, रे, सा.

म्   म् सा
पकड :— रे म् प, नी ध्, प; म्पध्म्प ग्; रे, सा.

स्वरविस्तार.

म्   नी नी नी   म्   म्   म् सा
सा, रे म्, प, ध्, ध्, ध्, प; ध्, म्प ग्; रे, सा; रे, म् प, नी ध्, प। सा रे सा; ग्, रे सा;

म् सा   .नी   म्   म्   म्
प ग्, रे सा; सा, नी ध्, प; म् प, ध्, सा, रे सा; रे म् प ध् ग्; नी ध्, प, म् प ध् ग्,

म्   म्
रे सा; रे म् प, नी ध्, प। सा रे म् प, नी ध् प; म् प सां, नी ध्, प; म्पध्म्प ग्; सा रे,

म्   सा   म्   नी नी   ×   नी
प ग्; सा रे, म् ग्; रे सा; रे म् प सां, ध्, ध्, प। म् प, ध्, सां, सां, रें सां; ग्ं रें, सां;

मं   नी   नी
पं ग्ं, रें सां; रें सां, नी ध्; सां, नी ध्, ध्, प; सारेम्पध्, रें सां, रें नी ध्, नी ध्, प; म् प,

म म्   म्   म्   सा   नी   नी नी
ध् ग्; रे म् पध्म्प ग्; रें नी, ध्, म् प ग्; रे सा; ध् म् प सां, ध्, ध्, प.

सरगम–आसावरी–त्रिताल.

म् प ऽ सां ॥ ध् ऽ प ऽ । ऽ म् ऽ प । पध् म्प ग् ऽ । रे रे सा ऽ ॥ सारे म्ग् रे सा ।
३ = (सम) २ ० ३ =

रे म् प ऽ । ध् ध्प म्प रे । म् प ऽ सां ॥ ध् ऽ प ऽ । ऽ ऽ म् प । ध् ऽ ऽ ध् ।
२ ० ३ = २ ०

सां नी सां सां ॥ सां ऽ ऽ ध् । ऽ सां ऽ रें । ऽ सांरें म्ंग्ं रेंसां । नीसां रेंसां ध् ऽ ॥
३ = २ ० ३

प ऽ प नी । ध् प प ऽ । ध् ध्प म्प रे । म् प ऽ सां ॥ (सम)
= २ ० ३

आसावरी–त्रिताल.

अंखियां में लागि रहे गोपाल, एरी सखी,
मैं जल जमुना भरत जात रही, देख आई मैं रसिक लाल. ॥ अंखिया ॥
रुनक झुनक पग नूपुर बाजे, चाल चलत गज राज,
जमुना तट नट धेनु चरावत, संग लिए लाखो ग्वाल. ॥ १ ॥
बिन देखे मोहे कलन परत है, निसदिन रहत बिहाल,
लोक लाज सब कुल की मर्यादा, निपट भ्रम का जाल. ॥ २ ॥

ध् म् पध् म्प	ग् ऽ रे सा	रे म् प सां	ध् ऽ प प	ध् म् प प
अं खि यांऽ मेंऽ	ला ऽ गि र	हे ऽ गो ऽ	पा ऽ ऽ ल	ए रि स खि
२	०	३	= (सम)	२

ध् पध्नी ध् प	ध् म् पध् म्प	ग् ग् रे सा	रे रे सा सा	सा सा गं गं
मैं ऽ ज ल	ज मु नाऽ ऽ	भ र न जा	ऽ त र ही	दे ख आ ई
०	३	=	२	०

म्								सा			नी नी				

रें रें सां सां ‖ रें नी़ ध् प | ध् म् पध् मप | ग् ऽ रे सा | रे म् प सां ‖ ध् ऽ ध् प |
मैं र सि क ‖ ला ऽ ऽ ल | अं खि यांऽ मेंऽ | ला ऽ गि र | हे ऽ गो ऽ ‖ पा ऽ ऽ ल |
३ = २ ० ३ =

ऽ ऽ ऽ ऽ | म् म् प प | ध् ध् ध् ध् ‖ सां ऽ सां सां | सां ऽ सां ऽ | ध् ऽ ध् ध् |
ऽ ऽ ऽ ऽ | रु न क झु | न क प ग ‖ नू ऽ पु र | बा ऽ जे ऽ | चा ऽ ल च |
२ ० ३ = २ ०

सां सां सां रें ‖ सांरें गं रें सां | रेंसां नी़सां ध् प | प पध्नी ध् प | ध् म् पध् मप ‖
ल त ग ज ‖ राऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ज | ज मुऽऽ ना ऽ | त ट नऽ टऽ ‖
३ = २ ० ३

ग् ऽ रे सा | रे ऽ सा सा | ध् प गं गं | रें ऽ सां सां ‖ रें सां नी ध् | पध् मप ध् प |
धे ऽ नु च | रा ऽ व त | सं ग लि ए | ला ऽ खो ग ‖ वा ऽ ऽ ल | अंऽ खिऽ यां में |
= २ ० ३ = २

ग् ऽ रे सा | रे म् प सां ‖
ला ऽ गि र | हे ऽ गो ऽ ‖ (सम)
० ३

तराणा – आसावरी – एकताल.

दीं तननन देरे लाला तन नितन तना तों तना,
दानि तदारे दानि नादिर दिर दानि तुं दिर दिर दानि, तदारे दानि. ॥दीं॥
ना दिर दिर दानि, तुं दिर दिर दानि, दानी तुंद्रे तद्रे दानि,
तदियनरे तदियनरे तदारे दानि. ॥दीं॥

रे ऽ | म् म् | प प | प सां | नी ध् | प प ‖ प नी | ध् प | पध् मप | ऽ ग् | ऽ रे |
दीं ऽ | त न | न न | दे रे | ला ला | त न ‖ नि त | न त | नाऽ ऽ | ऽ तों | ऽ त |
=(सम) ० २ ० ३ ४ = ० २ ० ३

सा ऽ ‖ सा सा | रे म् | रे म् | ऽ प | ध् ध्ध् | ध्ध् सां ‖ सां सां | सांसां सांसां |
ना ऽ ‖ दा नि | त दा | रे दा | ऽ नि | ना दिर | दिर दा ‖ नि तुं | दिर दिर |
४ = ० २ ० ३ ४ = ०

म् म् म्* ×प नी नी
सां सां | रे म् | रें म् | ऽ प || रें ऽ | म् म् | प प | म् मम् | पप ध् | ऽ ध् ||
दा नि | त दा | रे दा | ऽ नि || दीं ऽ | त न | न न | ना दिर | दिर दा | ऽ नि ||
२ ० ३ ४ = ० २ ० ३ ४

नी नी नी नी नी नी सां नी
ध् धध् | धध् सां | ऽ सां | ध् ध् | ऽ सां | ऽ गं || रें सां | ऽ ध् | ऽ प | प प |
तुं दिर | दिर दा | ऽ नी | दा नी | ऽ तुं | ऽ द्रे || त द्रे | ऽ दा | ऽ नि | त दि |
= ० २ ० ३ ४ = ० २ ०

नी नी म् म्
रें रें | रें ऽ || ध् ध् | सां सां | सां ऽ | ग् ग् | रे सा | ऽ सा ||
य न | रे ऽ || त दि | य न | रे ऽ | त दा | रे दा | ऽ नि ||
३ ४ = ० २ ० ३ ४

आसावरी – धमार (कोमल ऋषभ प्रकार)

आई खेलके फाग लला सों हमसे छिपावत कहा जिया ठानी.
हूं तो थारी प्यारी सखी री, वो तो जानत है नंद जिठानी.

नी नी म्
रे् म् | प ऽ || ध् ऽ ध् | नी ध् | प ऽ | ध् ऽ म् | म् ऽ | प ध् || ग् ऽ रे् | रे् सा |
आ ऽ | ई ऽ || खे ऽ ऽ | ल ऽ | के ऽ | ऽ ऽ ऽ | फा ऽ | ग ल || ला ऽ ऽ | सों ऽ |
३ ० =(सम) ० २ ० ३ ० = ०

नी नी नी
ध् ऽ | ध् सा ऽ | रे् ग् | रे् ऽ || रे् सा सा | रे् म् | प ऽ | प ध् ऽ | नी ध् | प ऽ ||
ह ऽ | म से ऽ | छि पा | ऽ ऽ || व त क | हा ऽ | जी ऽ | या ठा ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ ||
२ ० ३ ० = ० २ ० ३ ०

म् * × नी
ध् म् म् | प ध् | ग् ऽ | रे् ऽ सा | रे् म् | प ऽ || म् प ध् | ऽ ऽ | सां ऽ | ऽ सां ऽ |
ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ | नी ऽ ऽ | आ ऽ | ई ऽ || हूं ऽ तो | ऽ ऽ | था ऽ | ऽ री ऽ |
= ० २ ० ३ ० = ० २ ०

नी
ध् ऽ | सां ऽ || रें गं रें | सां ऽ | नी ध् | प म् ऽ | प ध् | सां ऽ || नी ध् प |
प्या ऽ | री ऽ || स खी ऽ | री ऽ | वो तो | जा ऽ ऽ | न त | है ऽ || नं ऽ द |
३ ० = ० २ ० ३ ० =

म् *
प ध् | ग् ऽ | रे् ऽ सा | रे् म् | प ऽ ||
जि ठा | ऽ ऽ | नी ऽ ऽ | आ ऽ | ई ऽ || (सम)
० २ ० ३ ०

(२) राग – जौनपुरी.

आसावरी तथा **जौनपुरी** यह दोनो समप्रकृतिके राग है. **आसावरी** से इसका विशेष भेद यही है कि **आसावरी** के आरोहमें **निषाद** स्वर वर्ज है और इस **जौनपुरी** के आरोहमें **निषाद** स्वर का व्यवहार होता है. इसमें "**म् प ग्; रे, म् प**" यह तान बारबार आती है. यह तान **गांधारी** का रागवाचक भाग है, अतएव इस राग **आसावरी** व **गांधारी** के मिलापसे बना हुआ प्रतीत होता है. यह कुछ ग्रंथ का राग नहीं, मगर एक आधुनिक प्रकार है. **शर्की** घराणे का **राजा सुलतान हुसेन जोनपुरी** ने यह राग प्रचारमें लाया ऐसी समजूत है.

इसमें **पंचम** स्वर का बहुलत्व है और वो मुख्य विश्रांति स्थान भी है, अतएव कोई **पंचम** स्वर को वादी मानतें है. **धैवत** स्वर को वादी मानना अधिक अनुकूल है. इसकी गती मध्य और तार सप्तकोंमें विशेष है. इसके अंतरे का उठाव "**म् प, ध्, नी् सां; नी् सां**" ऐसा बहुधा होता है. बाकी सब बात **आसावरी** के तूल्य है. यह बडा उत्तम तथा सुकुमार राग है. दिनके दूसरे प्रहर के रागों में अधिक प्रिय है. जिसको राग नियम मालूम नहीं, वो इस राग को **आसावरी** कहतें हैं.

आरोहावरोह स्वरुप.

सा, रे म्, प, ध्, नी् सां। सां, नी् ध्, प; म् प ग्, रे सा.

पकड:— म् प, नी् ध्, प; ध् म् प ग्; रे म् प.

नोट—कभी कभी इस राग के आरोहमें **तीव्र निषाद** का भी व्यवहार करतें है, जैसे "**म् प, ध्, नी सां, सां, नी सां; ध् नी सां रें गं् रें, सां, नी सां ध् प,**" इ. इ.

स्वरविस्तार.

सा, रे म्; म् प; म्, प, ग्; रे, सारे; सा; सा रे; सा रे ग्; रे; सा; .नी सा;

.नीसारे.नीसा .ध्; .प, .ध्, सा; रेम्पध् म्पग्; रे, सा; .नी .नी सा, रे, सा। रे, म्, प; म्, प,

ध्, ध्, प; ध्, प, ध्, म्; म् प म् ध् प नी ध्, प; म्पध्म्प ग्; रेपम्प ग्; सारे प, ग्; रे सारे,

सा; .नी .नी सा, रे, सा। सा रे म् प; नी, ध्, प; म्पध्म्प, ध्, नी, ध्, प; म्, प प, ध् ध्;

नी ध् प; म्पध्, पध्नी, ध्, प; रेम्प, म्पध्, पध्नी, ध्, प; म्पध्म्प ग्; सा रे, प ग्; रे, सारे,

सा; .नी .नी सा, रे, सा। म् म्, प, ध्, सां; नी नी सां; ध्, प; म्पध्नी सांरेंग्रें, नीसां, ध्, प;

सां; ध्, प; सारेम्प सां, ध्, प; रें, नी सां; पध्ग्; रे, सा; .नी .नी सा, रे, सा.

सरगम–जानपुरी–त्रताल.

म् म् प नी । ध् प ध् म् ॥ प ग् रे म् । प ऽ प ऽ । ध् ध् प नी । ध् प ध् म् ॥
० ३ =(सम) २ ० ३

प ग् ऽ रे । रे रे सा ऽ । सा रे म् रे । म् प ध् प ॥ प ग्ं रें सां । रें नी ध् प ।
= २ ० ३ = २

ध् म् प नी । ध् प पध् म्प ॥ ग् रे म् म् । प ऽ प ऽ ।: म् प ध् नी । सां ऽ नी सां ॥
० ३ = २ ० ३

ध् नी सां ग्ं । रें सां ध् प :। प ग्ं रें सां । रें सां ध् प ॥ सां नी ध् प । ग् ग् रे सा ।
= २ ० ३ = २

जौनपुरी - त्रिताल.

राम बिना तेरा कोई न सहाई, रात दिना तूं सुमिरले भाई.
यह जग है कोई दिनका मेला, क्यौं झूटी है प्रीति लगाई,
भाई बंधू कुटुंब छोड कर, तनहा जावेगा तूं भाई. ॥१॥

कछु भी तेरे संग चलना नाहीं, महल माडियां खूब बनाई,
एक पल भी हरि नाम न लीना, आयुश अपनी वृथा गमाई. ॥२॥

कोई है सुखमें, दुःखमें है कोई, यह रचना है राम बनाई,
"माधव" रहुं इश्वर को शरणी, जो परलोक में हो सुखदाई. ॥३॥

प ... नी़ ... म् सा
|: ध् म् प सां | ध् ऽ पध् मृप | ग् रे म् म् || प ऽ प ऽ :| नी़ ऽ नी़ नी़ | सां ऽ सां ऽ |
रा ऽ म बि | ना ऽ तेऽ राऽ | को ई न स || हा ऽ ई ऽ | रा ऽ त दि | ना ऽ तूं ऽ |
२ ० ३ =(सम) २ ०

नी़ ... * ... नी़
नी़ सां नी़सां रेंसां || ध् ऽ प ऽ | म् ऽ प सां | ध् ऽ पध् मृप | रेग् सारे मृरे म् ||
सु मि रऽ लेऽ || भा ऽ ई ऽ | रा ऽ म बि | ना ऽ तेऽ राऽ | कोऽ ईऽ नऽ स ||
३ = २ ० ३

× ... नी़
प ऽ प ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | म् ऽ प प | ध् ऽ नी़ नी़ || सां सां सां ऽ | रें नी़ सां ऽ |
हा ऽ ई ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ये ऽ ज ग | है ऽ को ई || दि न का ऽ | मे ऽ ला ऽ |
= २ ० ३ = २

सां ... नी़
नी़ ऽ नी़ ऽ | सां ऽ सां सां || रेंसां नी़सां नी़सां रेंसां | ध् ऽ प ऽ | पध् नी़ ध् प |
क्यौं ऽ झू ऽ | टी ऽ है ऽ || प्रीऽ ऽ तिऽ लऽ | गा ऽ ई ऽ | भाऽ ऽ ई ऽ |
० ३ = २ ०

म् ... सा ... सां ... नी़
ध् म् पध् मृप || ग् ग् रे सा | ऽ रे सा सा | सा सा ग् ऽ | रें सां नी़ सां || ध् ऽ प ऽ |
बं ऽ धूऽ ऽ || कु टुं ब छो | ऽ ड क र | त न हा ऽ | जा वे गा तूं || भा ऽ ई ऽ |
३ = २ ० ३ =

राम बिना, इ० इ०

जौनपुरी – झपताल.

सुमीर हो नाम को मनहीं के मन में, दी जिये दान गुरु शाहे मानी.
सींचिये बेल तन भाग मेरे को, अमृत फल लगे हर डार डारी.

प		नी	प	म्		म्	सा
ध् म्	प धृप सां	ध् प	ध् म् ऽ	प ग्	रेग् सारे प	ग् ग्	रे ऽ सा
सु मि	र होऽ ऽ	ना ऽ	म को ऽ	म न	हींऽ ऽ के	म न	में ऽ ऽ
=	२	०	३	=	२	०	३
.नी	म्		नी नी				
सा ऽ	रे म् ऽ	प ऽ	प ध् ध्	पध् मृप	सां ऽ नीसां	नीसां रें	नी ध् प
दी ऽ	जि ये ऽ	दा ऽ	न गु रु	शाऽ ऽ	हे ऽ ऽ	माऽ ऽ	नी ऽ ऽ
अ×	नी नी		सां	नी नी			नी
म् प	ध् ध् नी	सां ऽ	नी सां सां	ध् ध्	सां सां ऽ	रें सां	ध् ऽ प
सीं ऽ	चि ये ऽ	बे ऽ	ल त न	भा ऽ	ग मे ऽ	रे ऽ	को ऽ ऽ
प				प		म्	सा
गं गं	रें रें सां	रें रें	नी ध् प	म् प	नी ध् प	ग् ऽ	रे ऽ सा
अ मृ	त फ ल	ल गे	ऽ ह र	डा ऽ	ऽ ऽ र	डा ऽ	ऽ ऽ रि

चतरंग – जौनपुरी – त्रिताल

चतरंग रससू गाईये, ले जाईये सूर ताल पर आलाप करके सुनाईये.
ना दिर दिर दिर धेत्तेलाना दीम दीम तनन, तदारे तदारे तार दीम दीम,
सा सा रे रे म् म् प प ध् ध् नी नी सां सां,
तक विलांग धुम किटतक गदिगिन क्डान धा, क्डान धा, क्डान.

म् प नी		म् सा		नी नी	
प सां ध् प	ध् म् पध् मृप	ग् ऽ रे म्	प ऽ ऽ ऽ	ध् ऽ ऽ ध्	ऽ प पध् मृप
च त रं ग	र स सूऽ ऽ	गा ऽ ऽ ई	ये ऽ ऽ ऽ	ले ऽ ऽ जा	ऽ ई येऽ ऽ
०	३	= (सम)	२	०	३

म् ग् ऽ रे सा	ऽ रे सा सा	म् रे म् ऽ म्	प ऽ प सां	नीसां रेंग् रेंसां नीसां	नी ध् ऽ प धम्
सू ऽ र ता	ऽ ल प र	आ ला ऽ प	क ऽ कैं सु	नाऽ ऽ ऽ ऽई	ये ऽ ऽ ऽ
=	२	०	३	=	२

अ× म् मम् पप पप	नी नी ध् ध् नी नी	सां ऽ ऽ सां	नी सां सां सां	नी नी ध् ध् ऽ ध्	सां सां ऽ रें
ना दिर दिर दिर	धे त्ते ला ना	दीं ऽ ऽ म्दीं	ऽ म्त न न	त दा ऽ रे	त दा ऽ रे
०	३	=	२	०	३

सांरें गं् रें सां	रें नी ध् प	सा सा रे रे। म् म् प प ॥ नी नी ध् ध् नी नी। सां ऽ सां ऽ।
ताऽ ऽ ऽ दीं	ऽ म्दीं ऽ इम	० ३ = २
=	२	

नी मम् पप ऽध् नीनी	सांसां सांसां सांसां सांसां	रें ऽ नी, ध्	ऽ प, ध् ऽम्
तक धिलां ऽग धुम	किट तक गदि गिन	क्डा ऽ न्धा क्डा	ऽ न्धा क्डा ऽन
०	३	=	२

चतरंग, इ० इ०

---

(३) राग गांधारी.

आसावरी, जौनपुरी और **गांधारी** यह तीनों समप्रकृतिके राग है. **आसावरी** के आरोहमें **निषाद** स्वर का व्यवहारसे **जौनपुरी** राग होता है, और **जौनपुरी** के अवरोहमें **कोमल ऋषभ** का व्यवहारसे **गांधारी** राग होता है. यह तीनों राग का विशेषतः भेद है. बाकी सब बात **जौनपुरी** के तूल्य है.

यह ग्रंथका राग है. इसको **गांधारी तोडी** भी कहतें हैं.

आरोहावरोह स्वरूप.

म् नी म्
सा, रे म्, प, ध्, नी सां। सां, नी ध्, प, म् प ग्, रे्, सा.

म् म्
पकड :– रे म् प, नी ध्, प; सां, नी ध्, प; म् प ग्; रे्, सा.

नोट—जौनपुरी राग का स्वरविस्तार के अवरोहमें **कोमल ऋषभ**का व्यवहारसे यह **गांधारी** राग का स्वरविस्तार होगा, अतएव यहां दुबारा लिखा नहीं. इसके मुख्य चलन नीचे मुजब,

नी नी म् सा नी ग्
सा, ध्, ध्, प ध्, ग्; रे म्, प, ध्, सां; नी सां, रें रें सां; ध् प; म् प ग्; रे, सा.

सरगम–गांधारी–त्रिताल

म् सा नी
म् म् प नी । ध् प ध् म् ॥ प ग् ऽ रे । म् म् प ऽ । ध् ध् प नी । ध् प ध् म् ॥
० ३ =(सम) २ ० ३

म् सा
प ग् ऽ रे् । ग् रे् सा ऽ । सा सा गं गं् । रें सां ऽ रें् ॥ नी ध् ऽ नी । ध् ध् प ऽ ।
= २ ० ३ = २

अ× नी नी
म् प ध् ध् । सां ऽ नी सां ॥ नी सां रें सां । नी सां नी ध् । प गं् रें गं् । रें सां ध् प ॥
० ३ = २ ० ३

म् *
नी ध् प ध् । ग् ग् रे् सा । म् म् प नी । ध् प ध् म् ॥ (सम)
= २ ० ३

गांधारी–त्रिताल.

पियु परदेस गये नाहिं आवत, कित जाऊं सखि कछु न भावत.
उमगे जोबन तरसे जियरा, राह तकत नित रैन गमावत.

	नी	म् सा				
।: म् प सां नी	ध् ऽ पध् म्प	ग् ऽ रे म्	प ऽ प प :	म् प नी ध्	प ऽ ध् म्
पियु प र	दे ऽ स ग	ये ऽ न हिं	आ ऽ व त	कि त जा ऽ	ऊं ऽ स खि
३	= (सम)	२	०	३	=

म्	अ×		सां		नी
प ग् ऽ रे्	ग् रे् सा सा	म् म् प ध्	सां ऽ नी सां	रें गं् रें सां	रें सां ध् प
क छु ऽ न	भा ऽ व त	उ म गे ऽ	जो ऽ ब न	त र से ऽ	जि य रा ऽ
२	०	३	=	२	०

प ध्‌ म्‌ *
ध्‌ गं्‌ रें्‌ सां ‖ रें्‌ नी्‌ ध्‌ प | नी्‌ ध्‌ प ध्‌ | ग्‌ ऽ रे्‌ सा | म्‌ प सां नी्‌ ‖
रा ऽ ह त ‖ क त नि त | रै ऽ न गु | मा ऽ व त | पि यु प र ‖ (सम)
३ = २ ० ३

गांधारी – चौताल.

व्यास शाम अनगन गुन ज्ञान नीके सगुन लगन धरी.
दीनी बरस गांठ शाहनशाह औरंगजेब की,
करत हैं आन कोट कोट बरसन की आरबल करी.

नी म्‌ सां सां प म्‌
ध्‌ प | ध्‌ म्‌ | प ग्‌ ‖ सारे म्‌ | प प | प नी्‌ | सां ध्‌ | प ध्‌ | प म्‌ ‖ प प | ग्‌ सारे | म्‌ प |
व्या ऽ | ऽ ऽ | ऽ स ‖ शाऽ ऽ | ऽ म | अ न | ऽ ग | न गु | न ज्ञा ‖ ऽ न | नी ऽ | के ऽ |
० ३ ४ =(सम) ० २ ० ३ ४ = ० २

म्‌ म्‌ म्‌ म्‌ नी * म्‌ ×
ग्‌ ऽ | ग्‌ रे्‌ | सा रे ‖ म्‌ प | ग्‌ ग्‌ | रे्‌ सा | ध्‌ प | ध्‌ म्‌ | प ग्‌ ‖ म्‌ प | नी्‌ ध्‌ | प सां |
स ऽ | गु ऽ | न ल ‖ ऽ ग | न ध | री ऽ | व्या ऽ | ऽ ऽ | ऽ स ‖ दी ऽ | नी ऽ | ऽ ब |

मं्‌ सां
सां नी्‌ | सां सां | ऽ सां | सां गं्‌ | रें्‌ सां | सां गं्‌ | रें्‌ सां | सां ऽ | सां सां ‖ नी्‌ सां | सां सां | ऽ नी्‌ |
र स | ऽ गां | ऽ ठ | शा ऽ | ह ऽ | न शा | ऽ ह | औ ऽ | रं ग ‖ जे ऽ | ब की | ऽ क |

सां म्‌ सां
सां सां | रें्‌ सां | ध्‌ ऽ | प ग्‌ | सारे म्‌ | प म्‌ | प प | नी्‌ ध्‌ | प प ‖ सां ऽ | सां ऽ | नी्‌ सां |
र त | है ऽ | आ ऽ | न को | ऽ ट | को ऽ | ट ब | र ऽ | ऽ स ‖ न ऽ | की ऽ | ऽ ऽ |

सां सां नी* म्‌
प ध्‌ | म्‌ प | प सां ‖ सां सां | नी्‌ सां | ध्‌ प | ध्‌ प | ध्‌ म्‌ | प ग्‌ ‖
ऽ ऽ | ऽ ऽ | आ ऽ ‖ र ब | ल क | री ऽ | व्या ऽ | ऽ ऽ | ऽ स ‖ (सम)

गांधारी - धमार

मारत पिचकारी दैया छिप छिप शाम बिहारी.

जमना जल भरन जातथी, बीच मिले मोहे कुंवर कन्हाई.

म् नी नी प

मृपनी धृमृप || गृ ऽ सारे | मृ प | प ऽ | धृ धृ प | धृ मृ | प धृमृप ||

मारत पिऽच || का ऽ ऽ | री ऽ | दै ऽ | या ऽ ऽ | छि प | छि ऽऽप ||

० =(सम) ० २ ० ३ ०

म् म् म * × नी नी

गृ रे़ सा | सा ऽ | रे प | गृ ऽ रे़ | सा ऽ | मृपनी धृमृप || मृ प ऽ | धृ ऽ | धृ ऽ |

शां ऽ ऽ | म ऽ | बि ऽ | हा ऽ ऽ | री ऽ | मारत पिऽच || ज मृ ऽ | ना ऽ | ज ऽ |

= ० २ ० ३ ० = ० २

सां नी

प सां ऽ | नी सां | सां ऽ || सां ऽ सां | धृ प | सां गृं | रे़ं सां ऽ | रे़ं नी | धृ प ||

ल भ ऽ | र ऽ | न ऽ || जा ऽ त | थी ऽ | बी ऽ | च ऽ ऽ | मि ले | ऽ ऽ ||

० ३ ० = ० २ ० ३ ०

म् *

प धृ मृ | मृ मृ | पधृ मृप | गृ ऽ रे़ | सा ऽ | मृपनी धृमृप ||

मो हे ऽ | कुं व | रऽ कऽ | न्हा ऽ ऽ | ई ऽ | मारत पिऽच || (सम)

= ० २ ० ३ ०

---

(४) राग - देवगांधार.

इसका **ओडव - संपूर्ण** वर्ग है. आरोहमें **ऋषभ** तथा **धैवत** वर्ज है. आरोहमें **धनाश्री** तथा अवरोहमें **आसावरी** अंगसे गाया जाता है. वादी स्वर **प** है. कोई **धृ** को वादी मानतें है. इस राग के आरंभ तथा अंतरे का उठाव **"मृ मृ, प धृ प, सां; सां, नी सां"** एसा होता है. ग्रह स्वर **मृ** तथा न्यास स्वर **सां** है. इसकी गती मध्य तथा तार सप्तकोंमें है. इसके चलन उत्तरांगमें विशेष है. **धनाश्री** के चलन पूर्वांगमें विशेष है, अतएव भिन्नता दिखाई पडती है. इसके औरभी कईक भेद है, मगर वो सब अप्रसिद्ध होनेसें उनका हाल यहां लिखना व्यर्थ है.

आरोहावरोह स्वरुप.

म्
सा, ग् म् प, नी सां, । सां, नी ध्, प, म् प, ग्, रे सा.

पकड :— म् म्, प ध् प, सां, नी ध्, प; ग् म् प, रें सां, नी ध्, प;
ध्, म् प, ग्; रे सा.

स्वरविस्तार

सा, ग् म् प, ध् प; ध्, म् प ग्; नी ध् प, म् प ग्; ध्, प ग्, रे सा । सा, रे सा; ग्,
रे सा; प ग्, रे सा; रे सा, नी ध् प; म् प, ध् प, सा; रे सा; ग् म् पध्मप ग्; प ग्,
रे सा । म् म्, प, ध् प, सां, नी सां; गं, रें सां, रें सां नी ध्, प; ध् म् प ग्, म् प सां,
नी ध्, प; म् प, नी ध् प, ग् ग्, रे रे सा; म् प, ध् प, सां.

सरगम – देवगांधार – त्रिताल

म् प ध् प ॥ सां ऽ नी सां । नी नी सां रें । सां नी ध् प । ध् प ग् म् ॥ प ऽ रें सां ।
३ =(सम) २ ० ३ =

ध् प म् प । ग् ऽ रे सा । म् प ध् प ॥ सां ऽ रें सां । गं गं रें सां । रें नी ध् प ।
२ ० ३ = २ ०

मं गं रें सां ॥ रें सां नी ध् । प ध् म् प । ग् ऽ रे सा । म् प ध् प ॥ (सम)
३ = २ ० ३

देवगंधार – त्रिताल.

परीए वाके पायन सजनी, जो न माने गुनियन की सिखियां.
ऐसो ही बिधनारोहि आवे, ऐसे मानस के पास न जइये,
दरश कहे वासो लरिए.

		म्	म्		म्	
।:	प सां नी॒ ध॒	प म् प ग॒ ‖	रे सा ग॒ म्	प म् प ऽ :	ग॒ ऽ रे सा	ग॒ रे नी॒ सा ‖
	प रि ए ऽ	वा ऽ के ऽ ‖	पा ऽ य न	स ज नी ऽ :	जो ऽ न मा	ऽ ने गु नि ‖
	०	३	=(सम)	२	०	३

		अ×प		सां	
ग॒ म् प सां	रें नी॒ ध॒ प	म् ऽ प ऽ	नी॒ ऽ सां सां ‖	नी॒ ऽ गं॒ रें	सां नी॒ ध॒ प
य न की ऽ	सि खि यां ऽ	ऐ ऽ सो ऽ	ही ऽ बि ध ‖	ना ऽ रो हि	आ ऽ वे ऽ
=	२	०	३	=	२

प			म्		
गं॒ ऽ गं॒ रें	सां नी॒ ध॒ प ‖	म् ऽ प प	ग॒ रे सा ऽ	म् म् म् प	प ऽ नी॒ सां ‖
ए ऽ से मा	न स के ऽ ‖	पा ऽ स न	ज इ ये ऽ	द र श क	हे ऽ वा सो ‖
०	३	=	२	०	३

गं॒ रें सां ऽ	सांनी॒ ध॒प म्ग॒ रेसा	
ल रि ए ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	परिए, इ०
=	२	

देवगंधार – सूलताल.

नाद मुरली धर, गोपी मनोहर, बन बन सुंदर, खेलत राधे.
बछरन चरावत, बन बन आवत, तानन तानन तान सुनावे.

	नी॒		सां		सां				
म् प	ध॒ ध॒	प सां	ऽ नी॒	सां सां ‖	नी॒ ऽ	सां ऽ	रें नी॒	ऽ ध॒	ऽ प
ना ऽ	द मु	र ली	ऽ ध	ऽ र ‖	गो ऽ	पी ऽ	म नो	ऽ ह	ऽ र
=	०	२	३	०	=	०	२	३	०

		म्		नी॒				ग॒	ग॒
म् प	ध॒ म्	प ग॒	म् प	रें सां ‖	ध॒ ध॒	प म्	प ग॒	ऽ रे	रे सा
ब न	ब न	सूं ऽ	ऽ द	ऽ र ‖	खे ऽ	ल त	रा ऽ	ऽ ऽ	धे ऽ

×   नृी   मृं मृं
मृ मृ | प धृ | प सां | ऽ रें | सां सां || गृं गृं | रें रें | सां रें | सां नृी | धृ प
ब छ | र न | च रा | ऽ व | ऽ त || ब न | ब न | आ ऽ | ऽ व | ऽ त
=   ०   २   ३   ०   =   ०   २   ३   ०

                              प   मृ   गृ   गृ
मृं गृ | रें सां | रें सां | नृी धृ | ऽ प || मृ प | धृ मृ | प गृ | ऽ रे | रे सा
ता ऽ | न न | ता ऽ | ऽ न | ऽ न || ता ऽ | न सु | ना ऽ | ऽ ऽ | वे ऽ

देवगंधार – झपताल.

अलबेलि नार चली पियु हेत ठुमकके,
झनकार करत मधु नूपुर चरनके.
शशि वदनि भामिनी, गजगमनि मृग नयनि,
सज सिंगार सकल, चीर नव पहेनके.

     नृी   सां   सां सां   नृी नृी
मृ मृ | प धृ प | सां ऽ | नृी सां सां || नृी नृी | सां ऽ रें | सां नृी | धृ धृ प
अ ल | बे ऽ लि | ना ऽ | र च लि || पि यु | हे ऽ त | ठु म | क के ऽ
=   २   ०   ३   =   २   ०   ३

प   मृ   धृ   प   मृ   गृ
मृ प | गृ ऽ मृ | प प | रें सां सां || नृी धृ | प धृ प | गृ गृ | रे ऽ सा
झ न | का ऽ र | क र | त म धु || नृ ऽ | पु र च | र न | के ऽ ऽ

×   मृ नृी   सां सां   नृी नृी
मृ प | प धृ प | सां ऽ | रें सां ऽ || नृी नृी | सां सां रें | सां नृी | धृ धृ प
श शि | व द नि | भा ऽ | मि नी ऽ || ग ज | ग म नि | मृ ग | न य नि

मृ प   प   मृ   गृ सा
प गृं | रें ऽ सां | रें सां | नृी धृ प || मृ प | धृ मृ प | गृ गृ | रे रे सा
स ज | सीं ऽ गा | ऽ र | स क ल || ची ऽ | र न व | प हे | न के ऽ

राग – देसी.

इसका **ओडव - संपूर्ण** वर्ग है. आरोहमें **गांधार** तथा **धैवत** वर्ज है, और दोनों (कोमल तीव्र) **निषाद** का व्यवहार होता है. अवरोहमें **मध्यम** स्वर **आसावरी** राग के सदृश गौण है. इसमें **"रे, ऩी** (किंवा **ऩी**) **सा**" इस प्रकार **षड्ज** विशेष लगता है. यह स्वर संगती रागवाचक भाग है जो पूरा ध्यानमें रखना अवश्य है. **रे ऩी, सा । ग्, रे ऩी, सा । प ग्, रे ऩी, सा** यह स्वरों को ठिक २ गानेका प्रथम अभ्यास करना चाहिये.

म्
"**सा, रे प ग्; रे, ऩी, सा**" यह तान इसके स्वरुप को प्रकट करनेवाली है. "**सा, रे, म् प;**
म्   म्
रे म् प, ग्; रे ऩी, सा" ऐसा "**रे म् प**" इन स्वर दुबारा लेनेंसे रागकी माधुर्यता और बढती है. इसमें "**रे प**" और "**प रे**" इन स्वरों की संगती बारबार आती है. **प** व **रे** इन दो स्वर का बहुलत्व है, और वो तानकी आखेरिमें बहोत चमकता रहता है. इसके अंतरेका उठाव "**म् प, नी सां; सां, नी सां, सां**" किंवा "**म् म्, प, ध् प, सां, नी सां**" ऐसा बहुधा होता है. इसकी गती मध्य और तार सत्पकोंमें विशेष है.

इसका वादी स्वर **प** है. इसमें **धैवत** स्वर को दबाके रखना चाहिये, क्योंकि **धैवत** स्वर पर जोर देनेसे **आसावरी, जौनपुरी** आदि की आशंका है. इसके उत्तरांगमें "**सां, नी ध् प**" ऐसी स्वर रचना होती है और **आसावरी** में "**सां, नी ध्, प**" ऐसा **धैवत** स्वर पर ठहरकर **पंचम** स्वर लेतें है. **आसावरी** राग का भास दूर करनेके लिए कभी कभी "**सां, प ध् प,**" "**सां, प, नी ध् प**" इस प्रकार स्वर रचना करतें है.

इसमें "**सा, रे म् प**" यह तानमें **पंचम** पर ठहरनेसे **सारंग** राग की छांई नझर आती है. इस छांईसे इसके पीछे **सारंग** रागमें प्रवेश होनेकी सूचना होती है, अतएव यह परमेलप्रवेशक राग है. **आसावरी** राग में "**सा, रे म् प, नी ध्, प**" इस प्रकार स्वर रचना होती है, और इस राग में "**सा, रे म् प; प, ध् प; नी ध् प**" इस प्रकार स्वर रचना होती है वो ध्यानमें रक्खें.

इसमें **धैवत** स्वर कोमलसे थोडा चढा और तीव्रसे थोडा उतरा लगता है ऐसी समजूत है. इसमें धृपद, ख्याल, तराणा आदि आसानीसे गायें जातें है. नामी गायक यह राग बहोत उत्तम रीतिसे गातें है. गानेका समय दिनका दूसरा प्रहर है. इसकी प्रकृति गंभीर है.

इस राग का और तीन भेद है, जो नीचे मुजब :–

(१) जिसमें सिर्फ **तीव्र धैवत** का व्यवहार होता है.

(२) जिसमें दोनों (कोमल तीव्र) **धैवत** का व्यवहार होता है. इसमें **कोमल धैवत** अल्पसा लगातें है.

(३) जिसमें सिर्फ **कोमल धैवत** का व्यवहार होता है, परंतु आरोहमें **तीव्र ऋषभ** और अवरोहमें **कोमल ऋषभ** लगातें है. इस प्रकार को **कोमल** (या **उतरी**) **देशी** कहतें हैं. यह प्रकार बहोत कम गायें जातें है.

उक्त सब प्रकार के राग नियम, स्वर विस्तार वगैरह एकसमान है.

आरोहावरोह स्वरूप. (कोमल धैवत प्रकार)

म्   म्   म्
सा, रे म्, प, नी (किंवा **नी) सां । सां, नी ध् प, म् प, ग् रे ; प ग्, रे, नी सा.**

म्   म्   नी   म्   म्   रे
पकड :– रे म् प; रे म् प, ध् प, ग् रे ; नी सा, रे प ग् ; रे, नी सा.

स्वरविस्तार.

रे   म्   म्   रे   म्   नी   नी
सा, रे नी सा, रे प ग्; रे ग्, रे नी सा; सा, रे म्, प; प, ध् प रे; ध् प, नी ध् प;

म्   नी   म्   म्   रे   रे   नी
रे म् प, ध् प, ग् रे; नी सा, रे प ग्; रे, नी सा। सा, रे नी सा; ध् प, म् प, नी ध् प;

म्   म्   रे   म्   नी
ध् प, सा; रे ग्, रे; प ग्, रे, नीसा, रे प ग्; रे, नी सा। प रे, म् प; प, ध् प; म् प, सां, प;

म्   म्   म्   म्   म्   ×
म् प ध् प, म् प ग् रे; रे म्, पध्म्प ग्, रे; नी ध् प, म् प, ग् रे; रे ग् रे, नी सा।

नी   म्   म्
म् म्, प, प, ध् प सां; नी सां, रें सां, ध् प; रे म् प, गं रें सां; रें सां, नी ध् प; रे म् प;

नी   म्   रे
ध् प, म् प ग्; रे, नी सा.

तीव्र धैवत प्रकारके चलन.

म् रे म् म् म्
सा, रे प ग्; रे, ऩी, सा; रे म् प; रे म् प, ध प, म् प, ग् रे; सां, प, ध प; रें सां, नी ध
म् म् रे
प; रे म् प, ध प, म् प ग्; रे, ऩी सा.

नोट - इस प्रकार के आरोहमें **तीव्र निषाद** का अधिक व्यवहार होता है.

दोनो धैवत प्रकारके चलन.

म् रे म् म् म्
सा, रे प ग्; रे, ऩी सा; रे म् प; रे म् प, ध् प, म् प, ग् रे; सां, प, ध् प; रें सां,
म् म् रे
नी ध प; रे म् प, ध् प, म् प ग्; रे, ऩी सा.

नोट – इसमें **तीव्र धैवत** का बहुलत्व है. **कोमल धैवत** स्वर **"म् प ध् प"** ऐसा **पंचम** की जोडमें अल्पसा लगातें है.

कोमल धैवत और दोनो ऋषभ प्रकारके चलन.

नी नी म् नी म्
प, ध् प, ध् म्, म् प, ध्, नी, सां नी ध् प; रे म् प, ध् मप ग्; रे् रे् सा; म् प, ध् प, सां,
म्
नी सां; सां रें गं, रें् सां, नी ध् प; ध् म्, मपध्मप ग्; रे् सा.

नोट – इस प्रकारमें **धैवत** स्वर आरोह में भी लिया जाता है, अतएव यह **षाडव-संपूर्ण** प्रकार है.

सरगम–देसी–झपताल. (कोमल धैवत प्रकार)

सा म् रे सा म् म् नी
ऩी सा । रे प ग् । रे ऩी । सा ऽ सा ॥ ऩी सा । रे म् प । रे म् । प ध् प
= २ ० ३ = २ ० ३

प नी म् म् नी म् रे
म् प । सां ऽ प । ध् प । ग् ग् रे ॥ रे म् । प ध् प । ग् रे । ऩी सा ऽ

प×　　　　　　　　　　　　　सां　　　　सां
म् प । नी सां ऽ । सां ऽ । नी सां सां ॥ नी सां । रें रें सां । नी सां । प ध् प

म्　　　　नी　　म्　　म्　　नी　　म्　　रे
रे म् । प सां ध् । ध् प । ग् ग् रे ॥ रे म् । प ध् प । ग् रे । नी् सा ऽ

नोट – इसमें **कण स्वर** ठीक २ निकालते रहेना.

सरगम – देसी – त्रिताल (तीव्र धैवत प्रकार)

रे　　　प　　　　　नी　　　　　म्
सा ग् रे सा । रे नी सा ऽ ॥ रे म् प रे । म् प ध प । म् प सां प । ध प ग् रे ॥
०　　　３　　　=(सम)　　２　　　०　　　३

म्　　म्　रे　×　　　सां　　　सां　　　नी
रे म् प ध । ग् रे नी सा । म् प सां ऽ । नी सां ऽ सां ॥ नी सा गं रें । सां ऽ ध प ।
=　　　२　　　०　　　३　　　=　　　२

म्　म्　　　म्　रे　　*　　　रे
नी ध प नी । ध प ग् रे ॥ रे म् प ध । ग् रे नी सा । सा ग् रे सा । रे नी सा ऽ ॥ (सम)
०　　　३　　　=　　　२　　　०　　　३

देसी – त्रिताल. (कोमल धैवत प्रकार) (विलंबित)

गूंढ गूंढ लावो रे मालनिया फूलूंदा सहेरा.
आज मोरे घर मोहन आये, रचहूं मैं फूलूंदा सबहू सिंगार.

नी					म्
। । । सा	ग् रे ऽ सा ‖	रे ऽ नी ऽ	सा ऽ सा ऽ	सा ऽ ऽ रे	म् ऽ पध् मप ‖
। । । गूं	ढ गूं ऽ ढ ‖	ला ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ वो ऽ	रे ऽ ऽ मा	ऽ ऽ लऽ निऽ ‖
०	३	=(सम)	२	०	३

म्			म्		
ग् ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ग् ऽ	रें ऽ ऽ म्	म् प ऽ प ‖	सां ऽ ऽ प	नी ध् पम् प
या ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ फू	ऽ लूं ऽ दा ‖	स ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ हेऽ ऽ
=	२	०	३	=	२

म् *				×	म्
ग् रे ऽ रें	ग् रे ऽ सा ‖	रे ऽ नी ऽ	सा ऽ सा ऽ	सा ऽ ऽ म्	म् प ऽ प ‖
रा ऽ ऽ गूं	ढ गूं ऽ ढ ‖	ला ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ वो ऽ	रे ऽ ऽ आ	ज मो ऽ रे ‖
०	३	=	२	०	३

प	सां	सां			सां
सां ऽ ऽ ऽ	नी् ऽ सां ऽ	सां ऽ ऽ नी्	ऽ सां ऽ रें ‖	सां ऽ ऽ ऽ	नी् नी् सां ऽ
ध ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ मो	ऽ ह ऽ न ‖	आ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
=	२	०	३	=	२

	म्	प			
प ऽ ऽ पध्	म्प ग् ऽ म् ‖	प ऽ सां ऽ	नी् सां प नी्	प ऽ ऽ नी्	म् प ध् प ‖
ये ऽ ऽ रच	हूंऽ ऽ ऽ मैं ‖	फू ऽ ऽ ऽ	ऽ लूं ऽ ऽ	ना ऽ ऽ स	ब हू ऽ सिं ‖
०	३	=	२	०	३

म्	रे	*		
ग् ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ नी्	सा सा ऽ सा	ग् रे ऽ सा ‖	
गा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ र ऽ गूं	ढ गूं ऽ ढ ‖	सम
=	२	०	३	

देसी – सूलताल. (कोमल धैवत प्रकार)

आवन कहे गये अजहुं न आये, सब निस बीति मोहे गीनत तारे.
दीपक चंद्र जोत मलिन भई जात हैं,
कोन दूतीयन बिरमाये प्यारे.

म्							म्	रे	
रे ग्	रे सा	सा म्	प् सा	सा ऽ ‖	रे ग्	रे म्	प ग्	रे नी्	सा ऽ
आ ऽ	व न	क हे	ऽ ग	ये ऽ ‖	अ ज	हुं न	आ ऽ	ऽ ऽ	ये ऽ
=	०	२	३	०	=	०	२	३	०

	म्	म्				सां			
सा सा	रे म्	रे म्	प नी्	ध् प ‖	म् प	सां ध्	प म्	प रे	ग् रे
स ब	नि स	बी ऽ	ति मो	हे ऽ ‖	गी ऽ	न त	ता ऽ	ऽ ऽ	रे ऽ

×			म्						
म् ऽ	प म्	प सां	सां गं्	रें सां ‖	सां सां	रें सां	नी् ध्	प नी्	ध् प
दी ऽ	प क	चं ऽ	द्र जो	ऽ त ‖	म लि	न भ	ई जा	ऽ त	है ऽ

		म्					म्		
म् प	म् ग्	रे ग्	रे म्	प प ‖	सां नी्	ध् प	ध् म्	प ग्	ग् रे
को न	दू ऽ	ती ऽ	य न	बि र ‖	मा ऽ	ये ऽ	प्या ऽ	ऽ ऽ	रे ऽ

देसी - झपताल (तीव्र धैवत प्रकार)

निरंजन कीजे मुकात मेरी, परताप सूं ऐमद जूके.
तूही दूर करत दुखियन के दुख,
पूजा करे सब जिव जंतु तेरी. ॥ परताप ॥
निरगुन को करत विद्यावान, निरधन को देत माया घनेरी.
दरस महागिर तेरो दास है,
जाकी मकात में कर नाहिं देरी. ॥ परताप ॥

      सा   सा   म् प   म्
। । सा ‖ नी सा | सा ऽ रे | नी सा | नी धप म् ‖ प ऽ | रे म् प | म् प | ग् रे सारे
। । नि ‖ रं ऽ | ज ऽ न | की ऽ | जे ऽ मु ‖ का ऽ | ऽ ऽ त | मे ऽ | री ऽ ऽ
३ = २ ० ३ = २ ० ३

 म् सा   म् प ध   म्   म्   सा
म् ग् | रे सा सा | रे म् | प ध मप ‖ ग् ऽ | रे सा म् | ग् ऽ | रे सा सा
प र | ता ऽ प | सूं ऽ | ऽ ऽ ऽ ‖ ऐ ऽ | म ऽ द | जू ऽ | के ऽ नि
= २ ० ३ = २ ० ३

सां×सां सां   सां   मं
नीं नीं | नीं सां सां | सां ऽ | नीं सां सां ‖ रें गं | रें सां सां | सां ऽ | नीं ध प
तू ही | दू ऽ र | क ऽ | र ऽ त ‖ दु खि | य ऽ न | के ऽ | दु ऽ ख

म्   सां   म्   म्
रे म् | प ऽ प | नीं सां | प ऽ प ‖ म् प | रे म् प | म् प | ग् रे सारे
पू ऽ | जा ऽ क | रे ऽ | स ऽ ब ‖ जि व | जं ऽ तु | ते ऽ | री ऽ ऽ

(परताप सूं ऐमद जूके.)

(संचारी)

                         म् प ध   प   म्
सा म् | म् ऽ म् | प ऽ | प प प ‖ रे म् | प ऽ ध | म् प | ग् ऽ रे
नि र | गु ऽ न | को ऽ | क र त ‖ वि ऽ | ऽ ऽ ऽ | द्या ऽ | वा ऽ न

 म् सा   म्   सा   म् प ध   प   म्
म् ग् | रे सा रे | ग् ऽ | रे ऽ सा ‖ रे म् | प ऽ ध | म् प | ग् ऽ रे
नि र | ध ऽ न | को ऽ | दे ऽ त ‖ मा ऽ | या ऽ घ | ने ऽ | री ऽ ऽ

(आमोग)

सां सां सां मृ
नृी नृी | नृी सां सां | सां ऽ | सां ऽ सां || गृ ऽ | रें सां सां | ऽ सां | नृी ध प
द र | स ऽ म | हा ऽ | गि ऽ र || ते ऽ | रो ऽ दा | ऽ स | है ऽ ऽ

मृ सां प मृ प प मृ
रे मृ | प ऽ प | नृी सां | प प ऽ || मृ प | रे मृ प | मृ प | गृ रे सारे
जा ऽ | की ऽ म | का ऽ | त में ऽ || क र | ना ऽ हिं | दे ऽ | री ऽ ऽ

(परताप सूं ऐमद जूके.)

देसी–धमार (दोनो धैवत प्रकार)

सखी ठाढो सुंदर सांवरो ढोटा कहियत नंद किशोर री.
पल झपकत वाकी छबी निरखत, आली करी हों नगरीया में शोर री.

मृ मृ सा
मृ प || सां ऽ रें | सां नृी | ध ऽ | प धृ मृप | गृ ऽ | रे ऽ || गृ ऽ ऽ | रे ऽ | सा ऽ |
स खि || ठा ऽ ऽ | ढो ऽ | सूं ऽ | ऽ द रऽ | सां ऽ | व ऽ || रो ऽ ऽ | ढो ऽ | टा ऽ |
० =(सम) ० २ ० ३ ० = ० २

मृ प मृ प ध *
सा सा रे | मृ प, | रे ऽ || मृ ऽ प, | प ऽ | प प | ऽ प ऽ | ध मृ | मृ प || सां ऽ रें
क हि य | त ऽ | नं ऽ || ऽ ऽ ऽ | द ऽ | कि शो | ऽ र ऽ | री ऽ | स खि || ठा ऽ ऽ
० ३ ० = ० २ ० ३ ० =

×
सां नृी | ध ऽ | प धृ मृप | मृ मृ | प धृप || सां नृी सां | सां सां | रें गृ | रें सां ऽ | सां ऽ
ढो ऽ | सूं ऽ | ऽ द रऽ | पल | झ पऽ || क त ऽ | वा की | छ बी | नि र ऽ | ख ऽ
० २ ० ३ ० = ० २ ० ३

सां मृ मृ प मृ
नृी सां || सां नृी ध | प ऽ | पधृ मृप | गृ रे सा | सा ऽ | रे मृ || प, रे मृ | प ऽ,
त ऽ || आ ऽ ऽ | ली ऽ | कऽ रीऽ | हों ऽ ऽ | न ऽ | ग ऽ || री ऽ ऽ | या ऽ
० = ० २ ० ३ ० = ०

ध *
प ऽ | प ऽ प | ध मृ | मृ प ||
में ऽ | शो ऽ र | री ऽ | स खि || (सम)
२ ० ३ ०

कोमल देसी–धमार (दोनो ऋिषभ प्रकार)

गोकल धूम मचाई री पिया बिदेस मोहे पाय
अकेली बिरहा आन सताए अब मोहे. ॥ गोकल ॥
कही ना जात मोरी उनसों वे बैरी करत चढाई
बोल बोल बान जो लागो सुध बुध सब बिसराई अब मोहे.

नी नी
प ऽ | प प ‖ ध् ऽ ऽ | प ऽ | ध् म् | म् प ऽ | ध् ऽ | नी ऽ ‖ सां नी ध् | प ऽ |
गो ऽ | क ल ‖ धू ऽ ऽ | म ऽ | ऽ ऽ | म चा ऽ | ई ऽ | री ऽ ‖ पि या ऽ | ऽ ऽ |
३ ० =(सम) ० २ ० ३ ० = ०

म् म्
प नी | ऽ ध् प | म् म् | रे म् ‖ प प ध् | म् प | ग् ऽ | रेरे सा ऽ | सा म् | म् म् ‖
बि दे | ऽ ऽ स | मो हे | पा ऽ ‖ य अ ऽ | के ऽ | ली ऽ | बिर हा ऽ | आ ऽ | न स ‖
२ ० ३ ० = ० २ ० ३ ०

म् म् * × नी
प रे म् | प ध् | म्प ग् | ऽ रे सा | प ऽ | प प ‖ म् प ऽ | प ऽ | ध् ऽ | प प ऽ |
ता ऽ ऽ | ए ऽ | अऽ ब | ऽ मो हे | गो ऽ | क ल ‖ क ही ऽ | ना ऽ | जा ऽ | त मो ऽ |
= ० २ ० ३ ० = ० २ ०

नी
सां ऽ | नी सां ‖ सां सां सां | सां रें | गं ऽ | रें सां ऽ | सां सां | नी ध् ‖ ध् प ऽ | ध् म् |
री ऽ | ऽ ऽ ‖ उ न सों | वे ऽ | बै ऽ | ऽ री ऽ | क र | ऽ त ‖ च ढा ऽ | ऽ ऽ |
३ ० = ० २ ० ३ ० = ०

म् सां सां सां
म् प | ध् म् प | ग् ऽ | नी नी ‖ नी सां सां | सां ऽ | नी ध् | प ध् म् | प ऽ | सां ऽ ‖
ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ | ई ऽ | बो ल ‖ बो ऽ ल | बा ऽ | न ऽ | जो ऽ ऽ | ला ऽ | गो ऽ ‖
२ ० ३ ० = ० २ ० ३ ०

मं
रें गं ऽ | रें सां | सां ऽ | सां ऽ नी | धध् ऽ | प ऽ ‖ ध् म् म् | प ध् | मप ग् | ऽ रे सा |
सु ध ऽ | बु ध | स ऽ | ब ऽ ऽ | बिस ऽ | रा ऽ ‖ ऽ ऽ ई | ऽ ऽ | अऽ ब | ऽ मो हे |
= ० २ ० ३ ० = ० २ ०

*
प ऽ | प प ‖
गो ऽ | क ल ‖
३ ०

(६) राग खट (षड्राग)

यह राग एक मिश्र स्वरुप है और अनेक प्रकारसे गायें जातें है, यथा

(१) **भयरव** अंग प्रकार (२) **भैरवी** अंग प्रकार (३) दोनों **गंधार**, दोनों **धैवत** तथा दोनों **निषाद** प्रकार (४) दोनों **ऋषभ**, दोनों **गंधार** तथा दोनों **धैवत** प्रकार (५) **आसावरी** अंग प्रकार. उक्त प्रकारोंमें **आसावरी** अंग प्रकार सिवाय शेष सब प्रकार अप्रसिद्ध है, अतएव उन्हों का हाल यहां लिखना व्यर्थ है.

आसावरी अंग का प्रकार **आसावरी** और **भयरव** राग का मिलापसे गातें है. इसमें **तीव्र धैवत** का भी कभी कभी व्यवहार करतें है. इसमें **गंधार** तथा **धैवत** पर आंदोलन किया जाता है. **मध्यम** स्वर पर ठहरनेसे राग की गंभीर्ता बढती है.

इसके आरोहमें **गंधार** स्वर का स्पष्ट व्यवहार होता है अतएव **आसावरी, जौनपुरी**

आदि रागों से भिन्नता दिखाई पडती है. इसमें कभी कभी "**प, रे^(म्) म्, म् प**" इस प्रकार भी स्वर रचना होती है, जिससे **सारंग** राग की थोडी छाया दिखाई पडती है. यह **आसावरी** तथा **भयरव** राग का मिश्र रुप होनेसे **तीव्र मध्यम** सिवाय सब्ही स्वरों का व्यवहार इसमें किया जाता है.

इसका वादी स्वर **ध्** है. इसकी गती मध्य और तार सप्तकोंमें विशेष है. गानेका समय दिनका दूसरा प्रहर है. इसमें ध्रुपद तथा धमार का प्रचार अधिक है. यह एक मिश्र रुप होनेसे इसमें तानें आसानीसे नहीं ली जाती अतएव इसमें ख्याल का ज्यादा प्रचार नहीं. यह राग बहुत कम सुननेमें आता है. सिर्फ नामी गवैयें कभी कभी गातें है. इसके स्वरों का पूर्ण कई नियम नहीं अतएव इसकी आरोहावरोही पूर्ण नियत नहीं. इसके साधारण स्वरुप नीचे मुजब,

ऩी सा, ग्^(म्) म्, प, ध्^(नी) ध्^(नी) प; नी ध् प; सां, नी ध् प; म् प ग म्; सां, नी ध, म;

म् प ग म्, ग रे् सा; ऩी सा, रे^(म्) म्, म्^(म्) प, ग्^(म्) ग् म्, रे, सा, इ. इ.

यह राग छे राग का मिलापसे बना है ऐसी समजूत है, अतएव इसको **खट (षट)** किंवा **षड्राग** कहतें है.

खट (षड्राग) – झपताल

ओम निराकार साकार दया का नहिं है पार, ए त्रिपता हरो हरी हरे.
तेराहि जप करत नारद त्रिलोकि नाथ,
तेरीही जग धाक मनमे धरे,
ब्रह्मा रटत जस बनाये गाये तेरे भोलेके डंके पडे.

ग् ऽम् गम् ‖ प प | प ऽ प | प ऽ | प ऽ प ‖ म् प | ध् ऽ ध् | नी नी | सांध् प नी
ओ ऽ ऽम ‖ नि रा | का ऽ र | सा ऽ | का ऽ र ‖ द या | का ऽ न | हिं है | पाऽ र ए
३ = २ ० ३ = २ ० ३

ध् ध् | प ऽ ध् | म् प | ग म् म् ‖ म् सा | म् म् प | म् सा | *ग् ऽम् गम्
त्रि प | ता ऽ ह | रो ह | री ऽ ह ‖ रे ऽ | ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ | ओ ऽ ऽम
= २ ० ३ = २ ० ३

× नी नी
म् प | ध् ऽ ध् | सां सां | सां सां सां ‖ नी ऽ | सां सां रें | सां नी | नी सां प
ते ऽ | रा ऽ हि | ज प | क र त ‖ ना ऽ | र द त्रि | लो कि | ना ऽ थ

म् ऽ | प ऽ नी | ध् ध् | प ध् म् ‖ प ध् | ध् ध् रें | सां सां | ध् नी सां
ते ऽ | री ऽ हि | ज ग | धा ऽ क ‖ म न | मे ऽ ध | रे ऽ | ऽ ऽ ऽ

नी
सां ऽ | सां ऽ सां | सां सां | सां सां सां ‖ नी ऽ | सां ऽ सां | नी ग् | रेंनी सां प
ब्र ऽ | ह्मा ऽ र | ट त | ज स ब ‖ ना ऽ | ये ऽ गा | ऽ ऽ | येऽ ते रे

म् ऽ | प ऽ नी | ध् ऽ | प ध् म् ‖ प ध् | नीसां रें ऽ | म् सा | *ग् ऽम् गम्
भो ऽ | ले ऽ के | डं ऽ | के ऽ प ‖ डे ऽ | ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ | ओ ऽ ऽम

खट – झपताल

आवो गोविंद त्रिज, चंद आनंद बर, मोहे केसोके बनाये लीनो.
घेरी नादियां अगम बहत है, तुम बिन कौन उतारे नैयां.

म् ऽ | प ऽ नी | ध् प | ध् ऽ प ‖ ग ऽ | म् ऽ प | म् रे | सा ऽ सा
आ ऽ | वो ऽ गो | विं द | त्रि ऽ ज ‖ चं ऽ | द ऽ आ | नं द | ब ऽ र
= २ ० ३ = २ ० ३

सा   म्
न्॒ी सा | ग्॒ ऽ म्॒ | प ध्॒ | न्॒ी ऽ सां || रें सां | न्॒ी ध्॒ ऽ | प म्॒ | प ऽ ऽ
मो ऽ | हे ऽ ऽ | के सो | के ऽ ब || ना ऽ | ये ऽ ऽ | ली ऽ | नो ऽ ऽ

अ×
म्॒ ऽ | प ऽ ध | नी नी | सां ऽ ऽ || रें सां | न्॒ी ऽ ध्॒ | प ध्॒ | प ऽ ऽ
घे ऽ | री ऽ ऽ | न दि | यां ऽ ऽ || अ ग | म ऽ ब | ह त | है ऽ ऽ

नी॒
प रें | सां ऽ न्॒ी | ध्॒ ऽ | प ऽ रे || म्॒ ऽ | प ऽ न्॒ी | ध्॒ ऽ | प ऽ ऽ
तु म | बी ऽ न | कौ ऽ | न ऽ उ || ता ऽ | रे ऽ ऽ | नै ऽ | या ऽ ऽ

खट (षड्राग) – धमार

आज खेलत बिर्ज नंदलाल होरी, जमना तट कुंवर किशोरी.
बीन मृदंग मलार झांझ ढप की धुकार नीकी तानन सों
गावत धमारी भर पिचकारी मारत केसर रंग बोरी.

नी॒   नी॒   नी॒
म्॒ ऽ | म्॒ ऽ || प ऽ प | ग्॒म्॒ प | प ऽ | प प ऽ | प ध्॒ | ऽ ध्॒ || सां ऽ ऽरें | ध्॒ ऽ |
आ ऽ | ज ऽ || खे ऽ ल | ऽ त | बि ऽ | र्ज नं ऽ | द ला | ऽ ल || हो ऽ ऽ | री ऽ |
३   ०   =(सम)   ०   २   ०   ३   ०   =   ०

×
न्॒ी प | प ऽ ऽ | प ग्॒म्॒ | म्॒ ऽ || पध्॒ पध्॒ म्॒प | ग्॒ ऽ | म्॒ प | ग्॒ सारे सा | म्॒ ऽ | प म्॒ ||
ज म | ना ऽ ऽ | त ऽ | ट ऽ || कुंऽ वऽ रऽ | कि ऽ | शो ऽ | ऽ रीऽ ऽ | बी ऽ | न ऽ ||
२   ०   ३   ०   =   ०   २   ०   ३   ०

नी॒   नी॒   सां   नी॒
प ध्॒ ऽ | ध्॒ ऽ | ध्॒ सां | ऽ सां न्॒ी | सां सां | सां सां || न्॒ी सां ऽ | रें सां | ध्॒ ऽ |
मृ दं ऽ | ग ऽ | म ला | ऽ र झां | ऽ झ | ढ प || की ऽ ऽ | धु ऽ | का ऽ |
=   ०   २   ०   ३   ०   =   ०   २

नी॒
प प ऽ | प ऽ | ग ग || म्॒ रे्॒ सा | न्॒ी सा | ग्॒ म्॒ | प ध्॒ ऽ | न्॒ी प | ग्॒ प ||
र नी ऽ | की ऽ | ता ऽ || न न सों | गा ऽ | व त | ध मा ऽ | री ऽ | भ र ||
०   ३   ०   =   ०   २   ०   ३   ०

नी़
ध़ नी़ सां | ऽ सां | सां सां | रें नी़ ऽ | सां ग़ | ग़ म़ || सारें नी़सां पनी़ | मप ग़म़ |
पि च का | ऽ री | मा र | त के ऽ | स र | रं ग || बोऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ |
= ० २ ० ३ ० = ०

*
सारे ऽ | सा ऽ ऽ | म़ ऽ | म़ ऽ ||
ऽ ऽ | री ऽ ऽ | आ ऽ | ज ऽ || (सम)
२ ० ३ ०

तराणा - खट - सूलताल

उत ताना देरेना दीम तादियनरे दानि,
दर दीम दर दीम तादियानारे दीतन नितनमु नितनमु द्रनामु,
तादियानारे यलि यला यला यलि यला यला यललमु यललल.

प रें | सांनी़ सांनी़ | ध़ ध़ | प ग | म़ ग || प ऽ | म़ ऽ | ग म़ | प ध | नी़ ध
उ त | ताऽ नाऽ | दे रे | ना ऽ | ऽ ऽ || दी ऽ | ऽम ऽ | ता दि | य न | रे ऽ
= ० २ ३ ० = ० २ ३ ०

नी़ प | ध म़ | नी़ ध | नी़ प | ध म़ || प ग | म़ ग | म़ प | ऽ ऽ | ध़ म़
ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ || ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ दा | ऽ ऽ | ऽ नि

×
म़ प | सां ऽ | ऽ ऽ | सां नी़ | सां ऽ || रें रें | रें नी़ | नी़ सां | नी़ नी़ | ध़ प
द र | दीं ऽ | ऽ ऽ | द र | दीं ऽ || ता दि | या ऽ | ना रे | ऽ दि | त न

नी़ नी़ | ध़ प | नी़ नी़ | ध़ प | नी़ ध़ || प ध़ | प म़ | ग़ म़ | प ऽ | ऽ ऽ
नि त | न मु | नि त | न मु | द्र ना || मु ता | दि या | ऽ ना | रे ऽ | ऽ ऽ

सां सां
सां नी | ध़ प | ध़ म़ | प ऽ | ऽ ध || नी़ नी़ | ध़ प | ध़ म़ | प ऽ | ऽ ऽ
य लि | य ला | ऽ य | ला ऽ | ऽ ऽ || य लि | य ला | ऽ य | ला ऽ | ऽ ऽ

प ध़ | नी सां | सां सां | सां सां | सां सां ||
य ल | ल ल | ल मु | य ल | ल ल ||

(७) राग दरबारी कानडा

इसका संपूर्ण वर्ग है. अवरोहमें **धैवत** स्वर लिप्त भावसे (वक्र) लिया जाता है, जैसे
नी   नी
"**सां, ध्, नी प.**" कभी कभी अवरोहमें **धैवत** स्वर "**म् प, ध् ग्, रे, सा**" ऐसा सरल रीतिसे भी लेतें है. इसमें **गंधार** तथा **धैवत** स्वर पर बहोत रक्तिदायक आंदोलन किया
.नी .नी   .नी .नी   सा म् म् म् सा
जाता है, जैसे "**ध् ध्, नी प; म् प, ध् ध्, नी सा; नी सा रे रे, ग् ग् ग्, रे रे, ग्सा.**" यह तान इसके स्वरूप को प्रकट करनेवाली है. **कानडा** का नियम मुजब कभी कभी "**ग् म्, रे सा**" ऐसी भी स्वर रचना होती है; इस वक्र **गंधार** स्वर पर आंदोलन नहीं
                                                           .नी .नी
करतें. इसमें मध्य **ऋषभ** से एकदम मंद्र **धैवत** पर जातें है, जैसे "**नी सा रे, ध् ध्, नी प.**" यह तान इसका रागवाचक भाग है जो पूरा ध्यानमें रखना अवश्य है. इस रागमें मींड का प्रयोग अधिक होता है, जिस विना इस राग का शुद्ध रूप प्रदर्शित नहीं हो सकता, इस राग के लिए हार्मोनियम वाद्य बिलकुल नालायक है.

                                  नी नी
इसके अंतरे का उठाव "**म् म्, प प, ध् ध्, नी सां**" ऐसा बहुधा होता है. इसका रुप मंद्र और मध्य सप्तक में अधिक खुलता है. तार सप्तक की स्वर रचना मंद्र और मध्य सप्तक के सदृश होती है. इसका वादी स्वर **रे** है. कोई ग् को वादी मानतें है. मध्य रात्र के १ बजे तक इसको गाते है. इसमे भक्ति रस है. धृपद, ख्याल, तरानें आदि अच्छी तरहसे गायें जातें है. यह राग चित्त को बहोत अकर्शित करनेवाला है. यद्यपि यह राग बहोत प्रसिद्ध है तथापि इसका यथार्थ शुद्ध गाना बजाना कठिण है. सब **कानडें** में यह **दरबारी कानडा** ही सरदार है.

अकबर बादशाह की दरबारमें **मीयां तानसेनजी** ने **कानडा** का यह नया रुप बनाके गायेथें और यह नया राग सुनकर बादशाह बहोत खुश हो गये, उस दिनसे सब राजें की दरबारमें यह राग गानेका रिवाज हो गया, अतएव इसको **दरबारी** या **मीयां का कानडा** कहतें है.

आरोहावरोह स्वरुप.

म् नी नी म्
सा रे ग्, म् प (किंवा ़नी सा, रे म् प), ध्, नी सां । सां, ध्, नी प, म् प ग्;
म् म् सा
म् रे, सा; ़नी सा, रे, ग् ग्; रे रे, सा.

़नी ़नी ़नी ़नी म् म्
पकडः—़नी सा रे, ़ध् ़ध्, ़नी ़प; ़म् ़प, ़ध् ़ध्, ़नी सा; ़नी सा, रे, ग ग्;
सा
रे रे, सा.

स्वरविस्तार.

़नी ़प ़नी सा सा सा ़नी ़प
सा, ़ध्, ़नी ़प; ़म् ़प, ़ध्, ़नी ़नी, सा। ़नी सा रे सा; ़ध्, ़नी ़प; ़म् ़प सा;
नी सा म् म् सा सा
़ध्, ़नी सा; ़नी सा रे, रे; सा रे ग् ग्; रे सा ़नी ़ध्, ़नी रे सा; ़नी ़नी रे, सा।
सा ़नी ़नी ़नी
़नी सा रे, रे; ़ध्, ग्; रेसा़नीसा रे, रे, सा; म्; रेसा़नीसारेसा़ध्; ़नी सा; ़ध्, ़नी रे, सा;
़प म् | ़नी | सा सा सा म्
़म्प़ध्ऩीसारेग्; ़ध्; ़नी, रे, सा; ़नी ़नी रे, सा। ़नी सा, रे, रे; सा रे ग्, म् प; म्पनीम्प
म् म् सा सा नी नी नी
ग्; ग्म्पग्म्, रेसा, रे, रे, सा; ़नी ़नी रे, सा । सा रे म् प, ध् ध्, ध् नी प; म्पनीम्प
म् ़नी म् म्
नीपग्; रे सा, रे; सा; ़ध्, ़नी रे, सा; रे प, ग्; म्; म्पनीम्पग्; रेसा़नीसा रे, रे, सा;
सा सा × नी नी नी नी सां सां
़नी ़नी रे, सा। म्, प, ध्, ध् नी प; म् प सां; सां, ध्; धनीसांरें नीसांरेंसां ध्; नी नी सां;
नी | नी | सां म्ं म्ं म्ं
ध्, नी, रें, सां; म्पध्नीसांरेंगं्; ध्; नी रें, सां; नी सां रें, रेंरें, रें; सां रें ग्ं, ग्ंग्ं ग्ं;
नी म् सा सा
रेंसांनीध्, नी रें सां; म्ं; रेंसांनीसांरेंसांध्, नी प; म्प सां; ग्; रेसा रे, रे, सा; ़नी ़नी रे, सा.

सरगम – दरबारी कानडा – त्रिताल

सा म़ सा सा सा
ऩीसा रेम़ रे सा । ऩी सा रे रे ॥ ग़ ऽ ऽ रे । रे ऽ सा ऽ । ऩी ऩी सा ऽ । ऩी सा रे सा ॥
० ३ =(सम) २ ० ३

सा ऩी प़ ऩी ऩी म़ सा
ऩीं सा रे ध़ । ऩी ऩी प़ प़ । म़ प़ ध़ ऩी । सा ध़ ऩी सा ॥ म़ म़ प ग़ । म़ रे ऽ सा ।
= २ ० ३ = २

× ऩी ऩी सां सां सां सां
म़ म़ प प । ध़ ध़ ऩी ऩी ॥ सां ऽ सां ऽ । ऩी ऩी सां ऽ । ऩी ऩी सां ऽ । रें रें सां ऽ ॥
० ३ = २ ० ३

ऩी ध़ मं मं मं सां ऩी
ऩी सां रें ध़ । ऩी ऩी प प । गं गं मं पं । गं मं रें सां ॥ रें रें सां ऽ । रें ध़ ऩी प ।
= २ ० ३ = २

प ऩी प सा
म़ प सां ऽ । ध़ ऩी प प ॥ म़ प ऩी ग़ । म़ रे ऽ सा ।
० ३ = २

दरबारी कानडा – त्रिताल

बरजोरी पकर न शाम कलाई, शरम न आवत बैंयां लचकाई.
कल न परत का मोहे सतावे, घगरी ढूलकेगि मान कन्हाई.

रे रे ऩी म़ ऩी
|: म़ म़ रे सा | ध़ ऩी सा रे ‖ ग़ ऽ ग़ म़ | रे ऽ सा ऽ :| रे रे सा ऩी | ध़ ऽ ऩी प़ ‖
ब र जो रि | प क र न ‖ शा ऽ म क | ला ऽ ई ऽ | श र म न | आ ऽ व त ‖
० ३ =(सम) २ ० ३

प़ ऩी अ× ऩी ऩी सां
म़ प़ ध़ ऩी | सा रे ऩी सा | म़ म़ प प | ध़ ध़ ऩी ऽ ‖ सां ऽ सां सां | ऩी सां सां ऽ
बैं यां ल च | का ऽ ई ऽ | क ल न प | र त का ऽ ‖ मो ऽ हे स | ता ऽ वे ऽ
= २ ० ३ = २

प ध़ ऩी म़ * रे रे ऩी
ऩी ऩी प ऽ | म़ प ध़ ऩी ‖ ग़ ऽ ग़ म़ | रे ऽ सा ऽ | म़ म़ रे सा | ध़ ऩी सा रे ‖
घ ग री ऽ | ढु ल के गि ‖ मा ऽ न क | न्हा ऽ ई ऽ | ब र जो रि | प क र न ‖
० ३ = २ ० ३ (सम)

दरबारी कानडा—दीपचंदी

घुंघट का पट खोल रे, तोहे राम मिलेंगे.

घट घट बीच राम रमैयां, कटुक बचन मत बोल रे. ॥ तोहे ॥

रंग महेल में दीप जोत जले, बाजत अनहद ढोल रे. ॥ तोहे ॥

कहत **कबीरा** सुन भाई साधु, आसन पे मत डोल रे. ॥ तोहे ॥

				म्			
सा ऽ ऽ	सा ऽ सा ऽ	रे ऽ ऽ	रे ऽ प ऽ ‖	ग् ऽ ऽ	रेसा नी़ध़् ऽ ऽ	रे ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ग् ‖
घुं ऽ ऽ	घ ऽ ट ऽ	का ऽ ऽ	प ऽ ट ऽ ‖	खो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ल ‖
=	२	०	३	=सम	२	०	३

				नी़	नी़		
सा ऽ ऽ	ऽ ऽ सा सा	नी़् सा ऽ	नी़्साम् ऽ रे सा ‖	ध़् ऽ ऽ	ध़् ऽ नी़् ऽ	प़ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ‖
रे ऽ ऽ	ऽ ऽ तो हे	रा ऽ ऽ	ऽ ऽ म मि ‖	ले ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	गे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ‖

प़		नी़		म्	म्		
म़् ऽ ऽ	प़ ऽ प़ ऽ	ध़् ऽ ऽ	सानी़सा ऽ सा रे ‖	ग् ऽ ऽ	ग् ऽ ऽ ऽ	रेसा नी़ध़् ऽ	रे ऽ ऽ ग् ‖
घुं ऽ ऽ	घ ऽ ट ऽ	का ऽ ऽ	ऽ ऽ प ट ‖	खो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ल ‖

				×		नी नी	
सा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ‖	: म् म् ऽ	प ऽ प ऽ	ध् ध् ऽ	नी ऽ नी ऽ ‖
रे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ‖	घ ट ऽ	घ ऽ ट ऽ	बी ऽ ऽ	ऽ ऽ च ऽ ‖

ध्नी्सां ऽ ऽ	सां ऽ सां ऽ	रें नी् ऽ	सां ऽ ऽ ऽ : ‖	सां रें ऽ	रें ऽ रें ऽ	रें सां ऽ	रें ऽ पं ऽ ‖
राऽऽ ऽ ऽ	म ऽ र ऽ	मै ऽ ऽ	यां ऽ ऽ ऽ ‖	क टू ऽ	क ऽ ब ऽ	च न ऽ	म ऽ त ऽ ‖

मं म्						
गं् ऽ ग्	रेसा नी़ध़् ऽ	रे ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ग् ‖	सा ऽ ऽ	ऽ ऽ सा सा	
बो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ल ‖	रे ऽ ऽ	ऽ ऽ तो हे	राम मिलेंगे, इ० इ०

दरबारी कानडा–चौताल.

खरज रिखब गंधार मध्यम पंचम धैवत निखाद,
यह सप्त सूर सूध नीके बुलाये गाये धुरपद मध सुनले ओ गायन गूनि.
आरोहि अवरोहि जाकि उलट पुलट होत,
निखाद धैवत पंचम मध्यम गंधार रेखब,

		सा सा	म् म्	म्	म्					नी	नी नी
सा सा	सा रे	रे रे	ग् ग्	ऽ ग्	ऽ ग्	म् ऽ	म् म्	प ऽ	प प	ध् ऽ	ध् ध्
ख र	ज रि	ख ब	गं ऽ	ऽ धा	ऽ र	म ऽ	ध्य म	पं ऽ	च म	धै ऽ	व त
=(सम)	०	२	०	३	४	=	०	२	०	३	४

			नी	नी					म्	म्	
नी नी	ऽ नी	सां ऽ	सां ध्	ऽ ध्	नी प	ध् नी	प ध्	नी प	प ग्	ऽ ग्	म् म्
नि खा	ऽ द	ये ऽ	स प्त	ऽ सू	ऽ र	सू ऽ	ध नी	ऽ के	बु ला	ऽ ये	ऽ गा

	म् म्					न् म्			प	म्	
नी प	ग् ग्	रे रे	सा सा	सा सा	रे रे	ग् ग्	रे सा	नी प	म् म्	ऽ ग्	रे सा
ऽ ये	धु र	प द	म ध	सु न	ले ओ	गा ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	य न	ऽ गू	ऽ नि

×						सां				नी	
सा सा	ऽ सां	ऽ नी	सां सां	ऽ नी	सां सां	नी सां	सां मं	रें सां	नी सां	रें ध्	नी प
आ ऽ	ऽ रो	ऽ हि	अ व	ऽ रो	ऽ हि	जा ऽ	कि उ	ल ट	पु ल	ट हो	ऽ त

		नी						म् म्	म्		
नी नी	ऽ नी	ध् ऽ	नी प	प ऽ	प प	म् ऽ	म् म्	ग् ग्	ऽ ग्	रे ऽ	रे सा
नि खा	ऽ द	धै ऽ	व त	पं ऽ	च म	म ऽ	ध्य म	गं धा	ऽ र	रे ऽ	ख ब

दरबारी कानडा – धमार

देखो धूम गुलाल अबीर अबरक की रुकी जात, सांस खुलत नैन नास मनकी.
केसर रंग मुख छूटे कुमकुमा, एक मारत एक रोकत, एक गुमानसों देही गारी.

म्				सा		सा		सा	
ग् ऽ	म् प	प ग् ऽ	म् ऽ	रे रे	ऽ सा सा	सा नी	सा सा	नी सा म	रे सा
दे ऽ	खो ऽ	धू ऽ ऽ	म ऽ	गु ला	ऽ ऽ ल	अ बी	ऽ र	अ ग र	क ऽ
३	०	=(सम)	१	२	०	३	०	=	०

सा नी़
नी़ सा | ऽरे ध़ ऽ | नी़ प़ | प़ ऽ ‖ म़ प़ प़ | सा नी़ | सा ऽ | रे ऽ सा | ग़ ऽ |
की ऽ | ऽरु की ऽ | जा ऽ | त ऽ ‖ सां ऽ स | खु ल | त ऽ | नै ऽ न | ना ऽ |
२ ० ३ ० = ० २ ० ३

म़ नी म़*
रे रे ‖ सा सा नी़ | रे सा | नी़ सा | रे ध़ ऽ | ग़ ऽ | म़ प ‖ प ग़ ऽ | म़ ऽ | रे रे |
स म ‖ न की ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ | दे ऽ | खो ऽ ‖ ध़ ऽ ऽ | म ऽ | गु ला |
० = ० २ ० ३ ० = ० २

× नी
ऽ सा सा | म़ ऽ | प प ‖ ध़ ऽ नी | सां सां | सां ऽ | सां नी रें | सां नी | सां रें ‖
ऽ ऽ ल | के ऽ | स र ‖ रं ऽ ग | मु :ख | छू ऽ | टे ऽ ऽ | कु म | ऽ कु ‖
० ३ ० = ० २ ० ३ ०

नी नी नी म़ म़ नी
ध़ ध़ ऽ | नी प | म़ प | ध़ ग़ म़ | रे सा | सा रे ‖ ग़ म़ प | प ऽ | ध़ नी |
मा ऽ ऽ | ऽ ऽ | ए क | ऽ मा ऽ | र त | ए क ‖ रो क त | ए ऽ | क गु |
= ० २ ० ३ ० = ० २

सां नी म़*
सां ऽ सां | सां ऽ | नी सां ‖ रें ऽ सां | नी सां | सां ध़ | ध़ नी प | ग़ ऽ | म़ प ‖ (सम)
मा ऽ न | सों ऽ | ऽ ऽ ‖ दे ऽ ऽ | ही ऽ | गा ऽ | री ऽ ऽ | दे ऽ | खो ऽ ‖
० ३ ० = ० २ ० ३ ०

तराणा - दरबारी कानडा - त्रिताल

उदतनन दीं तनन देरेना तन देरेना तदरे दानि

नाद्र तुंद्र धितूलां तुंद्रद्र धितूलां तुंद्रद्र दानि तदानि. ॥उद॥

नाद्रद्र दीम तनन दीम दीम तनन, तन देरेना नाद्र तुंद्र

धेतूलां तनन धेतूलां तनन धेतूलां दानि.

नी़ प़ ध़ नी़ सा सा म़ म़
ऽऽ सा म़ | नी़ सा रे ध़ | नी़ नी़ म़ प़ ‖ ध़ नी़ सा रे | रे रे नी़ सा | ग़ ग़ म़ रे |
ऽऽ उ द | त न न दीं | ऽ म्त न न ‖ दे रे ऽ ना | त न दे रे | ना ऽ ऽ त |
२ ० ३ = (सम) २ ०

सा सा		नी	नी		म्
रे रे सा सा	नी सा रे म्	प ध् ऽ नी	म् प ध् नी	सां नी म् प	ग् म् रे रे
द रे दा नि	ना द्र तुं द्र	धि ल्लां ऽ तुं	द्र द्र धि ल्लां	ऽ तुं द्र द्र	दा ऽ नि त
३	=	२	०	३	=

अ×	नी		नी नी		सां सां
रे सा. सा म्	म् म् प ध्	ऽ रें नी सां	ध् ऽ ध् रें	ऽ सां सां सां	नी सां रें रें
दा नि उ द	ना द्र द्र दी	ऽ म्त न न	दी ऽ म्दी ऽ	ऽ म्त न न	त न दे रे
२	०	३	=	२	०

नी नी		सां मं	नी		म् म्	सा
ध् ऽ ध् नी	म् प नी सां	रें रें गं रें	नी सां ध् नी	सां नी म् प	ग् ग् म् रे	रे सा
ना ऽ ऽ ऽ	ना द्र तुं द्र	धे ल्लां ऽ त	न न धे ल्लां	ऽ त न न	धे ल्लां ऽ त	दा नि
३	=	२	०	३	=	२

---

(८) राग – अडाणा

इसका संपूर्ण वर्ग है. अवरोहमें **धैवत** स्वर लिप्त भावसे लिया जाता है. यह राग **सारंग** आंगसे गातें है अतएव इसमें **गंधार** तथा **धैवत** स्वर निर्जीव है. कभी कभी **धैवत** स्वर विना भी यह राग गातें हैं, जिस वक्त **सुहा** राग की शकल नझर आती है, मगर **सुहा** पूर्वांगप्राधान्य राग है और उसमें **सारंग** अंग आधिक नहीं. **अडाणा** के चलन उत्तरांगमें विशेष है और इसमें **सारंग** अंग अधिक है, यह दोनों का विशेष भेद है. इस रागमें **कोमल धैवत** का व्यवहार से इसकी शकल **दरबारी** को बहोत मिलती है, मगर **दरबारी** में **गंधार** तथा **धैवत** स्वर पर जो रक्तिदायक आंदोलन होता है वो इस राग में नहीं. **दरबारी** का चलन मंद्र और मध्य सप्तकोंमें विशेष है, और **अडाणे** का चलन मध्य और तार सप्तकोंमें विशेष है, यह दोनों का विशेष भेद है.

इस राग का आरंभ बहुधा **आसावरी, जौनपुरी** आदि के सदृश **मध्यम** स्वरसे होता है. इसके अंतरेका उठाव "**म् प, ध्, नी सां,**" "**म् प ध्, सां, नी सां,**" "**म् प, नी प, नी, सां, नी सां**" ऐसा बहुधा होता है. इसके आरोहमें **तीव्र निषाद** का भी व्यवहार होता है. इसका वादी स्वर **सां** है, जो इस रागमें बहोत चमकता रहता है. गानेका समय रात्रिका तीसरा प्रहर है. यह राग बहुत मधुर होनेसे अति लोकप्रिय है.

आरोहावरोह स्वरुप

सा रे (किंवा ग्) म् प, ध्, न्री (किंवा नी) सां। सां, ध्, न्री प, म् प, ग् म्, रे सा.

पकड: न्री प, ग् ग् म् प, सां; ध्, न्री प, म् प, ग्; म् रे, सा.

नोट – इसमें **दरबारी** राग सदृश "**ग्, रे रे, सा**" इस प्रकार **गंधार** को सरल नहीं लेतें.

स्वरविस्तार.

न्री प, ग्; म् प, सां; ध् न्री प; म्पन्रीम्प ग्; म्, रे, सा। न्री सा ग् म् प ध्; न्री, रें, सां;

ग्म्प, म्पन्री, पन्रीसां, न्रीसारें, सांन्रीसांन्री प; न्रीपम्प, सां; ग्, म्, रे, सा। म्पन्रीप ग्, म्पसां;

म्, प, ध्, ध्; न्री रें सां; रें न्री, ध् न्री रें सां; न्रीसां ध्, न्री प; म्पध्न्रीसांरेंग्रेंसां, ध्, न्री प;

ग्, म्, प, सां; ध्, न्री प; म्पन्रीपसां, ध् न्री प; म्, प, ग्; म्, रे, सा.

अंतरा.

म्, प, ध्; न्री, न्री, सां; रें, सां, न्री, सां, गं, मं, रें, सां; न्रीसांरेंसां, ध्, न्री न्री सां;

न्रीपम्प सां; ग्, म्प सां; सारेम्प सां; ध्, न्री न्री, सां; रें सां, ध्, न्री रें सां; मं, रें सां, न्री रें सां;

ध्, न्री न्री, सां; न्री प, ग्; म्प सां; न्री प; म् प न्री ग्; म्, रे, सा; न्रीसारेम्पग्म्प सां;

ध्, न्रीपम्प, ग्म्पग्म्रेसा; म्पन्रीप ग्, म्प सां.

नोट–"**न्री प,**" "**प सां,**" "**ग् म् रे,**" यह स्वर मींड में गाने बजानेका अभ्यास करें.

सरगम – अडाणा – त्रिताल

नी नी — सां — प ध

म़ म़ प प । सां ऽ ध़ ध़ ॥ नी सां ऽ रें । नी नी सां ऽ । म़ प सां ऽ । नी नी प प ॥
० ३ = (सम) २ ० ३

म़ म़ — सा — नी नी

ग़ ग़ म़ सा । रे रे सा ऽ । नी सा रे म़ । प प ध़ ध़ ॥ रें सां ऽ रें । नी नी सां ऽ ।
= २ ० ३ = २

मं — नी — नी नी

नी सां रें मं । रें सां नीं सां ॥ नी सां रें ध़ । ऽ नी ऽ प । म़ म़ प प । सां ऽ ध़ ध़ ॥
० ३ = २ ० ३

सां — ×प — नी नी

नी सां ऽ रें । नी नी सां ऽ । म़ म़ प प । ध़ ऽ ध़ ऽ ॥ सां ऽ ऽ ऽ । नी नी सां ऽ ।
= २ ० ३ = २

मं — नी — मं मं

नी सां रें मं । रें सां नी सां ॥ नी सां रें ध़ । ऽ नी ऽ प । गं गं मं पं । गं मं रें सां ॥
० ३ = २ ० ३

नी नी

नी सां रें सां । ध़ ध़ नी प ।
= २

अडाणा – त्रिताल.

एरि मोहे जाने दे, जाने दे री मा, शाम सुंदरवा के संगवा.
लोके लाजे लाजन् लजनवा, लाग रहूं मैं उन्ही के गरूवा.

प	म़				प
ऽ ऽ ऽ नीप	गम़ पसां ऽ सांरें ‖	नीसां ऽ ऽ ऽ	ऽ नी पनी पनी	नीरें नीसां ऽ नीप	
ऽ ऽ ऽ एऽ	रीऽ मोऽ ऽ हेऽ ‖	जाऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ एऽ	
०	३	= (सम)	२	०	

	रें	नी नी		प		
गम़ पसां ऽ सांरें ‖	नी सां ऽ नी	ध़ ध़ नी ऽ	प ऽ ऽ म़	ऽ ऽ प नी ‖	म़ प ऽ ऽ	
रीऽ मोऽ ऽ हेऽ ‖	जा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ने ऽ	दे ऽ ऽ जा	ऽ ऽ ने ऽ ‖	दे ऽ ऽ ऽ	
३	=	२	०	३	=	

म् सा म् म् नी
गुम् ऽ सारे ऽ | सा ऽ ऽ नी | सा ग् ग् म् || प प ध् नी | धनी सांरें रें सांरें |
ऽ ऽ रीऽ ऽ | मा ऽ ऽ शा | ऽ म ऽ सुं || द र वा ऽ | केऽ ऽ सं गऽ |
२ ० ३ = २

प* म् ×
नीसां धनी सां नीप | गुम् पसां ऽ सांरें || नीसां ऽ नी ध् | नी ऽ नी ऽ | प ऽ ऽ म् |
वाऽ ऽ ऽ एऽ | रीऽ मोऽ ऽ हेऽ || जाऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ने ऽ | दे ऽ ऽ लो |
० ३ = २ ०

प ऽ पनी धनी || सां ऽ ऽ ऽ | नी धनी सां ऽ | सां ऽ ऽ नीसां | रें रें सां सांरें ||
ऽ ऽ केऽ ऽ || ला ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | जे ऽ ऽ लाऽ | ऽ ज न लऽ ||
३ = २ ० ३

नी नी प सां मं
नीसां नीसां ऽ नी | ध् ध् नी ऽ | प ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ म् || प नी ऽ सां | गं ऽ मं ऽ |
जऽ नऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | वा ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ला || ऽ ग ऽ र | हूं ऽ ऽ ऽ |
= २ ० ३ = २

सां प *
रें ऽ ऽ ऽ | सां ऽ ऽ नी || रें सां ऽ रेंरें | नीनी सांनी धनी ऽ | धनी रेंनी सां नीप | री मोहे जा
ऽ ऽ ऽ ऽ | मैं ऽ ऽ उ || न हीं ऽ केऽ | गऽ रुऽ वाऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ एऽ |
० ३ = २ ०

अडाणा – त्रिताल (धैवत वर्जित प्रकार)

बीते जुगसी रैन पिया बिन, घडिपल लव छिन नहीं चैन मन.
तरसत जियरा तकत राह नित, कारि मैं करुं रसियाके आवन.

प म् म्
|: म् प सां ऽ | नी प म् प || ग् ऽ ग् म् | रे ऽ सा सा :| नी सा रे म् | प नी म् प ||
बी ऽ ते ऽ | जु ग सी ऽ || रै ऽ न पि | या ऽ बि न | घ डि प ल | ल व छि न ||
० ३ = (सम) २ ० ३

प अ×
नी रें ऽ नी | ऽ सां नी प | म् म् प नी | प नी सां ऽ || नी सां रें सांनी | सांरें सां नी प |
न हीं ऽ चै | ऽ न म न | त र स त | जि य रा ऽ || त क त राऽ | ऽ ह नि त |
= २ ० ३ = २

सां
नी सां रें गं | ऽ मं रें सां || नी सां रें सां | नी सां नी प |
का ऽ रि मैं | ऽ क रुं ऽ || र सि या के | आ ऽ व न |
० ३ = २

अडाणा - चौताल.

तेरोहि ध्यान धर दाता विशंभर हर.

तरन तारन की बिनती करूं अब नारायण नरहर.

नी़ प म् नी नी म्
प सां | नी़ प ‖ प ग् | म् प | ध् ध् | नी़ प | म् प | नी़ ग् ‖ म् ग् | प म् | नी़ प | सां ध्
ते ऽ | रो हि ‖ ध्या ऽ | न ध | र ऽ | ऽ ऽ | दा ऽ | ऽ ता ‖ ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ बि | शं ऽ
३ ४ =(सम) ० २ ० ३ ४ = ० २ ०

नी नी नी ×प नी
ध्नी सांसां | सां ध् ‖ ध्नी रें | सां सांरें | सां ध् | नी़ प | प सां | नी़ प ‖ म् प | ध् नी | सां सां
ऽ ऽभ | र ऽ ‖ ऽ ऽ | ऽ ऽह | र ऽ | ऽ ऽ | ते ऽ | रो हि ‖ त र | न ता | ऽ र
३ ४ = ० २ ० ३ ४ = ० २

नी सां नी प
सां ध् | नी सां | सां ऽ ‖ नी सां | रें ऽ | सां नी | सां रेंनी | सांरें ध् | नी़ प ‖ म् प | नी सां
न ऽ | ऽ ऽ | की ऽ ‖ बि न | ती ऽ | क रूं | ऽ ऽअ | ऽ ब | ऽ ऽ ‖ ना ऽ | रा ऽ
० ३ ४ = ० २ ० ३ ४ = ०

म् मं नी नी नी* प
रें गं | गं मं | रें सांरें | सां ध् ‖ ध्नी रें | सां सांरें | सां ध् | नी प | प सां | नी़ प ‖ (सम)
य न | ऽ ऽ | ऽ ऽन | र ऽ ‖ ऽ ऽ | ऽ ऽह | र ऽ | ऽ ऽ | ते ऽ | रो हि ‖
२ ० ३ ४ = ० २ ० ३ ४

अडाणा - धमार.

मितवा को जाने ना दूंगी निकसो जात ये चरचा.

सीत बसन लिये अब कहां जाओगे, बैठ रहो कुंजन.

सां नी नी नी
सां ऽ | नी सां ऽरें | ध् नी | पम् प ‖ सां ऽ नी | सां सांरें | सां ध् | नी ऽ प | नी सां | ध् ऽ ‖
मि ऽ | ऽ ऽ ऽ | त ऽ | वाऽ को ‖ जा ऽ ऽ | ऽ ऽने | ना ऽ | ऽ ऽऽ | दूं ऽ | ऽ ऽ ‖
२ ० ३ ० =(सम) ० २ ० ३ ०

म्
नी ऽ ऽ | प ऽ | म् म् | प प ग् | म् ऽ | म् ऽ ‖ नी म्प म् | रे सा | ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ |
गी ऽ ऽ | ऽ ऽ | नि क | सो जा ऽ | ऽ ऽ | त ऽ ‖ ये ऽ च | र चा | ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ |
= ० २ ० ३ ० = ० २ ०

× नी̱ रें नी̱

म॒ प	ध॒ नी̱		प सां ऽ	सां ऽ	रें सां	ऽ नी̱ सां	रें सां	रें नी̱		सां रें ध॒	नी̱ प
सी ऽ	त ऽ		ब स ऽ	न ऽ	लि ये	ऽ अ ब	क हां	ऽ जा		ऽ ओ गे	ऽ ऽ
३	०	=	०	२	०	३	०	=	०

सां मं नी̱

| म॒ प | नी̱ सां सां | गं मं | रें ऽ || सां सां | ध॒ धनी̱ सां | मितवा को, ई.
| बै ऽ | ठ ऽ र | हो ऽ | कुं ऽ || ज न | ऽ ऽ ऽ |
| २ | ० | ३ | ० | = | ० |

चतरंग अडाणा – त्रिताल.

चतरंग सब मिल गावो, ताल मृदंग सुर तीवर कोमल कर, कृष्ण पिया को सुनावो. ॥ चत ॥
दीम दीम तोम तन धिंत्तिलि तिल्लाना, दर दर तुम दर दर दर तननननन ओदेन्ना,
धिमान् धा तराकिट ता धा, धित्ता धित्ता तरकिट ता धित्ता, तराकिट ता धित्ता, तराकिट ता धित्ता ॥चत॥
सेवा सूत सूच्छम साध सुर, सरगम बनाय मिलाय गाय,
म॒ प नी सा रे म॒ प ध॒ नी̱ रे सा, ग म॒ रे सा नी̱ प म॒ प ग॒ म॒ रे सा. ॥ चतरंग ॥

सा रे म॒ प म॒

नी̱ सा म॒ रे	प म॒ नी̱ प		सां ऽ नी̱ ध॒	नी̱ ऽ प ऽ	नी̱ म॒ प पनी̱	प ग॒ म॒ म॒	
च त रं ग	स ब मि ल		गा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ वो ऽ	ता ऽ ल मृऽ	दं ग सु र	
०	३	= (सम)	२	०	३

सा प म॒

प ग॒म॒ रे सा	रे रे सा सा	नी̱ सा रे म॒	प ऽ नी̱ प		नी̱ ऽ सां ऽ	ग॒ म॒ रे सा
ती वऽ र को	म ल क र	कृ ऽ ष्ण पि	या ऽ को सु		ना ऽ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
=	२	०	३	=	२

सा * रे म॒ प × नी नी सां सां

नी̱ सा म॒ रे	प म॒ नी̱ प		म॒ प ध॒ ध॒	नी̱ सां सां सां	नी̱ सां रें सां	रें नी̱ सां ऽ	
च त रं ग	स ब मि ल		दी ऽ म्दी ऽ	म्तो ऽ म्त न	धि त्ति लि ति	ल्ला ऽ ना ऽ	
०	३	=	२	०	३

प नी̱ प नी̱	सां सां सां सां	नी̱ रें सां रें	नी̱ सां प नी̱		रें सां ऽ रें	सांनी̱ सांनी̱ प नी̱
दर दर तुम दर	दर दर त न	न न न न	ओ दे ऽ न्ना		धि मा ऽ न्धा	तर किट ता धा
=	२	०	३	=	२

मं मं / म म / सा * रे

म् प नी सां | गंगं मं रें सां || पप नी म् प | गग म् रे सा | नी सा म् रे |
धि त्ता धि त्ता | तराकिट ता धि त्ता || तराकिट ता धि त्ता | तराकिट ता धि त्ता | च त रं ग |
० ३ = २ ०

(आभोग)

म् प / नी नी / म् म् म्

प म् नी प || म् ऽ प ऽ | ध् ध् नी प | ग् ग् ग् म् | रे रे सा सा || नी सा रे म्प | नी नी ध् ध् |
स ब मि ल || से ऽ वा ऽ | स त सू ऽ | च्छ ऽ म सा | ऽ ध सु र || स र ग मऽ | ब ना ऽ थ |
३ = २ ० ३ = २

प / नी / मं

नी नी ध् ध् | ध् ऽ ऽ ध् || म् प नी सा। रे म् प ध्। नी रें सां ऽ। गं मं रें सां ॥
मि ला ऽ थ | गा ऽ ऽ य || =
० ३ २ ० ३

म्

प नी म् प। ग् म् रे सा। चतरंग, इ० इ०
= २

---

(९) राग कौंसी कानडा

इसका संपूर्ण वर्ग है. आरोहमें **ऋषभ** तथा **पंचम** स्वर का बहोत कम व्यवहार होता है. इसमें **पंचम** स्वर "**म्पधूनींसां**" या "**स नीध्पम्**" ऐसा सरल रीतिसे नहीं लगातें. "**ग म् ध् नी सां, नी ध् म्; ग्, प ग्; म् ग् रे सा; म् प् सा**" ऐसा **पंचम** स्वर का खूबीसे व्यवहार होता है, जो ध्यानमें रक्खें. : "**ग्, प ग्; म् ग् रे सा**" यह तानसे **भिमपलासी, बागेश्री** आदि की छाया नझर आती है, परंतु आरोहणमें **ऋषभ** का तथा आरोहावरोहणमें **कोमल धैवत** का व्यवहारसे भिन्नता दिखाई पडती है. **मालकौंस** राग के सदृश इसमें "**म् ध्**" तथा "**ध् म्**" इन स्वरों की संगती है. इसके उत्तरांग **मालकौंस** राग के सदृश है.

इसके अंतरेका उठाव "**ग् म, ध्, नी सां**" ऐसा **मालकौंस** रागके सदृश होता है. इसकी गती मध्य तथा तार सप्तकोंमें विशेष है. इसका वादी स्वर **म्** है. गानेका समय रात्रिका तीसरा प्रहर है. इसका उत्तरांगमें चलन विशेष है. कोई गुणीजन इसमें **कोमल धैवत** के जगह **तीव्र धैवत** का व्यवहार करते हैं. यह प्रकार **बागेश्री** अंगसे गाया जाता है. यह

प्रकार प्रायः अप्रसिद्ध है. किसी के मतमें **बागेश्री** में **पंचम** स्वर बिलकुल वर्ज करनेसे **कौंसी कानडा** होता है, परंतु प्रचारमें **बागेश्री** राग भी कभी कभी **पंचम** स्वर रहित गाया जाता है, अतएव यह मत अपनी पद्धति विरुद्ध है.

आरोहावरोह स्वरूप.

म्
ऩी सा म्, ग् म् ध्, नी सां । सां, नी ध् म्; ग्, प ग्, म् ग् रे सा.

पकड :– ऩी सा, म्, म् ग्; रे ग्, प ग्, म् ग् रे सा; म्, ध्, नी सां;
नी ध्, म्ध्नीध्म्; प ग्, म् ग् रे सा.

स्वरविस्तार.

ऩी सा, म्; म्, म् ग्; म् ग्, रे ग्, प ग्, म् ग् रे सा; ऩी सा रे सा, ऩी ध़् सा; म़् प़ सा; ग्, म् ग्; प ग्, म् ग् रे सा । ऩी, सा म्; प ग्, म् ध् नी ध् म्; सां नी ध् म्; ग्, प ग्, म् ग् रे सा । प, प म्, ग् म्, ग् म् ध् नी सां, नी रें सां; सां, नी ध्, नी ध् म् ग्,
×म् नी
म् ग् रे सा । ग् म्, ध्, नी सां; सां, नी सां, सां; ध् नीं सां, मं गं रें सां, नी ध्, म्; ग् म् ध् नी सां नी ध्, नी ध् म्; ग् म्, प म्, ग्; म् ग् रे सा; ऩी सा म्.

सरगम–कौंसी–त्रिताल.

म् नी म्
ऽ ऽ ऽ प । प ग् ऽ म् । म् ध् ऽ नी ॥ सां ऽ ऽ रें । सां नी ध् म् । ग् ऽ म् ग् ।
२ ० ३ =(सम) २ ०

.नी * म् नी
रे सा ऽ ध़् ॥ ऩी सा ऽ म् । ग् रे सा, प । प ग् ऽ म् । म् ध् ऽ नी ॥ सां ऽ ऽ ऽ ।
३ = २ ० ३ =

×म् नी सां नी
ऽ ऽ ऽ ऽ ।: ग् म् ध् नी । सां ऽ नी सां ॥ ध् नी सां मं । गं रें सां ऽ :। नी ध् म् ध् ।
२ ० ३ = २ ०

म् * म् नी
सां ऽ रें सां ॥ नी ध् म् प । ग् रे सा, प । प ग् ऽ म् । म् ध् ऽ नी ॥ सां ऽ ऽ ऽ ।
३ = २ ० ३ =(सम)

कौंसी – त्रिताल

चित चढि मोहनि मूरत सखि अब, नयनन निरखत नटवर की छब.
मनहर रसिया अज अविनाशी, छाय रह्यो ब्रिज बसिया घट सब.

		म्			
।: [illegible] ध् नी् सा	म् ऽ म् ग्	मग् रेग् प ग्	म् ग् रे सा :	नी् सा रे सा	म् प् सा सा
चि त च ढि	मो ऽ ह नि	मूऽ ऽ र त	स खि अ ब :	न य न न	नि र ख त
३	= (सम)	२	०	३	=

		अ×		नी	
नी् ध् म्	म् ग् रे सा	: म ग् म् ध्	सां सां सां ऽ	ध् नी् सां मं्	गं् रें सां ऽ :
न ट व र	की ऽ छ ब	: म न ह र	र सि या ऽ	अ ज अ वि	ना ऽ शी ऽ :
२	०	३	=	२	०

		म् म् म्		*	
सां रें सां नी्	ध् नी् ध् म्	ग् ग् प ग्	म् ग् रे सा	नी् ध् नी् सा	
छा ऽ य र	ह्यो ऽ ब्रि ज	ब सि या ऽ	घ ट स ब	चि त च ढि	(सम)
३	=	२	०	३	

कौंसी कानडा – झपताल

सो धुरि धुरि आवे री मुरि मुरि झांकि झांकि फिर जात.
द्वारे ठाडी लागी रहत है, तम मन आति अकुलात.

		म् म्	ध् नी	सां		
ऽ ऽ प	प म्	ग् म् ग्	म् ध्	नी् सां नी्	रें सां	सां नी् ध्
ऽ ऽ सो	धु रि	धु ऽ रि	आ ऽ	वे ऽ ऽ	ऽ ऽ	री ऽ ऽ
२	०	३	= (सम)	२	०	३

			सा	सा	सा		नी
नी् ध्	म् ग् म्	ग् रे	रे ऽ सा	रे ऽ	सा ऽ रे	ऽ सा	ध् ऽ सा
ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	मु रि	मु ऽ रि	झां ऽ	कि ऽ झां	ऽ कि	फि ऽ र
=	२	०	३	=	२	०	३

	*		म् म् ×		नी		
सा ऽ	सा ऽ, प	प म्	ग् म् ग्	म् ऽ	ध् ऽ ऽ	सां नीसां	सां ऽ ऽ
जा ऽ	त ऽ, सो	धु रि	धु ऽ रि	द्वा ऽ	रे ऽ ऽ	ठा ऽ	डी ऽ ऽ

सां रें	सां नी ध्	नी ऽ	ध् म् ग्	ग् म्	ध् ऽ सां	सां नी	ध् ऽ नी
ला ऽ	गी र ह	त ऽ	है ऽ ऽ	त न	म ऽ न	अ ति	अ ऽ कु

ध् ऽ	प म्, प	प म्	ग् म् ग्	
ला ऽ	त ऽ, सो	धु रि	धु ऽ रि	(सम)

कौंसी कानडा-झूमरा (विलंबित)

आज सखी तट जमुनापे जावे, मनहर मुरली नटवर सुनावे.

राधि का अरू सास पियरवा, सबहू मिलके नाद सुनसुन जावे.

म् ऽ (म्)	म् ग्म् ग्रे सा	ध् नी सा(सा)	सा म् ग्म्प ग्म्	ग् म् ध्नीसांनी
आ ऽ ज	स खीऽ तऽ ट	ज मु नाऽ	पे ऽ जाऽऽ वेऽ	म न हऽऽऽ
=(सम)	२	०	३	=

ध् ध्नी ध्प म्	ग् ग् ग्ऽग्म्	ग्रे सा ध्नी सा(सा)	म् ऽ ग्म्ध्नी	सां नीसां ध्नी सां
र मुऽ रऽ लि	न ट वऽऽऽ	रऽ सु नाऽ वेऽ	रा ऽ धिऽऽऽ	का ऽ अऽ रू
२	०	३	=	२

सां गं रेंसां	सां ध्नी सां सां	सां (सां) सां	सां ध्नी ध्प म्	ग् म् ध्नी
सा ऽ सऽ	पि यऽ र वा	स ब हु	मि लऽ केऽ ऽ	ना ऽ दऽ
०	३	=	२	०

सांनीध्प म्ऽग्म् ग्रे साऽनीसा
सुनसुन जाऽऽऽ ऽ वेऽऽऽ
३

कौंसी कानडा - धमार.

आज मोसें होरी खेलन आयो सरस बनवारि.

ब्रिजकी सखी सब खेलन आई, ढीत लंगरवा दे गयो गारि.

सा सा | ध् नी | सा म् ऽ | म् ग् | म् प | ग् रे सा | नी ऽ | ध् नी || सा सा ऽ | म् ग् | म् ग् |
आ ज | मो सें || हो ऽ ऽ | री ऽ | ऽ खे | ल न ऽ | आ ऽ | यो ऽ || स र ऽ | स ऽ | ब न |
३ ० =(सम) ० २ ० ३ ० = ० २

रे रे सा | सा सा | ध् नी || म् ग् म् | ध् नी | सां सां | सां ऽ ऽ | सां रें | सां ऽ || ध् नी सां |
वा ऽ रि | आ ज | मो सें || ब्रि ज ऽ | की ऽ | ऽ स | खी ऽ ऽ | स ऽ | ब ऽ || खे ऽ ऽ |
० ३ ० = ० २ ० ३ ० =

मं गं | रें सां | नी ध् नी | ध् ऽ | म् ऽ || म् प ग् | म् रे | सा सा | नी ध् म् | ध् नी | सा ऽ ||
ल ऽ | न ऽ | आ ऽ ऽ | ऽ ऽ | ई ऽ || ढी ऽ ऽ | ट ऽ | ऽ लं | ग र ऽ | वा ऽ | ऽ ऽ ||
० २ ० ३ ० = ० २ ० ३ ०

सां ऽ नी | ध् म् | ध् नी | ध् म् ग् | रे सा | ध् नी ||
दे ऽ ऽ | ऽ ऽ | ग यो | गा ऽ रि | आ ज | मो से || (सम)
= ० २ ० ३ ०

तराणा - कौंसी कानडा - त्रिताल

तनन देरना तदानि दींम तानोंम तन देरेना देरे देरे तानोंम तन देरेना,

नादेरे तदींम दींम तदारे दानि दानि दीम तानोंम तन

तिकिट धिकिट नग नुंग नुंग धित्ता क्डां किडनग तगीन तान क्डांन धा धा.

। । । नीरें | सारें धनी ध् ऽनी || सां ऽ ऽ रें | सां नी ध् म् | ग् ऽ प ग् | म् ग् रे सा ||
। । । तऽ | नऽ नऽ दे ऽर || ना ऽ ऽ त | दा ऽ नी ऽ | दी ऽ म्ता ऽ | नो ऽ म्त न ||
० ३ =(सम) २ ० ३

नी नी नी अ× म् ध् नी सां
सा म् म् ध् | ध् ध् धनी सां | नी ध् ऽ म् | ग् रे सा ऽ || ग् म् ध् नी | सां ऽ सां ऽ |
दे रे ना दे | रे दे रेऽ ता | ऽ नो ऽ म्त | दे रे ना ऽ || ना दे रे त | दी ऽम दी ऽम |
= २ ० ३ = २

नी
ध् नी सां मं | गं रें सां ऽ || नी ध् म् ग् | म् ग रे सा | सासा सामू मूमू मूमू |
त दा ऽ रे | दा नि दा ऽ || नि दी ऽ म्ता | नो ऽ म्त न | तिकि टधि किट नग |
० ३ = २ ०

*
धध् धध् ध् ध् || नी ऽ धध् मम् | गग् ऽरे ग् म् | ऽग् रे सा, नीरें | सांरें धनी ध् ऽनी ||
नुंग नुंग धि ता || क्डां ऽ किड नग | तगि ऽन तान क्डां | ऽन धा धा, तऽ | नऽ नऽ दे ऽर ||
३ = २ ० ३ (सम)

भैरवी थाट.

इस थाट में ६ रागोंका समावेश किया है. उनके नाम :—

(१) **भैरवी** (२) **सिंध भैरवी** (३) **मालकौंस** (४) **भूपाल** (५) **बिलासखानी तोडी** (६) **लाचारी तोडी.**

यह रागों गानेका समय दिन का पहिला प्रहर है. मालकौंस राग मध्य रात को २ बजेतक गातें है.

---

(१) राग भैरवी

इसका संपूर्ण वर्ग है. इसमें सबी स्वर **कोमल** लगतें हैं. इसको रंगीन करनेके लिए गुणीजन बाराही स्वरों का कुशलतासे उपयोग करते हैं. आरोहमें कभी कभी **ऋषभ** और **पंचम** छोडभी देतें है, जिससे **मालकौंस** राग की थोडी छाई दिखाई पडती है. "**ग्, सा रे् सा**" यह तान इसमें प्रधान है, जो बारबार आती है. "**सा रे् ग् रे् सा**" यह तानसे **तोडी** राग की आशंका है, अतएव इस रागमें "**ऩी सा ग् रे् सा**" इस प्रकार आरोहण में **ऋषभ** छोडकर स्वर रचना करतें हैं. "**सां नी ध्, प**" यह तानसे **आसावरी** राग की आशंका है अतएव इस रागमें "**सां नी ध् प**" ऐसी सीधी स्वर रचना होती हैं. इसमें **धैवत** को बिलकुल हिलाना या धक्का देना नहीं. इसमें "**ध् म्**" तथा "**प ग्**" इन स्वरों की संगती कभी कभी करतें है.

इसके अंतरे का उठाव "**ध् म्, ध्, नी सां, रें् सां**" ऐसा **पंचम** स्वर छोडकर **धैवत** से होता है. उसका वादी स्वर ध् है. **मध्यम** स्वर को बढानेसे **म्** भी वादी हो सकता है. इसकी गती तीनों सप्तकोंमें है. यादि इसके गानेका समय पूर्व दिनके ९ बजेतक है, तथापि यह राग बहोत मधुर तथा लोकाप्रिय होनेसे महेफिल की आखेरीमें कोई भी समय को सर्वदा गातें है, शायद ही कोई ऐसा होगा जो सांगीतिक विद्वानोंमेंसे **मियां तानसेनजी** के

नाम को न जानता हो तथा **भैरवी** को गानें बजाने न जानता हो. सुबह के रागोंमें इसके बराबर और मधुर राग नहीं है. ध्रुपद अंगमें यह राग बहोत कम गातें है. ख्याल, टप्पा, ठुमरी, आदि का इसमें ज्यादा व्यवहार है. इसमें श्रृंगार तथा भक्ति रस है.

इसका "**सिंध भैरवी**" नामक एक उपराग है, जिसका विस्तारपूर्वक सब हाल आगे लिखा है.

आरोहावरोह स्वरुप

सा, रे॒ ग॒, म॒, प ध॒, नी॒ सां । सां नी॒ ध॒ प, म॒ ग॒, रे॒ सा

पकड :- ग॒ ग॒, सा रे॒ सा; ध॒, नी॒ सा, रे॒ सा.

स्वरविस्तार.

सा, ग॒म॒ग॒रेग॒; सा रे॒ सा; ध॒, सा; सा, रे॒; सानी॒ध॒, सा; प, ध॒, सा; रे॒, रे॒; ध॒ ग॒, सा रे॒ सा।

सा रे॒ म॒; गम॒; प म॒ रे॒; सा; प, रे, ग॒ प, ध॒ नी॒; म म॒ ग॒, रे॒ सा; ध॒ सा, रे ग॒; सा रे॒ सा।

प, प, ध॒, प; मपमप नी॒, ध॒, प; ग॒ प ध नी॒; ध, म॒; रे॒ म॒, म॒ प, प ध॒, ध॒ सां, ध॒, प; नी॒;

ध प नी॒; प ध सां नी॒; प ध प नी॒; ध, म॒; म॒ प, प सां, ध॒, प; ग॒ प, म॒ ध॒; पम॒ग॒सा ग॒म॒पम॒;

ग॒म॒पम॒ ग॒म॒रे॒; सा; प, ध॒ नी॒; मम॒ग॒, रे॒ सा; ध॒ सा, रे॒ म॒ (ग॒); सा रे॒ सा। ग॒, म॒, ध॒, नी॒, सां, सां;

ध॒नी॒सांरेंग॒; रें, नी॒, सां; रें गं॒; सां रें॒ सां, नी॒सां; ध॒, सां, रें॒; रें॒रें॒; नीसां, नीसांरें॒, सां;

रें॒, सां, नी॒, ध॒, प; रे॒, प, ध॒, म॒; ग, ग, म॒; सा, ग॒ रे॒ सा; ध॒ सा, रे॒ म॒, (ग॒); रे॒ सा;

नी॒ नी॒ सा, रे॒, सा.

सरगम – भैरवी – त्रिताल

सा नी ग़ सा नी
ऩी सा ग़ म़ ॥ ध़ ऽ ऽ ऽ । ग़ प ऽ म़ । ऱे ऽ सा ऱे । ऩी सा ग़ म़ ॥ ध़ ऽ ऽ प ।
३ = (सम) २ ० ३ =

ऽ ऩी ध़ प । ग़ प ध़ ऩी । ध़ प म़ ग़ ॥ प ऽ म़ ग़ । ऽ म ऽ म़ । ग़ ऱे सा ऱे ।
२ ० ३ = २ ०

सा नी × नी नी
ऩी सा ग़ म़ ॥ ध़ ऽ ऽ ग़ । ऽ म़ ध़ ऩी । सां ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ध़ ऩी ॥ सां ऽ ध़ ऩी ।
३ = २ ० ३ =

सां
सां ग़ं ऱें ग़ं । ऽ ऱें सां ऱें । ऩी सां ध़ ऩी ॥ सां ऩी ऽ ध़ । प ऽ ऽ ग़ं । ऽ ऱें सां ऽ ।
२ ० ३ = २ ०

ग़ सा
ऩी ध़ ऽ प ॥ ऽ म़ ऽ ग़ । ऽ प ऽ म़ । ऱे ऽ सा ऱे । ऩी सा ग़ म़ ॥ (सम)
३ = २ ० ३

भैरवी – धुमाळी

सैया जावो मैं नाहिं बोलुं गिरधारी,
देखी प्रित तिहारि तिहारि तिहारि. ॥ मैं नाहिं ॥
डगर चलत मोसे बाराजोरि करत,
लाज न तुमको बिहारि बिहारि बिहारि. ॥ मैं नाहिं ॥

सा सा ऱे ऩी (सा)	सा म़ ऽ म़	ग़ रे ग़ म़	ग़ ऱे सा ऽ	सारे़ग़ म़पध़ प ऽ	ऽ प ध़ सां
सैं यां जा वो	मैं ना ऽ हिं	बो लुं गि र	धा ऽ री ऽ	देऽऽ ऽ खी ऽ	ऽ प्रि त ति
०	=	०	= (सम)	०	=

ऩीसां ऩीध़ प म़	ग़म़ पध़ प म़	ग़म़ ग़ऱे साऩी सा	* सा म़ ऽ म़	ग़ रे ग़ म़	ग़ ऱे सा ऽ
हाऽ ऽ रि ति	हाऽ ऽ रि ति	हाऽ ऽ रीऽ ऽ	मैं ना ऽ हिं	बो लुं गि र	धा ऽ री ऽ
०	=	०	=	०	=

× नी		सां सां	नी		
ध् म् ध् नी	सां सां सां सां	नी नी सां गं	रें सां ध प	ग् प प प	ग् प ध् सां
ड ग र च	ल त मो से	बा रा जो ऽ	रि क र त	ला ऽ ज न	तु म को बि
०	=	०	=	०	=

			*		
नीसां नीध् प म्	गम् पध् प म्	गम् गरे सानी सा	ऽ म् म् म्	ग् रे ग् म्	ग् रे सा ऽ
हाऽ ऽ रि बि	हाऽ ऽ रि बि	हाऽ ऽ रीऽ ऽ	ऽ मैं ना हिं	बो लुं गि र	धा ऽ री ऽ
०	=	०	=	०	=

भैरवी – पंजाबी (विलंबित)

नाहक लाये गवनवा, रे मोरा.
जबसे गये मोरि सुधहु न लीनी, बीतो जात जोबनवा, रे मोरा.

.नी	ग् सा				
ऽ सा सारेसारे पम्	रेसा रे ऽ .नी	सारे सा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ सा	रेम् म् ऽ गम्
ऽ ना ऽ हक	लाऽ ये ऽ ग	वन वा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ग	वन वा ऽ रेऽ
०	३	= (सम)	२	०	३

	सा		ग सा	
सागमप मगमऽ ऽ ऽ	(ग्) ऽ रे .नी	ऽ सा सारेसारे पम्	रेसा रे ऽ .नी	सारे सा ऽ ऽ
मोऽऽऽ राऽऽऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ना ऽ हक	लाऽ ये ऽ ग	वन वा ऽ ऽ
=	२	०	३	=

	×			सा
ऽ ऽ ऽ ऽ	सा सा सा ऽरे	ग् ऽ म् म्	ग् ग् म् ऽम्	धऽमम् गम् रे सा
ऽ ऽ ऽ ऽ	ज ब से ऽग	ये ऽ मो रि	सु ध हु ऽन	लीऽऽऽ ऽ नी ऽ
२	०	३	=	२

		ग	
ऽ सासा सा ऽरे	सारेगम् पधपम् गमपध् पम्ऽऽ	पम्ऽऽ ऽ रे ऽ	सारेगम् गरेसानी सा ऽ
ऽ जब से ऽग	येऽऽऽ ऽ ऽ ऽ	मोरिऽऽ ऽ हां ऽ	ऽ ऽ रे ऽ
०	३	=	२

	प ध्	नी म्	
सा ध् प ऽ	प ऽ ध् सां	ध् प ग् ऽप	प गमपध् नीसांनीध् पमगरे
बी ऽ तो ऽ	जा ऽ त जो	ब न वा ऽरे	मो राऽऽऽ ऽ ऽ
०	३	=	२

	ग् सा	
सानीसाऽ ऽसा सारे पम्	रेसा रे ऽ नी	सारे सा ऽ ऽ
ऽ ऽना ऽ हक	लाऽ ये ऽ ग	वन वा ऽ ऽ
०	३	=

नोट :– इसके तान पलटे हमारी “**दिलखुश उस्तादी गायकी**” पुस्तक में दीए हैं वो देखिए.

भैरवी – धमार.

आलि देखो भोर भई लोग जागे पवन जागे पंछी जागे गगन बिराजे.

प्रेम अलाप कछु सुनतहू नाहीं, कहा करूं मोरे प्रान जावत. ॥ आलि ॥

श्याम तुम सोवत हो अब, काहे सगरी रैन ए कहां जागे. ॥ आलि ॥

किन दूतिन पिया बिरमाए आलि देखो मोरे सोए भाग वाके जागे. ॥ आलि ॥

सां म् नी

सां नी | रें सां | ध् ऽ प | ग् म् | ध् नी ‖ सां ऽ ऽ | सां नी | सां ऽ | सां गं ऽ | गंरें गंरें |

आ ऽ | ऽ लि | दे ऽ खो | भो ऽ | र भ ‖ ई ऽ ऽ | लो ग | जा ऽ | गे ऽ ऽ | पऽ वऽ |

० २ ० ३ ० =(सम) ० २ ० ३

सां म् म् म्

सां सां ‖ ऽ सां ऽ | सां नी | गं सां | ध् ऽ प | ग् ग् | ग् म् ‖ ग् रे सा | ※सां नी | रें सां |

न जा ‖ ऽ गे ऽ | पं ऽ | ऽ छि | जा ऽ गे | ग ग | न बि ‖ रा ऽ जे | आ ऽ | ऽ लि |

० = ० २ ० ३ ० = ० २

सां म्× नी

ध् ऽ प | ग् म् | ध् नी ‖ सां नीसां सां | सां सां | सां नी | गं सां नी | ध् प | ऽ प ‖ गं ऽ रें |

दे ऽ खो | प्रे ऽ | म अ ‖ ला ऽ प | क छु | सु न | त हू ना | ऽ हीं | ऽ क ‖ हा ऽ क |

० ३ ० = ० २ ० ३ ० =

(संचारी)

सां नी | ध् प | प नी ध् | प म् | ग् रे ‖ सा सा ऽ | *सां नी | रें सां | ध् ऽ प | ऽ प | प प ‖

रूं मो | ऽ रे | प्रा ऽ न | जा ऽ | ऽ ऽ ‖ व त ऽ | आ ऽ | ऽ लि | दे ऽ श्या | ऽ म | तु म ‖

० २ ० ३ ० = ० २ ० ३ ०

म् म्

प नी ऽ | ध् ऽ | प ऽ | म् ऽ ग् | म् ऽ | प ऽ ‖ ग् रे सा | सा ऽ | ग् ग् | सा ऽ ध् |

सो ऽ ऽ | व ऽ | त ऽ | हो ऽ ऽ | अ ऽ | ब ऽ ‖ का ऽ ऽ | हे ऽ | स ग | री ऽ ऽ |

= ० २ ० ३ ० = ० २ ०

नी

ध् नी | सा सा ‖ सा ऽ ग् | म् प | नी प | ध् म् प | ग् म् | ग् रे ‖ सा ऽ ऽ |

रै ऽ | ऽ न ‖ ए ऽ ऽ | क हां | जा ऽ | ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ ‖ गे ऽ ऽ |

३ ० = ० २ ० ३ ० =

(आभोग)

* सां नी	रें सां	धृ ऽ प	नी नी	सां गृ	रें ऽ सां	सां नी	रें सां	नी धृ प
आ ऽ	ऽ लि	दे ऽ खो	कि न	दू ऽ	ति ऽ न	पि या	बि र	मा ऽ ए
०	२	०	३	०	=	०	२	०

प नी	धृ प	गृ मृ धृ	नी सां	ऽ सां	प ऽ प	गृ मृ	प गृ	रें ऽ सा
आ लि	दे खो	मो ऽ रे	सो ऽ	ऽ ए	भा ऽ ग	वा ऽ	के जा	ऽ ऽ गे
३	०	=	०	२	०	३	०	=

* सां नी	रें सां	धृ ऽ प	
आ ऽ	ऽ लि	दे ऽ खो	इ० इ०
०	२	०	

चतरंग - भैरवी - त्रिताल.

चतरंग गाइये सुनाईये गुणी को, अनेक रूप रंग और मृदु सूर, जामें होवे रसकी तान.
दिर दिर तोम तनोम तनोम तन देरेना, तदारे दानि तोम तोम तोम तोम,
धृ नी सा, धृ नी सा, गृ रे गृ मृ गृ रें सा,
तुन्ना किडकिड धाक्रांग धाक्रांग तुन्ना किडकिड धा,
धा किडकिड धुम किडकिड क्रांग क्रांग क्रांग तक धा.

नी सा गृ मृ	धृ ऽ प मृ	गृ रे गृ मृ	गृ रें सा रें	नी सा गृ मृ	धृ ऽ प मृ
च त रं ग	गा ऽ ईये सु	ना ऽ ईये गु	णी ऽ को ऽ	च त रं ग	गा ऽ ईये सु
३	= (सम)	२	०	३	=

गृ रे गृ मृ	गृ रें सा ऽ	सा सा गृ गृ	मृ मृ मृ मृ	गृ रे गृ मृ	गृ रें सा सा
ना ऽ ईये गु	णी ऽ को ऽ	अ ने ऽ क	रू प रं ग	औ ऽ र मृ	दु सू ऽ र
२	०	३	=	२	०

सारेंगृमृपधृ ऽ प ऽ	प ऽ प ऽ	धृ नी धृ प	मृ गृ रें सा	नी सा गृ मृ
जाऽऽऽऽऽ ऽ में ऽ	हो ऽ वे ऽ	र स की ऽ	ता ऽ ऽ न	च त रं ग
३	=	२	०	३

अx धृधृ ममृ धृ नृी	सां सां ऽ सां	सां सां ऽ रें नृी	सां सां नृी धृ :‖	ऽ ऽ ऽ धृ	म् प प गृ मृ
‖: दिर दिर तो ऽ	म्त नो ऽ म्त	नो ऽ म्त न	दे रे ना ऽ :‖	ऽ ऽ ऽ त	दा रे दा नि
=	२	०	३	=	२

नृीं ऽ ऽ ऽ	धृ ऽ ऽ ऽ	गृ ऽ ऽ रेृ	सा ऽ ऽ ऽ	.नृी धृ .नृी सा ऽ । .नृी धृ .नृी सा ऽ ‖
तो ऽ ऽ ऽ	म्तो ऽ ऽ ऽ ‖	म्तो ऽ ऽ म	तो ऽ ऽ म	: ० ३
०	३	=	२	

गृ रे गृ मृ । गृ रेृ सा ऽ :	धृ मृ धृधृ नृीनृी	सां सां ऽ सां	सां सां ऽ रेृं नृी	नृी सांसां सांसां धृ ऽ :
= २	:तु न्ना किड किड	धा क्रां ऽ ग्धा	क्रां ऽ ग्तु न्ना	किड किड धा ऽ :
	०	३	=	२

प पप पप पप	मृ प पप गृगृ मृमृ	नृीं ऽ धृ ऽ	प मृ गृ मृ	गृ रेृ सा रेृ
धा किड किड किड	धुम किड किड किड ‖	क्रांग ऽ क्रांग ऽ	क्रां आंग त क	धा ऽ रे ऽ
०	३	=	२	०

रेृ*
नृी सा गृ मृ ‖
च त रं ग ‖ (सम)
३

---

(२) राग सिंध भैरवी

यह **भैरवी** व **काफी** मेल का मिश्र प्रकार है. पूर्वांग में **काफी** और उत्तरांग में **भैरवी** अंगसे गाया जाता है. **मंद्र पंचम** स्वर को **षडज** मानकर इस राग की स्वर रचना करनेसे **भैरवी** राग होता है, जैसे

सिंध भैरवी – प़ धृ नृी सा रे गृ मृ प धृ नृी सां.

भैरवी – सा रेृ गृ मृ प धृ नृी सां रेृं गृं मृं.

भैरवी का कोमल **ऋषभ** इस राग का कोमल **धैवत है. भैरवी** राग के आरोह में जैसा **तीव्र ऋषभ** भी लगातें है वैसा इस राग के आरोहमें थोडा **तीव्र धैवत** का भी व्यवहार लोग करतें है. इसका वादी स्वर **प** है. गानेका समय दिन का दूसरा प्रहर है. यह एक आधुनिक मिश्र-प्रकार है. इसमें गज़ल, कव्वाली, ठुमरी आदि गाई जाती है.

आरोहावरोह स्वरूप.

सा रे ग् म् प ध् नी सां । सां नी ध् प म् ग् रे सा

.नी

पकड — प ग् रे ग्, सा रे नी सा, ध् प ध् सा, नी ध् प.

सरगम – सिंध भैरवी – त्रिताल

।: प सासा रे ग् । रे सा नी सासा । नी धध् प म् ॥ प प प पप :। ग मम् प प । ध् पप ध् म् ।
२ ० ३ = २ ०

प सा सा रेरे ॥ नी धध् प प । प पप प म् । म् मम् म् ग् । रे सा नी रेरे ॥ नी धध् प प ।
३ = २ ० ३ =

अ×

।: ग् सासा ग् म् । प पप प प । नी नीध नी सां ॥ नी धध् प प :। प प प धप । म् म् म् पम् ।
२ ० ३ = २ ०

ग् ग् ग् मग् ॥ रे रे रे ग्रे । सा सा सा रेसा । नी नी नी सानी । ध् ध् ध् नीध् ॥ प प प पप ।
३ = २ ० ३ =

सिंध भैरवी – तेवरा

हर हर जगे मौजूद है, पर वो नजर आता नहीं,
कोई योग साधनके विना वीसको कभी पाता नहीं.
संगीत विद्या से अगर कुछ लाभ हो मदे नजर,
फिर फिर जगतमें स्वामि के गुणवाद क्यूं गाता नहीं.

प सां	सां नी ध्	प ऽ	ध् प	म् ग् म्	ग् रे	ग् सा	रे ऽ ग्	म् ऽ	प ऽ
ह र	ह र ज	गे ऽ	मो ऽ	जू ऽ द	है ऽ	प र	वो ऽ न	जर ऽ	आ ऽ
३	=	२	३	=	२	३	=	२	३

म् ग् रे	सा ऽ	सा नी सा	रे ऽ रे	रे ऽ	रे ग्	म् प म्	ध ऽ	प ऽ
ता ऽ न	ही ऽ	को ई	यो ऽ ग	सा ऽ	ध न	के ऽ वि	ना ऽ	वसि ऽ

म॒ ग॒ म॒	रे ग॒	म॒ ऽ ‖	म॒ ग॒ रे	सा ऽ	सां ऽ ‖	नी॒ ऽ ध	नी॒ ऽ	सां ऽ ‖
को ऽ क	मी ऽ	पा ऽ ‖	ता ऽ न	हीं ऽ	सं ऽ ‖	गी ऽ त	वि ऽ	द्या ऽ ‖
सां नी॒ ध॒	प ऽ	ग॒ ऽ ‖	रें ऽ नी॒	सां ऽ	सां रें ‖	सां नी॒ ध॒	प ऽ	प सां ‖
से ऽ अ	गर ऽ	कुछ ऽ ‖	ला ऽ भ	हो ऽ	म ऽ ‖	दे ऽ न	जर ऽ	फि र ‖
सां नी॒ ध॒	प प	ध॒ प ‖	म॒ ग॒ म॒	ग॒ रे	ग॒ सा ‖	रे ऽ ग॒	म॒ ऽ	प ऽ ‖
फि र ज	ग त	में ऽ ‖	स्वा ऽ मि	के ऽ	गु ण ‖	वा ऽ द	क्यौं ऽ	गा ऽ ‖

म॒ ग॒ रे	सा ऽ
ता ऽ न	हीं ऽ

तराणा – सिंध भैरवी – धुमाळी व दादरा

सा प प प	प नी॒ ध॒ प ‖	म॒ प प म॒	ग॒ म॒ ग॒ रे ‖	नी॒ सा सा रे	ग॒ म॒ ग॒ रे ‖
त न न न	न न न न ‖	तो ऽ म्तो ऽ	म्त न न न ‖	दे रे ना दे	रे ना त न ‖
=	०	=	०	=	०
सा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ‖	सा प प प	प नी॒ ध॒ प ‖	म॒ प प म॒	ग॒ म॒ ग॒ रे ‖
दीम ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ‖	त न न न	न न न न ‖	तो ऽ म्तो ऽ	म्त न न न ‖
=(सम)	०	=	०	=	०
नी॒ सा सा रे	ग॒ म॒ ग॒ रे ‖	सा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ सा रे ‖		
दे रे ना दे	रे ना त न ‖	दीम ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ		
=	०	=	०		

ग॒ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ रे ग॒ ॥
= ०

म॒ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ग॒ म॒ ॥ प ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ॥ सां ऽ ऽ ऽ । नी॒ ऽ ऽ ऽ ॥
= ० = ० = ०

ध॒ ऽ ऽ ऽ । प ऽ ऽ ऽ ॥ म॒ ऽ ऽ ऽ । ग॒ रे सा ऽ ॥ तनन . . . . दीम
= ० = ०

× (दादरा)

।: ग॒ ग॒ ग॒ । म॒ म॒ म॒ ॥ प प प । प प प ॥ म॒ म॒ म॒ । प प प ॥ नी॒ ध॒ प । म॒ ग॒ रे ॥
= ० = ० = ० = ०

प म॒ ग॒ । रे सा ऽ :॥ सा ग॒ ग॒ । रे म॒ म॒ ॥ ग॒ प प । म॒ ध॒ ध॒ ॥ प नी॒ नी॒ । ध॒ सां सां ॥
= ० = ० = ० = ०

रें सां नी॒ । ध॒ प म॒ ॥ ग॒ ग॒ ऽ रे । सा ऽ ऽ ॥ तननन, इ. इ.
= ० = ०

(३) राग - मालकौंस.

इसका ओडव वर्ग है. इसके आरोहावरोही में **रे, प** वर्ज है. इसका वादी स्वर **म्** है जो हरएक तान की आखेरीमां दिखाई पडता है. इसके अस्ताई का ओर अंतरेका उठाव **म्** या **ग्** से बहुधा होता है, और गायन की पूर्णता भी बहोत करके **म्** उपरही होती है. इसमें **गंधार** स्वर **मध्यम** स्वर के आश्रित है, अर्थात् "**म्ग्म्सा.**" इसमें **नी** स्वर पर कंप देकर जोर देना. इसकी गती तीनों सप्तकोंमें है. इसमें धृपद, ख्याल, तराणें, आदि आसानीसे गाये जाते हैं. यह राग बहोत उत्तम तथा भारी है, अद्यापि इसके आरोहावरोही कुछ कठिन नहीं. यह राग पत्थर को भी पिघला देता है ऐसी दंतकथाएँ प्रसिद्ध है. इसको **मालव कौशिक** भी कहतें हैं. इसको रंगीन करनेके लिए गायक कभी कभी **रे** व **प** का अल्पसा व्यवहार कुशलतासे करतें हैं, जैसे "**सा, ग्, म्; पम्ग्म्, सा; ग्, रेग्, सा, ध्, नीसा, म्.**" मध्य रातको दो बजेतक इस राग को गातें है. इसके चलन उत्तरांगमें विशेष है. इसकी प्रकृति गंभीर है अतएव भक्तिरस में प्राधान्य है. कोई गुणीजन इस राग को **आसावरी** थाट का कहतें है, मगर **भैरवी** रागमें **मालकौंस** राग की कुछ छाया है अतएव इसको **भैरवी** थाट का मानना ऊचित है.

आरोहावरोह स्वरूप.

नी

.नी सा, ग्, म्, ध् नी सां । सां, नी ध्, म्, ग् सा.

सा .नी

पकड :—म्, ग्म् सा, .नी सा, .ध् .नी, सा, म्.

स्वरविस्तार.

सा, .नी सा, म्; म्, म् ग्, म् ग् सा; .नी सा, .ध् .नी सा, म्; ग् म् ध्, म्; म् ध् नी ध्, म्; ग् म् ग् सा । .म् .ध् .नी सा, .ध् .नी सा; .ग् .ग् .म् .ध् .नी सा, म्; म् ग्; ध् म् ग्; नी नी ध् म् ग्; सां नी ध् म् ग्; गं सां, नी ध् म् ध् नी ध् म् ग्; ध् म् ग्; म् ग्, ग् सा। ग् म् ध्, नी सां, सां; गं सां; गं मं गं सां; सां, नी ध्; म् ग्; म् ध् नी सां नी ध् नी ध्, म् ग्; ध्, म् ग्; ग्, म् ग्सा.

सरगम – मालकौंस – आडाचौताल.

नीसा ग़म् । धनी सां ॥ सां नी । नी ध् । ध् म् । म् ग् । सा नी । धध् नीसा । म् ग् ॥
४ ० = २ ० ३ ० ४ ०

नीनी धम् । गम् ध् । मध् नी । नी म् । ग् सा । नीसा गम् । धनी सां ॥ सां नी । नी ध् ।
= २ ० ३ ० ४ ० = २

ध् म् । म् ग् । सा ऽ । सांसां ऽनी । ध् ऽ ॥ नीनी ऽध् । म् ऽ । धध् नीसा । म् म् ।
० ३ ० ४ ० = २ ० ३

गग् मम् । ध् ध् । नी ध् ॥ म् ग् । ध् नी । सां ऽनी । ध् ऽम् । ग् सा । मम् ग् ।
० ४ ० = २ ० ३ ० ४

धध म् ॥ नीनी ध् । सां मंगं । मं सां । धनी सां । धनी सां । नीसा गम् । धनी सां ॥ (सम)
० = २ ० ३ ० ४ ०

मालकौंस – त्रिताल.

बांसुरी क्हानाने बजाई, मैं दधि बेचन जात बिंद्रावन, मोहन आन सुनाई.
श्रवण सुनत एरी ब्याकुल भईलवा, सुध न रही मोरी तन की सखी री,
कृष्ण जिवन सुर श्याम के प्रभू प्यारे, हंस हंस कंठ लगाई.

ऽ ऽ सा सां	सां नी ध् म्	ग् सा ध् नी	सा ऽ म् ऽ	ऽ ग् मध् नीसां	गं सांनी ध् म्
ऽ ऽ बां ऽ	सु री ऽ क्हा	ना ऽ ने ब	जा ऽ ई ऽ	ऽ ऽ बां ऽ ऽ	सु रीऽ ऽ क्हा
२	०	३	= (सम)	२	०

(सा) ऽ ध् नी	सा ऽ म् ऽ	ऽ ऽ ग् ऽ	ग् ऽ म् म्	ध् ऽ नी नी	सां ऽ सां सां
ना ऽ ने ब	जा ऽ ई ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	मैं ऽ द ध	बे ऽ च न	जा ऽ त बिं
३	=	२	०	३	=

सां ऽ सां सां	गं ऽ सां सां	नी ध् म् ध्	नी ऽ ध् नी	ध् म् ध् नी	सां नी ध् म्
द्रा ऽ व न	मो ऽ ह न	आ ऽ न सु	ना ऽ ऽ ऽ	ई ऽ बां ऽ	सु री ऽ क्हा
२	०	३	=	२	०

			×			
ग़ सा ध़ नी़	सा ऽ म़ ऽ	ऽ ऽ ग़ ऽ	म़ म़ ग़ ग़	म़ म़ ध़ ध़	नी़ नी़ सां सां	
ना ऽ ने ब	जा ऽ ई ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	श्र व ण सु	न त ए रि	व्या कु ल भ	
३	=	२	०	३	=	

सां सां सां ऽ	सां सां सां सां	(सां) ऽ नी़ ध़	म़ ध़ नी़ नी़	ध़ नी़ ध़ म़	ध़ ऽ नी़ सां
ई ल वा ऽ	सु ध न र	ही ऽ मो रे	त न कि स	खी ऽ री ऽ	कृ ऽ ष्ण जि
२	०	३	=	२	०

सां सां मं मं	गं ऽ मं मं	गं सां सां सां	सां सां सां सां	गं सां नी़ ध़
व न सु र	श्या ऽ म के	प्र भु प्या रे	हं स हं स	कं ऽ ठ ल
३	=	२	०	३

म़ ध़ नी़ ऽ	ध़ म़ ध़नी़ सां	
गा ऽ ऽ ऽ	ई ऽ बाऽ ऽ	सुरी कहानाने, इ०
=	२	

मालकौंस - त्रिताल (विलंबित)

कृष्ण माधो राम निरंजन गोविंद गोपाल.

इतनी बिनत मोरी सुन लीजो भगवान्, तूहीं करेगो मेरो काम.

ग़ म़ ऽ	सा सा ध़ नी़	सा म़ म़ ऽ	ऽ ऽ ग़ ग़	सा ग़ म़ ऽ	सा सा ध़ नी़
कृ ष्ण ऽ	मा ऽ धो ऽ	रा ऽ म ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ कृ ष्ण ऽ	मा ऽ धो ऽ
०	३	=(सम)	२	०	३

सा म़ म़ ऽ	ध़ म़ ऽ ग़	ग़ साग़ म़ ग़	सा ऽग़ ऽम़ ध़नी़	सां ऽ ध़ म़ध़	नी़ ध़ म़ ऽ
रा ऽ म ऽ	नि रं ऽ ऽ	ऽ जऽ ऽ न	ऽ गो ऽविं ऽद	गो ऽ पा ऽ	ऽ ऽ ल ऽ
=	२	०	३	=	२

			×		
ऽ ग़ म़ ऽ	सा सा ध़ नी़	सा म़ म़ ध़	म़ ऽ म़ म़	ऽ ऽग़ म़ध़ ऽनी़	सां सां ऽ सां
ऽ कृ ष्ण ऽ	मा ऽ धो ऽ	रा ऽ म नि	रं ऽ ज न	ऽ ऽइ तनी ऽबि	न त ऽ मो
०	३	=	२	०	३

		नीनी		
सां ऽ ऽ सांसां	ऽ धनीसांगं ऽसां ऽ	ऽ धध नीध ऽम	ऽ धनी सांमं ऽमं	गं मं गं सां
री ऽ ऽ सुन	ऽ लीऽऽऽ ऽजो ऽ	ऽ भग व ऽ ऽन	ऽ तूऽ हींऽ ऽक	रे ऽ गो ऽ
=	२	०	३	=

	म	.नी .नी	
नी ध म ऽ	ऽग ग म ऽ	सा सा ध नी	(सम)
भ रो का ऽ	ऽम क्रु ष्ण ऽ	मा ऽ धो ऽ	
२	०	३	

मालकौंस - चौताल

तेरी गति अति अगाध, बरनी न जात मोसों, निरंजन निराकार नारायन.
तुहीं सुर्य तुहीं चंद्र, तुहीं पवन तुहीं पानी, तुहीं गगन तुहीं सकल तारायन.
तुहीं ब्रह्मा तुहीं शीव, तुहीं आगम तुहीं नीगम,
तुहीं स्वर्ग तुहीं पाताल, तुहीं धरा धारायन.
तानसेन के प्रभु तारबेकों तुहीं एक, सुमिर सुमिर भज ले मन पारायन.

	म				.नी		म				
सा म	ग म	ऽ म	सा .नीसा	ग सा.नी	.ध .नी	सा म	ग म	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ग	म ग
अ ति	अ गा	ऽ ध	ते ऽ	री ऽ	ग ति	अ ति	अ गा	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ध ऽ
=(सम)	०	२	०	३	४	=	०	२	०	३	४

सा सा	ग मध	नी ध	म ग	ग ग	म सा	नी सा	म सा.नी	.ध .नी	सा सा	ऽ म	ऽ म
ऽ ब	र नीऽ	ऽ न	जा ऽ	त मो	ऽ सों	नि र	ऽ जंऽ	ऽ न	नि रा	ऽ का	ऽ र

			*			×					
म ग	म ग	म म	सा .नीसा	ग सा.नी	.ध .नी	ग म	ध नी	सां सां	नी सां	ऽ सांनी	सां सां
ना ऽ	रा ऽ	य न	ते ऽ	री ऽ	ग ति	तु हीं	ऽ सू	ऽ र्य	तु हीं	ऽ चंऽ	ऽ द्र

नी सां	ऽ सां	सां सां	नी सां	ऽ सां	नी ध	नी ध	ऽ म	म ग	म ध	ऽ नी	सां नी
तु हीं	ऽ प	व न	तु हीं	ऽ पा	ऽ नी	तु हीं	ऽ ग	ग न	तु हीं	ऽ स	क ल

			*			(संचारी)			म		
म ग	म ग	म म	सा .नीसा	ग सा.नी	.ध .नी	सा सा	ऽ म	ऽ म	ग म	ऽ मग	म ग
ता ऽ	रा ऽ	य न	ते ऽ	री ऽ	ग ति	तु हीं	ऽ ब्र	ऽ ह्मा	तु हीं	ऽ शिऽ	व ऽ

सा ग् | म् ध् | नी ध् | म् ग् | ऽ म् | म् सा || नी सा | ऽ सा | ऽ ग् | सानी साग् | सा नी | ध् नी
तु हीं | आ ऽ | ग म | तु हीं | ऽ नि | ग म || तु हीं | ऽ स्व | ऽ गी | तुऽ हींऽ | पा ता | ऽ ल

(आभोग)

सा सा | ऽ म् | म् ऽ | म् ग् | म् ग् | म् सा || ग् म् | ध् नी | सां सां | सां ऽ | ऽ नी | सां ऽ
तु हीं | ऽ ध | रा ऽ | धा ऽ | रा ऽ | य न || ता ऽ | न से | ऽ न | के ऽ | ऽ प्र | मु ऽ

सां ऽ | सांनी सां | ऽ सां | नी सां | ऽ सां | नी ध् || नी नी | ध् म् | ग् ग् | म् ध् | नी ऽ | ध् सांनी
ता ऽ | रऽ बे | ऽ को | तु हीं | ऽ ए | ऽ क || सु मि | र सु | मि र | भ ज | ले ऽ | म नऽ

*
ध् मग् | म् ग् | म् म् | सा नीसा | ग् सानी | ध् नी || (सम)
पा ऽ | रा ऽ | य न | ते ऽ | री ऽ | ग ति ||

मालकौंस - धमार.

आहो धुन धुंकार डफ मृदंग ताल लिये और मुरली मधुर तोरी.

एक गावत एक मृदंग बजावत, भर गुलाल और केसर झोरी.

सा म् || म् ऽ ऽ | म् ग् | सा सा | ऽ ध् नी | ध् म् | ग् म् || ध् ऽ नी | सा सा | सा नी |
आ हो || धु ऽ ऽ | न ऽ | धु का | ऽ र ऽ | ड फ | मृ दं || ग ऽ ता | ऽ ल | लि ये |
० = (सम) ० २ ० ३ ० = ० २

ध् सा ग् | ऽ म् | ध् ऽ || नी सां ऽ | ध् नी | ध् म् | ग् म् ग् | ऽ सा | सा म् ||
ऽ औ र | ऽ मु | र ऽ || ली ऽ ऽ | म ऽ | धु र | तो ऽ री | ऽ ऽ | आ हो ||
० ३ ० = ० २ ० ३ ०

म्×
ग् ऽ म् | ध् ऽ | नी सां | सां सां ऽ | सां सां | सां नी || ग् सां सां | ध् नी | ध् म् |
ए ऽ क | गा ऽ | व ऽ | त ए ऽ | क मृ | दं ऽ || ऽ ग ब | जा ऽ | व त |
= ० २ ० ३ ० = ० २

सा ग् म् | ध् ऽ | सां सां || सां ऽ नी | ध् नी | ध् म् | ग् म् ग् | ऽ सा | सा म् || (सम)
भ र गु | ला ऽ | ऽ ल || औ ऽ र | के ऽ | स र | झो ऽ री | ऽ ऽ | आ हो ||
० ३ ० = ० २ ० ३ ०

तराणा - मालकौंस (द्रुत लय)

ताना नादर दर तोंम ताना दरना ; नानानानाना, ओदेताना ओदेताना,
देरे नोंम देरे नोंम, तादीम तान्न देरे, निताना तोंम तनन धित्रोंम धित्तानाना.
तदिन्ना देरेना दीयन रे, देरे नोंम देरे नोंम, ओदेना देरेना देरे
ताना दीम नाता दीम, तादीम तान्न देरे, निताना तोंम तनन धित्रोंम धीत्तानाना.

ऩी सा सा ध़	ऽ ऩी सा सा ‖	म़ ऽ ग़ ऽ	म़ ऽ सा सा	ऩी सा सा ध़	ऽ ऩी सा सा ‖
ना दर दर तों	ऽ म्ता ना दर ‖	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ता ना	ना दर दर तो	ऽ म्ता ना दर ‖
०	३	= (सम)	२	०	३

म़ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऩी ग़ ऩी सा	ऩी ऽ ध़ ऽ ‖	ध़ ऩी सा ऩी	ध़ ध़ म़ म़
ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ना ना ना ना	ना ऽ ऽ ऽ ‖	ओ दे ता ना	ओ दे ता ना
=	२	०	३	=	२

ध़ ऩी सा ऽ	ध़ ऩी सा ऽ ‖	ऩी सां ऽ सां	ऽ ऩी सां ऩी	ध़ म़ ग़ म़	ऽ सा सा ऩी ‖
दे रे नोंम ऽ	दे रे नोंम ऽ ‖	ता दी ऽ म्ता	ऽ न्न दे रे	नि ता ना तों	ऽ म्त न न ‖
०	३	=	२	०	३

सा म़ ऽ सा	ऽ ग़ सा सा	* ऩी सा सा ध़	ऽ ऩी सा सा ‖	म़ ऽ ग़ ऽ	म़ ऽ ऽ ऽ
धि त्रो ऽ म्धी	ऽ त्ता ना ना	ना दर दर तो	ऽ म्ता ना दर ‖	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
=	२	०	३	=	२

x ‖: सां सां ऽ सां	ऩी ऩी ध़ ऽ ‖	ऩी ऽ ध़ म़	म़ ग़ म़ ऽ :‖	सा सा म़ ऽ	सा सा म़ ऽ ‖
त दी ऽ न्ना	दे रे ना ऽ ‖	दी ऽ य न	रे ऽ ऽ ऽ	दे रे नोंम ऽ	दे रे नोंम ऽ ‖
०	३	=	२	०	३

सा ग़ म़ ध़	ऩी सां सां सां	ध़ ऩी सां ऽ	सां ऩी सां ऽ ‖	गं सां ऽ सां	ऽ ऩी सां ऩी
ओ दे ना दे	रे ना दे रे	ता ना दी ऽ	म्ना ता दी ऽ ‖	म्ता दी ऽ म्ता	ऽ न्न दे रे
=	२	०	३	=	२

" निताना तोंम तनन धित्रोंम धीत्तानाना " उपर लिखे माफिक गाना बजाना.

(४) राग – भूपाल.

इसका ओडव वर्ग है. आरोहावरोही में म्, नी वर्ज है. वादी स्वर ध् है. इसकी गती मध्य और तार सप्तकों में विशेष है. गानेका समय पूर्व दिनके ९ बजेतक है. जैसे रातका भूपाली (भूप) राग है, वैसे यह दिनका भूपाली राग समजना. इसके चलन देशकार राग के सदृश ऊत्तरांगमें विशेष है. यह राग बहोत कम गाया जाता है.

आरोहावरोह स्वरूप

सा, रे् ग्, प ध्, सां । सां, ध् प, ग् रे्, सा.

पकड :– प, ध् प, सां ; ध् प, ध् ग् रे्, सा.

सरगम – भूपाल – त्रिताल.

सा रे् ग् प ॥ ध् ऽ प ध् । ऽ प ग् रे् । ग् रे् सा ऽ । रे् सा ध़् प़ ॥ सां ऽ रे् सा ।
३ =(सम) २ ० ३ =

अ×
ध् प ग् रे् । ग् रे् सा ऽ ।ः प ग् प धप ॥ सां ऽ रें सां । सां रें गं रें । सां रें सां ध् ःi
२ ० ३ = २ ०

ध् गं रें सां ॥ रें सां ध् प । सारे् गप धसां रेंगं । रेंसां धप गरे् सा । सां रे् ग् प ॥ (सम)
३ = २ ० ३

भूपाल – झपताल.

यदुनाथजी जाग अब मोरि काहि मान,
निशि बीति भइ भोर, उठ कान्ह बन भाग.
गोपाल अरु गोपि ले आये माखन, तुमरोहि कारण सुन शाम धन माग.

ध् ध्	प ध् प	म ग् ऽ	रे् ऽ सा	सा रे्	ग् रे् सा	रे् सा	.नी ध् ऽ प़
य दु	ना ऽ थ	जी ऽ	जा ऽ ग	अ ब	मो ऽ रि	क हि	मा ऽ न
=	२	०	३	=	२	०	३

.नी प़ प़	ध़् ऽ ध़्	सा सा	ग् रे् सा	सां ध्	प ध् प	म ध् ग्	रे् ऽ सा
नि शि	बी ऽ ति	भ इ	भो ऽ र	उ ठ	का ऽ न्ह	ब न	भा ऽ ग

×							नी
प ग्	प ध् प	सां सां	सां रें् सा	सां रें्	गं् रें् गं्	रें् सां	ध् ऽ प
गो ऽ	पा ऽ ल़	अ रु	गो ऽ पि	ले ऽ	आ ऽ ये	मा ऽ	ख ऽ न

					नी	म्	
प गं्	रें् ऽ सां	रें् सां	ध् ऽ प	सां सां	ध् ऽ प	ग् ग्	रे् ऽ सा
तु म	रे ऽ हि	का ऽ	र ऽ ण	सु न	शा ऽ म	ध न	भा ऽ ग

---

(५) राग बिलासखानी.

इसका संपूर्ण वर्ग है. यदि इसके सब स्वर **भैरवी** रागके हैं तथापि इसकी स्वर रचना **भैरवी** रागसे बिलकुल अलग है. इसको **तोडी** अंगसे गातें है, अतएव इसको **तोडी** का एक प्रकार मानतें हैं. इसमें **म्, प व नी** इन तीन स्वरों का व्यवहार बहोत खुबीसे किया जाता है. **तोडी** राग सदृश **पंचम** स्वर कम लगता है. इसमें **ध् व ग्** इन दो स्वरों का बहुलत्व है, और उनकी संगती बारबार दिखाई पडती है. **धैवत** को **निषाद** की और **गंधार** को **मध्यम** की मींड यह बहोत चहातें है.

"**ग् म् प**" या "**प म् प**" यह तान इसमें नहीं, वो ध्यानमें रक्खें. "**प ध् नी सां, नी ध् प**" यह सरल तानसे **भैरवी** राग की आशंका है, अतएव इस राग में "**प, ध्, सां, रें् नी ध् प**" इस प्रकार स्वर रचना करतें है. इस राग को **भैरवी** से बचानेमें विशेष कुशलता है. इसमें "**रे् नी**" इन स्वरों की संगती बारबार आती है.

"**ध्, नी सा, रे् ग्; (ग्)रे् ग्, रे्, सा; रे् ग्, म् ग्, रे्, सा**" यह तान इसके स्वरूप को प्रकट करनेवाली है जो अवश्य ध्यानमें रक्खें. इसके अंतरे का उठाव "**प प, ध् ध्, सां, नी सां**" एसा होता है. यह अंतरे का उठावसे भी यह राग **भैरवी** राग से जूदा पयछाना जाता है. इसका वादी स्वर ध् है. इसकी गती तीनों सप्तकोंमें है. गानेका समय पूर्व दिनके १० बजेतक है. इसमें यथार्थ घूमना फिरना कठिन है, अतएव इसमें ख्याल का ज्यादा प्रचार नहीं. धृपद और धमार इसमें बहोत उत्तम रीतिसे गायें जातें है. यद्यपि यह राग बहोत मधुर है तथापि इसका यथार्थ शुद्ध गाना बजाना कुछ कठिन है. यह बड़े

विद्वानों के गाने बजानेका राग है. कोई गुणीजन इसमें **निषाद** तीव्र, **मध्यम** दोनों, और शेष सब स्वर कोमल मानतें हैं.

मीया तानसेनजी के पुत्र **फकीर मीयां बिलासखांजी** ने इस **तोडी** की कल्पना कीहै, इसीसे यह **बिलासखानी तोडी** कहाती है.

आरोहावरोह स्वरूप

सा, रे॒ .नी, सा, रे॒ ग॒; ग॒, रे॒, सा; प ध॒, सां, नी॒सां ।

सां, रें॒ नी॒ ध॒, म॒ ग॒; रे॒ ग॒, ध॒ प ग॒; रे॒ ग॒, म॒ ग॒, रे॒, सा.

पकड:– सा रे॒ ग॒; रे॒ ग॒, रे॒, सा; .ध॒, .नी॒ .ध॒, ग॒; म॒ ग॒, रे॒, सा.

स्वरविस्तार.

सा, रे॒ .नी॒, सा, रे॒ ग॒; ग॒, रे॒, सा; रे॒ .नी॒, .ध॒ ग॒ रे॒; ग॒ म॒ ग॒ रे॒; रे॒, सा; .ध॒, .नी॒ सा;

रे॒ग॒म॒ग॒रे॒; सा। सा, रे॒ ग॒; रे॒ ग॒, म॒ ग॒; ध॒ ध॒, प, ध॒ म॒ ग॒; नी॒ ध॒, सां, नी॒ ध॒ प, म॒ ग॒;

रे॒ ग॒, रे॒, सा; .नी॒ सा, रे॒ ग॒। प प, ध॒ ध॒, सां, नी॒ सां; रें॒ नी॒ सां रें॒ गं॒; मं॒ गं॒ रें॒ सां;

रें॒ नी॒ ध॒ प; प ध॒, म॒ ग॒; रे॒ ग॒, म॒ ग॒, रे॒ सा; सा, .नी॒, सा रे॒ ग॒.

सरगम – बिलासखानी – त्रिताल.

रे॒ .नी॒ सा रे॒ ॥ ग॒ ऽ रे॒ ग॒ । प ध॒ म॒ ग॒ । रे॒ ग॒ रे॒ सा । सा ऽ रे॒ .नी॒ ॥ .ध॒ .ध॒ .प ऽ ।
३ = (सम) २ ० ३ =

ध॒ ग॒ रे॒ ग॒ । म॒ ग॒ रे॒ सा । प ध॒ सां ऽ ॥ सां ऽ रें॒ सां । नी॒ सां रें॒ गं॒ । मं॒ गं॒ रें॒ सां ।
२ ० ३ = २ ०

सां ऽ रें॒ नी॒ ॥ ध॒ ध॒ म॒ ग॒ । रे॒ ग॒ ऽ म॒ । ग॒ रे॒ सा ऽ । रे॒ .नी॒ सा रे॒ ॥ (सम)
३ = २ ० ३

बिलासखानी - झपताल.

चिंता न कर रे, अचिंत रहो मना, देवेगा तुज को पयदा करनहार.
ईत तूंहि ऊत तूंहि, जल तूंहि थल तूंहि, नैयां हमारी पार करनहार.

सा   ग
रे॒ नी॒ | सा ऽ रे॒ | ग॒ ग॒ | रे॒ ऽ ग॒ || प ध॒ | म॒ ग॒ रे॒ | ग॒ ऽम॒ | ग॒ रे॒ सा
चिं ऽ | ता ऽ न | क र | रे ऽ अ || चिं ऽ | त ऽ र | हो ऽ | म ना ऽ
=   २   ०   ३   =   २   ०   ३

रे॒ नी॒ | ध॒ ऽ ग॒ | रे॒ ग॒ | म॒ ग॒ ऽ || ध॒ म॒ | ग॒ रे॒ ग॒ | म॒ ग॒ | रे॒ ऽ सा
दे ऽ | वे ऽ गा | तु ज | को ऽ ऽ || प य | दा ऽ क | र न | हा ऽ र

×   सां   सां
प ध॒ | सां ऽ सां | नी॒ सां | सां ऽ सां || नी॒ सां | रें॒ गं॒ रें॒ | सां सां | रें॒ नी॒ ध॒
इ त | तूं ऽ हि | ऊ त | तूं ऽ हि || ज ल | तूं ऽ हि | थ ल | तूं ऽ हि

ध॒ ग॒ | रें॒ गं॒ रें॒ | सां रें॒ | नी॒ ध॒ ऽ || नी॒ ध॒ | म॒ ग॒ रे॒ | ग॒ म॒ | ग॒ रे॒ सा
नै ऽ | यां ऽ ह | मा ऽ | री ऽ ऽ || पा ऽ | र ऽ क | र न | हा ऽ र

बिलासखानी तोडी – एकताल.

नीके घूंगरिया ठुमकत चाल चलत है.
सुनत साथ जिया बेकल होत सदारंग लेहो बलैया.

                                                             नी   नी
सा रे॒नी॒ | सा रे॒ || ग॒ ऽ | ऽ ऽ | ग॒ रे॒ | ग॒ रे॒ | सा ऽ | सा रे॒नी॒ || सा रे॒ | ध॒ ऽ | ध॒ ग॒ | ग॒ ऽ |
नी ऽ | के ऽ || घूं ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ | ग रि | या ऽ | ठु ऽ || म क | त ऽ | ऽ ऽ | चा ऽ |
३   ४   =(सम) ०   २   ०   ३   ४   =   ०   २   ०

अ ×
ग॒रे॒ ऽ | ग॒ ऽ || म॒ ऽ | ग॒ रे॒ | ग॒ रे॒ | सा रे॒नी॒ | प ऽ | ध॒ ध॒ || सां ऽ | ऽ सां | सां सां | रें॒ ऽ |
लऽ ऽ | च ऽ || ल ऽ | ऽ ऽ | ऽ त | है ऽ | सु ऽ | न त || सा ऽ | ऽ थ | जि या | बे ऽ |

नी॒ सांरें॒ | गं॒ ऽ || रें॒ नी॒ | ध॒ म॒ | ग॒ रे॒ | ग॒ रे॒ | सा रे॒नी॒ | सारे॒ ग॒ग॒ || म॒ म॒ | ग॒ रे॒ | ग॒ रे॒ | सा रे॒नी॒ |
क लऽ | हो ऽ || त ऽ | स दा | ऽ ऽ | रं ऽ | ग ऽ | लेऽ होऽ || ब लै | ऽ ऽ | ऽ ऽ | या ऽ |

बिलासखानी – चौताल

मेरे तो अल्ला नाम अधार, जिने रचो संसार, काम क्रोध लोभ तजो जंजाल.

जिने रचो अरस कुरस जिमीं आसमान निरंजन निरंकार.

सोंचो क्यौं न होवै परवरदिगार. ॥ मेरे ॥

काहेको हूजे गुनहगार, काहेको लीजे एतो भार,

सोइ सवाद क्यौं न तैं लियो, जाको नाम भज ओंकार.

प्रभू बिलास कहे पाक सफा रहीये, तिहारो जनम जितब नाहिं बारबार.

म् म् म्											
ग् ग्	ग् रे्	रे् सा	ऽ ऽ	सा सा	ऽ ग्	ग् रे्	रे् सा	सा ग्	रे् रे्	सा .नी्	सा .ध्
अ ल्ला	ऽ ना	ऽ म	ऽ ऽ	अ धा	ऽ र	जि ने	ऽ र	चो ऽ	सं ऽ	ऽ सा	ऽ र
=(सम)	०	२	०	३	४	=	०	२	०	३	४

.नी .नी .नी			म् म्	म् म्				.नी	*	.नी .नी	
ध् ध्	ध् सा	ऽ रे्	ग् ग्	ग् ग्	रे् सा	ग् रे्	ऽ सा	ऽ ध्	नी् सा	ध् ध्	सा रे्
ऽ का	म क्रो	ऽ ध	लो ऽ	भ त	जो ऽ	ऽ जं	ऽ जा	ऽ ल	मे ऽ	ऽ रे	तो ऽ

×											
प ध्	ध् सां	सां ऽ	सां सां	सां सां	रें् सां	रें् सां	ऽ नी्	सां गं्	गं् रें्	रें् सां	ऽ रें्
जि ने	ऽ र	चो ऽ	अ र	स कु	र स	जि मीं	ऽ आ	ऽ स	ऽ मा	ऽ ऽ	ऽ न

नी नी नी											
ध् ध्	ध् प	प ध्	ग् ग्	ग् रे्	रे् सा	ऽ सा	सा ग्	ग् प	ध् ध्	ध् ऽ	प प
नि रं	ऽ ज	ऽ न	नि रं	ऽ का	ऽ र	ऽ सों	चो क्यौं	ऽ न	हो ऽ	वैं ऽ	प र

(संचारी)

म् म्			सा *	.नी .नी							
ग् ग्	रे् रे्	ऽ सा	नी् सा	ध् ध्	सा रे्	सा सा	सा रे्	ऽ म्	ग् ग्	प ध्	ध् ध्
व र	दि गा	ऽ र	मे ऽ	ऽ रे	तो ऽ	का हे	को हू	ऽ जे	गु न	ह गा	ऽ र

						म् म् म्					
ऽ ध्	ध् प	ध् ऽ	ध् ग्	ग् प	ऽ ग्	ग् ग्	ग् प	ध् ध्	ग् ग्	ग् ग्	रे् सा
ऽ का	हे को	ली ऽ	जे ए	तो भा	ऽ र	सो इ	स वा	ऽ द	क्यौं ऽ	न तैं	लि यो

(आभोग)

							म् म्	म् म्	म्म्	म् म्	म् म्
रे् सा	ऽ सा	ऽ ग्	रे् रे्	रे् सा	ऽ ध्	प ग्	ग् ग्	ग् ग्	ग् ग्	ग् ग्	ग् ग्
जा को	ऽ ना	ऽ म	भ ज	ओं का	ऽ र	प्र भु	वि ला	ऽ स	क हे	ऽ पा	ऽ क

ग् रे् | रे् रे् | रे् सा | रे् ऽ | सा सा | ऽ सा || ऽ सा | सा ग् | ग् प | प प | ऽ ध् | ऽ प

स फा | ऽ र | ही ऽ | ये ऽ | ति हा | ऽ रो || ऽ ज | न म | ऽ जि | त ब | ऽ ना | ऽ हिं

सा*

ध् ग् | ग् रे् | ऽ सा | नी् सा | ध् ध् | सा रे् ||

बा ऽ | र बा | ऽ र | मे ऽ | ऽ रे | तो ऽ || (सम)

बिलासखानी - धमार

अंगिया दरकी जात फाग खेलन गै हराखूंचीर शाम कैसे रहेगी लाज.

लिपट लिपट झकझोर झोर करे मोर मोर, चुरियां करकाई हमरी आज.

सा रे् | ग् ऽ || म् ग् ऽ | रे् ऽ | ग् रे् | सा ऽ ऽ | रे् नी् | सा ऽ || रे् ग् ऽ | ग् रे् |

अं गि | या ऽ || द र ऽ | की ऽ | जा ऽ | त ऽ ऽ | फा ऽ | ग ऽ || खे ल ऽ | न ऽ |

३ ० =(सम) ० २ ० ३ ० = ०

नी

सा सा | सा नी् ध् | प ऽ | ध् ऽ || म् ग् रे् | ग् ऽम् | ग् रे् | सा रे् नी् | ध् सा | रे् ऽ ||

गै ह | रा ऽ ऽ | खूं ऽ | ची ऽ || र ऽ शा | ऽ ऽ | म ऽ | कै ऽ ऽ | से ऽ | र ऽ ||

२ ० ३ ० = ० २ ० ३ ०

* ×

ग् ऽ रे् | ग् ऽम् | ग् रे् | सा रे् नी् | सा रे् | ग् ऽ || प प ध् | ध् सां | सां सां |

हे ऽ गी | ऽ ऽ | ला ऽ | ज ऽ ऽ | अं गि | या ऽ || लि प ट | लि प | ट झ |

= ० २ ० ३ ० = ० २

नी नी म्

नी् रें् सां | गं् रें् | सां ऽ || सां ऽ सां | सां सां | रें् नी् | ध् ऽ ध् | ग् रे् | ऽ सा ||

क ऽ ऽ | झो ऽ | र ऽ || झो ऽ र | क रे | ऽ ऽ | मो ऽ र | मो ऽ | ऽ र ||

० ३ ० = ० २ ० ३ ०

नी नी

प प ध् | म् ग् | रे् ग् | ऽम् ग् रे् | सा रे्नी् | ध् ध् || ग् ऽ रे् | ग् ऽम् | ग् रे् |

चु री ऽ | यां ऽ | क र | ऽ का ऽ | ई ऽ | ह म || ऽ ऽ री | ऽ ऽ | आ ऽ |

= ० २ ० ३ ० = ० २

*

सा रे् नी् | सा रे् | ग् ऽ ||

ज ऽ ऽ | अं गि | या ऽ || (सम)

० ३ ०

(६) राग लाचारी तोडी.

इसका ओडव-संपूर्ण वर्ग है. आरोहमें **ऋषभ** तथा **धैवत** वर्ज है. आरोहमें **तीव्र निषाद** तथा अवरोहमें **कोमल निषाद** का व्यवहार होता है. इसका वादी स्वर **म्** है. आरोहमें **ऋषभ** तथा **धैवत** वर्ज होनेसे **भीमपलासी** राग की छाया दिखाई पडती है. इसमें **गंधार** स्वर पर कंप दिया जाता है. इसकी गती मध्य और तार सप्तकोंमें विशेष है. इसके अंतरे का उठाव **"प, ग् म्, प, नी सां"** ऐसा होता है. गानेका समय पूर्व दिनके **१०** बजेतक है. कोई गुणीजन के मत से इसके स्वर नीचे मुजब है :—

सा, रे, ग् ग, म्, प, ध् ध, नी् नी.

आरोहावरोह स्वरूप.

सा, ग् म्, प, नी सां । सां नी् ध् प, म् ग्, रे् सा.

सां सां
पकड :– सा, रे् ग् रे् सा ; ग् म्, प, नी सां; नी नी सां मं्, गं् रें् सां नी् ध्, प ;

म्
ग् म्, प ग्, रे् सा.

लाचारी तोडी – चौताल

तेरे दिरमन देख मिरग सेवत उजार बन, नासिका को देख सूवा बनबास लियो री.
दसन को देखके दारि मदरार खाय, करका को देखके कमल हू लजो री.
चाल हू चलत गज गेंद पग थकत भये,
कटका को देखके सिंघ हू तजे प्रान री.

							म्	म् म्		म्	म्	
नी् ध्	प प	प सां	नी् ध्	प प	ऽ प	‖	ग् ऽ	ग् ग्	म् प	ग् ऽ	ग् रे्	सा सा
ते ऽ	रे दि	गं न	दे ऽ	ख मि	ऽ गी	‖	से ऽ	व त	ऽ उ	जा ऽ	र ब	ऽ न
=(सम)	०	२	०	३	४		=	०	२	०	३	४

	म्			प								
सा ऽ	सा ग्	ऽ म्	प ऽ	प नी	सां सां	‖	सां सां	ऽ नी्	ध् प	नी् नी्	ध् ऽ	प ग्म्
ना ऽ	सि का	ऽ को	दे ऽ	खं सू	ऽ वा	‖	ब न	ऽ बा	ऽ स	लि यो	ऽ ऽ	री ऽ

×म्	म्							सां सां				
प ग्	ऽ ग्	ऽ म्	प ऽ	नी नी	सां ऽ	‖	नी ऽ	नी नी	सां मं्	गं् रें्	सां नी्	ध् प
द स	ऽ न	ऽ को	दे ऽ	ख के	ऽ ऽ	‖	दा ऽ	रि म	ऽ द	रा ऽ	र खा	ऽ य

म् सां सां
प म् | प ग् | ऽ म् | प नी | नी नी | सां ऽ || गं रें | सां नीं | ध् ऽ | प नीं | ध् ऽ | प ग्म्
क र | ऽ का | ऽ को | ऽ दे | ख के | ऽ ऽ || क म | ल हू | ऽ ऽ | ल जो | ऽ ऽ | री ऽ

(संचारी)

नीं प प
सा म् | म् म् | ऽ म् | प नीं | ध् ध् | ऽ प || म् प | नी नी | सां सां | सां नीं | सां सां | नीं ध्
चा. ऽ | ल हू | ऽ च | ल त | ऽ ग | ऽ ज || गें ऽ | द प | ऽ ग | थ क | त भ | ये ऽ

प
प प | ऽ म् | प प | नी सां | सां ऽ | सां ऽ || सां ऽ | सां नीं | ध् सां | सां नीं | ध् ध् | प ग्म्
क ट | ऽ का | ऽ को | दे ऽ | ख ऽ | के ऽ || सिं ऽ | घ हू | ऽ त | जे प्रा | ऽ न | री ऽ

लाचारी तोडी – धमार

कान्ह सौतन संग माधो खेले होरी आहो विरखभान.
मटुकी फोर मोरी ददन बिगारी, म.गत सतहीं दान.

म् म्
म् ग् ऽ | रे् सा | सा रे् | ग् रे् सा | ग् ऽ | म् ऽ || प ऽ ऽ | ग् ऽ | रे् सा |
का ऽ ऽ | न्ह ऽ | सौं ऽ | त ऽ न | सं ऽ | ग ऽ || मा ऽ ऽ | धो ऽ | खे ऽ |
= (सम) ० २ ० ३ ० = ० २

सा
ग् ऽ रे् | ग् ऽ | रे् सा || ग् ऽ रे् | सा ऽ | सा ऽ | नी् ध् ऽ | ध् ऽ | प् ऽ ||
ले ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ || हो ऽ ऽ | री ऽ | आ ऽ | हो ऽ ऽ | वि ऽ | ख ऽ ||
० ३ ० = ० २ ० ३ ०

* म् × प
ग् रे् ग् | रे् सा | सा रे् | ग् रे् सा | ग् ऽ | म् ऽ || प नीं ध् | प ऽ | नी सां |
भा ऽ ऽ | न ऽ | सौं ऽ | त ऽ न | सं ऽ | ग ऽ || म टु ऽ | की ऽ | फो ऽ |
= ० २ ० ३ ० = ० २

सां रें ऽ | सां ऽ | नी सां || सां सां ऽ | सां ऽ | गं रें | सां नी सां | नीं ध् | प ऽ ||
र मो ऽ | री ऽ | ऽ ऽ || द द ऽ | न ऽ | बि ऽ | गा ऽ ऽ | री ऽ | ऽ ऽ ||
० ३ ० = ० २ ० ३ ०

म् म्
ग् ऽ ग् | म् ऽ | प प | सां ऽ ऽ | नीं ध् | प ऽ ||
मा ऽ ग | त ऽ | स त | हीं ऽ ऽ | दा ऽ | न ऽ ||
= ० २ ० ३ ०

भैरवी थाट के राग समाप्त.

तोडी थाट

इस थाट में **५** रागों का समावेश किया है. उनके नाम :–

(१) **तोडी** (२) **मीयां की तोडी** (३) **गूर्जरी तोडी** (४) **लछमी तोडी** (५) **मुलतानी.**

१-४ राग गानेका समय दिनका दूसरा प्रहर है. **मुलतानी** राग गानेका समय दिनका तीसरा प्रहर है.

---

(१) राग तोडी.

इसका संपूर्ण वर्ग है. इसमें **रे॒, ग॒** व **ध॒** इन तीन स्वरोंका बहुलत्व है, और **पंचम** स्वरका कम प्रमाणमें व्यवहार होता है. "**नि॒ सा रे॒ ग॒; रे॒ ग॒, रे॒ सा**" यह तान इसके स्वरूप को प्रकट करनेवाली है. इसकी **गांधार ऋषभ** आश्रित है, अर्थात **रेग॒ रेग॒.** इसके अंतरेका उठाव "**म ग॒, म ध॒, नी, सां**" ऐसा बहुधा होता है. इसका वादी स्वर **ध॒** है. कोइ **ग॒** को वादी मानतें है. इसकी गती तीनों सप्तकोंमें है. गानेका समय दिनका दूसरा प्रहर है. इसमें भक्ति रस है. धृपद, ख्याल, तराने आदि इसमें आसानीसे गायें जातें है. यह राग भारी होकर भी बहोत सीधा है. इसमें घूमना फिरना कुछ कठिन नहीं. संगीतविद्वान इसको घंटन गाबजा सकता है. यह **गंधार** पर **मध्यम** तथा **पंचम** की मींडको और **धैवत** पर **निषाद** तथा **षडज** की मींड को बहोत चहातें है. यह राग बहोत प्रसिद्ध है.

आरोहावरोह स्वरूप.

सा, रे॒ ग॒, म प, ध॒, नी सां । सां नी ध॒ प, म ग॒, रे॒, सा

पकड :— ध॒ नि॒ सा, रे॒ ग॒, रे॒, सा ; म, ग॒, रे॒ ग॒, रे॒ सा.

स्वरविस्तार.

ग्, रे्, सा; ऩी सा रे् ग्; म ग्; ध् म ग्; रे् ग्, रे्, सा; ऩी रे्, सा । सा, ऩी; रे् ऩी, ध़् ऩी ध़् प़; म़ ध़् ऩी ध़् ऩी, रे् सा; ग् रे्, सा; म ग्, रे्, सा; ध् म ग् रे्, सा; ऩी रे्, सा । ऩी ऩी सा रे् ग्; रे् ग्; म ग्; ध् म ग्; म ध् नी ध् म ग्; सां, नी ध्,
×
म ध् नी ध् म ग्; रे् ग्, रे्, सा; ऩी रे्, सा । म ग्, म ध्, नी, सां; सां, रें् गं् रें् सां, नी, सां; रें्, नीध्, नीध्, प; गं्, मंगं्, रें्, सांनी, सां; रें्, नीध्, मध्नीसां; रें्, नीध्, नीध्, प; मपध्नीध्, प; मपध्, मग्; ध्, मग्; रेग्, रे्, सा, ऩीसाग्मध्नीसां नीध्पमग्रे्सा अथवा सारे्ग्मपध्नीसां नीध्पमग्रे्सा; ऩीरे्, सा.

सरगम – तोडी – चौताल.

ग् ऽ । म प ॥ ध् नी । ध् नी । ध् ध् । प ऽ । म प । ऽ ध् ॥ म ऽ । ग् ऽ । रे् ऽ । ग् म ।
३ ४ =(सम) ० २ ० ३ ४ = ० २ ०
प ध् । ऽ प ॥ ऽ म । ऽ ग् । ऽ रे् । ऽ म । ग् रे् । सा ऽ ॥ ध़् ऽ । ध़् ऩी । सा रे् । ग् म ।
रे् ग् । म प ॥ ध् नी । सां नी । ध् प । म ग् । रे् रे् । सा ऽ ॥ रें् ऽ । नी नी । ध् ध् । प प ।
* ×
म म । ग् ग् ॥ रे् सा । ऽ म । ग् रे् । सा ऽ । ग् ऽ । म प ॥ प प । म ध् । ऽ नी । सां सां ।
नी नी । सां सां ॥ ध् ऽ । नी सां । गं् रें् । ऽ सां । ऽ मं । गं् रें् ॥ सां ऽ । सां नी । ध् प । म प ।
*
ध् नी । ध् प ॥ म ग् । रे् ऽ । म ग् । रे् सा । ग् ऽ । म प ॥

प मनी	नी ध्	प प	म प	ऽ ध्	म ग्	रे् ग्	म ध्	नी ऽ	सां ऽ	नी ध्	म ग्
सु ऽ	च्छ म	सु र	**म न**	ऽ **रं**	ऽ **ग**	य ह	तो ऽ	डी ऽ	के ऽ	बु ला	ऽ य
ध् म	ग् रे्	ग् म	ध् म	ग् रे्	सा सा	ऩी रे्	ग् म	म प	ऽ प	ध् ध्प	म प
गा ऽ	ऽ ऽ	ऽ य	उ ल	ट प	ल ट	क र	कें ऽ	ब ता	ऽ य	गु रुऽ	न की
प ऽ	म ध्	नी ध्	ध् प	ऽम ध्प	ग् म						
से ऽ	वा ऽ	सों ऽ	त ब	ऽ पाऽ	ऽ य						

नी ध् । म ग् । रे् सा, । सा रे् । ग् म, । रे् ग्
म प, । ग् म । प ध्, । म प । ध् नी, । प ध् ॥ नी सां, । सां नी । ध् प । म ग् । रे् रे् । सा ऽ
*
रें् ऽ । नी नी । ध् ध् । प प । म म । ग् ग् । ॥ रे् सा । ऽ म । ग् रे् । सा ऽ । ग् ऽ । म प । (सम)

तोडी – खट ताल (छक्का, मात्रा १८)

लावरी सखी मोरे पिया को, कल न परे असुवा झरे हियरा हरे,
घरि घरि पल पल छिन छिन रटत वाको. ॥ लाव री ॥
सुनरी श्यानी रानी, बैठी प्रथम मान ठानि,
अब काहे पछितानी, जान बुझ जरावत जिया को.

|: सा ग़ ग़ ग़ | ऽ रे़ | रे़ ऽ ऽ सा | ऽ सा | रे़ ऽ | सा नी़ ध़ नी़ :|| रे़ रे़ नी सा | ग़ ग़ |
ला ऽ व री | ऽ स | खी ऽ ऽ मो | ऽ रे | पि ऽ | ऽ या ऽ को || क ल न प | ऽ रे |
=(सम) २ ३ ४ ५ ६ = २

म रे़ ग़ म | प ध़ | नी ध़ | प म प ध़ || नी ध़ प प | म म | ग़ ग़ रे़ रे़ | सा सा |
अ सु वा झ | ऽ रे | हि य | रा ऽ ह रे || घ रि घ रि | प ल | प ल छि न | छि न |
३ ४ ५ ६ = २ ३ ४

रे़ रे़ | सा नी़ ध़ नी़ || सा ग़ म ध़ | नी सां | रे़ं ऽ नी सां | ऽ सां | नी ध़ | नी सां ग़ं ग़ं ||
र ट | त वा ऽ को || सु न ऽ री | ऽ श्या | ऽ ऽ नि रा | ऽ नि | बै ऽ | ठी प्र थ म ||
५ ६ = २ ३ ४ ५ ६

रे़ं ऽ सांनी सांनी | ध़ नी | सां ग़ं ऽ ग़ं | रे़ं सां | नी ध़ | म ध़ नी सां || रे़ ऽ रे़ सा |
मा ऽ नऽ ठाऽ | ऽ नी | अ ब ऽ का | ऽ हे | प छि | ऽ ता ऽ नी || जा ऽ न बु |
= २ ३ ४ ५ ६ =

ऽ नी़ | ध़ प़ म़ ध़ | नी सा | रे़ ऽ | सा नी़ ध़ नी़ || (सम)
ऽ झ | ज रा ऽ व | ऽ त | जी ऽ | ऽ या ऽ को ||
२ ३ ४ ५ ६

तोडी – चौताल

मेरे तो अल्ला नाम को अधार जिने रचो संसार, काम क्रोध लोभ महा जंजाल.
जिने रचो अरस कुरस, जमीं, आसमान, निरंजन निराकार,
साची सेवा क्यों ना पाक परवरदिगार.

नी़ नी़
ध़् ध़् | ग् मरे् | ग् रे् | सा ऽ | सा रे् | ऽ सा || रे् सा | रे्नी सा | सा रे् | ग् रे् | नी़ ध़् | नी़ सा
अ ल्ला | ऽ नाऽ | ऽ म | को ऽ | अ धा | ऽ र || जि ने | ऽ र | चो ऽ | ऽ सं | ऽ ऽ | सा ऽ
=(सम) ० २ ० ३ ४ = ० २ ० ३ ४

प़ नी़ सा *
नी़ ध़्प़ | म़ ऽ | ध़् सा | ऽ सा | ध़् नी़ | सा रे् || ग् ऽ | मरे् ऽ | ग् रे् | ऽ सा | ध़् नी़ | सा रे्
र ऽ | का ऽ | म क्रो | ऽ ध | लो ऽ | भ म || हा ऽ | जंऽ ऽ | ऽ जा | ऽ ल | मे रे | तो ऽ

×
ध् प | ऽ प | ध् ऽ | नी सां | सां सां | सां सां || रें् सां | रें्नी सां | रें् गं् | रें् सां | नी ध् | ध् प
जि ने | ऽ र | चो ऽ | अ र | स कु | र स || ज मीं | ऽ आ | ऽ स | मा ऽ | ऽ ऽ | न ऽ

म ध् नी
ध् ऽ | प ऽ | ध् ध् | म ग् | म ग् | रे् सा || सा ऽ | रे् सा | ग् ऽ | म ऽ | ध् ऽ | नी रें्
नि ऽ | रं ऽ | ज न | नि रं | ऽ का | ऽ र || सा ऽ | ची ऽ | से ऽ | वा ऽ | क्यों ऽ | ना ऽ

*
ध् नी | ध् ऽ | प ऽ | प प | म प | प ध् || म ग् | रे् ग् | रे् सा | रे् ग् | ध़् नी | सा रे्
ऽ ऽ | पा ऽ | क ऽ | प र | व ऽ | र दि || गा ऽ | ऽ ऽ | र ऽ | ऽ ऽ | मे रे | तो ऽ

तोडी - धमार.

संभार चलत धरत पग डिगमगात छिपावत मद के बचन.
कहूं बसन कहूं पेंच सुधारत तापर करत अनेक जतन.

ध् सां प ग्
रे् ग् | म ध् || सां ऽ नी | ध् ऽ | प ऽ | म प ध् | म ग् | ध् प || म रे् ग् | रे् ऽ | सा ऽ |
सं भा | ऽ र || च ऽ ल | ऽ ऽ | त ऽ | ध र त | प ग | डि ग || म गा ऽ | ऽ ऽ | त ऽ |
३ ० =(सम) ० २ ० ३ ० = ० २

* ध् सां
सा नी़ सा | सा नी़ | ध़् ऽ || म़ ध़् नी़ | सा रे् | ग् रे् | ग् रे् सा | रे् ग् | म ध् ||
छि पा ऽ | व त | ऽ ऽ || म द के | ऽ ब | च ऽ | ऽ ऽ न | सं भा | ऽ र ||
० ३ ० = ० २ ० ३ ०

× नी ... नी

म ध् ऽ | सां सां | सां ऽ | सां रें सां | ध् नी | सां रें || गं रें सां | नी ध् | ध् गं |

क हूं ऽ | ब स | न ऽ | क हूं ऽ | पें ऽ | च सु || धा ऽ र | त ऽ | ता ऽ |

= ० २ ० ३ ० = ० २

* ध् सां

रें गं रें | सां नी | ध् प || म ऽ प | ध म | ग् रे | ग् रे सा | रे ग् | म ध् || (सम)

प र क | र त | ऽ अ || ने ऽ ऽ | क ऽ | ज ऽ | त ऽ न | सं भा | ऽ र ||

० ३ ० = ० २ ० ३ ०

तराणा – तोडी – एकताल

नाद्रेद्रे तों तनन तन देरेना तननन देरेना,

यललि यललि यलि यललल, तों तनन तों तनन.

नाद्रेद्रे तुंद्रेद्रे द्रेद्रे द्रेद्रे द्रेद्रे, तदीम दीम तनननन,

तदीम दीम तननन नननन; धा किडतक धुम किडतक

धित्ता किडनग तिरकिड तक धिलांग धुम किडतक किटता गदिगन धा.

सा ध् | प ध् | ऽ नी | ध् प | म ग् | म म || ध् ऽ | प प | प प | ध् प | म ग् | ऽ ऽ

ना द्रे | द्रे तों | ऽ त | न न | त न | दे रे || ना ऽ | त न | न न | दे रे | ना ऽ | ऽ ऽ

= ० २ ० ३ ४ =(सम) ० २ ० ३ ४

ग् म | ध् नी | ध् प | रे ग् | रे रे | सा सा || सा सां | ऽ सां | सां नी | ध् ऽ | ऽ नी | ध् प

य ल | लि य | ल लि | य लि | य ल | ल ल || तों ऽ | ऽ त | न न | तों ऽ | ऽ त | न न

×

ग् ग् | ग् म | ध् ध् | सां सां | नी सां | सां सां, || ध् ध् | ऽ सां | ऽ गं | रें सां | नी ध्, | नी ध्

ना द्रे | द्रे तुं | द्रे द्रे | द्रे द्रे | द्रे द्रे | द्रे द्रे || त दीं | ऽ म्दीं | ऽ म्त | न न | न न | त दीं

ऽ प | ऽ नी | ध् प | म ग् | रे रे | सा सा || नी सासा | रेंरें रेंरें | गंगं गंगं | म म | ध्ध् ध्ध्

ऽ म्दीं | ऽ म | त न | न न | न न | न - न || धा किड | तक धुम | किड तक | धि त्ता | किड नग

= ० २ ० ३ ४ = ० २ ० ३

सांसां सांसां || सांसां सांगं | ऽरें रें | रेंरें सांसां | ध्ध् नी | ध्ध् ध्ध् | प ऽ ||

तिर किड || तक धिलां | ऽग धुम | किड तक | किट ता | गदि गन | धा ऽ ||

४ = ० २ ० ३ ४

(२) राग मीया की तोडी

इसकी सब बात **तोडी** के तुल्य है, मगर इसमें **दरबारी** राग की थोडी छाया है, जैसे "**ऩी सा रे़ रे़, ध़् ऩी सा रे़ ग़, मरे़ ग़, रे़, सा रे़ सा.**" आगे एक गायन लिखें हैं, जिससे इसका पूरा खूलासा होगा. यह **मीया तानसेनजी** की बनाई हुई **तोडी** है, अतएव इसको **मीया की तोडी** कहतें है. इसके स्वरूप मंद्र और मध्य स्थानमें अधिक खुलता है. यह राग बहुधा बिलंपतसे गाया जाता है.

मीया की तोडी – त्रिताल (विलंबित)

सब निस बाराजोरी करत रहत नित, बोली ठोली प्यारे अपने गांव.
मेरे तो जिया में ऐसी आवत सोहि करत, **सदारंग** तबाहि हमारो नांव.

ऩी ‍ ‍ ‍ ‍ ऩी ‍ ‍ ‍ ‍ सा ‍ ‍ ‍ ‍ म म
ध़् ऩी सा रे़ || ध़् ऩी ध़् प़ | म़ ध़् सा ऽ | ऩी सा रे़ ग़ | ग़ ग़ प म || ग़ ऽ रे़ ऽ |
स ब नि स || बा ऽ रा ऽ | जो ऽ री ऽ | क र त र | ह त नि त || बो ऽ ली ऽ |
३ ‍ =(सम) ‍ २ ‍ ० ‍ ३ ‍ =

सा ‍ ‍ ‍ ‍ म म
सा रे़ सा ऽ | ऩी सा रे़ रे़ | सा ऩी ध़् प़ || प़ ग़ ग़ ऽ | प म ग़ रे़ | मग़ मप मग़ रे़सा |
ठो ऽ ली ऽ | प्या ऽ ऽ ऽ | रे ऽ ऽ ऽ || अ प ने ऽ | गां ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽव |
२ ‍ ० ‍ ३ ‍ = ‍ २ ‍ ०

ऩी * ‍ ‍ ‍ ऩी ‍ ‍ ‍ ‍ ×म
ध़् ऩी सा रे़ || ध़् ऩी ध़ प़ | म़ ध़् सा ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ग़ म प ध़् || नी नी सां ऽ |
स ब नि स || बा ऽ रा ऽ | जो ऽ री ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | मे रे तो ऽ || जि या में ऽ |
३ ‍ = ‍ २ ‍ ० ‍ ३ ‍ =

ग़ं ऽ रें़ ऽ | सां रें़ सां सां | सां नी ध़् ध़् || प ऽ प ऽ | ग़ ग़ ऽ म | ग़ ऽ रे़ सा |
ऐ ऽ सी ऽ | आ ऽ ब त | सो ऽ हि क || र ऽ त ऽ | स दा ऽ ऽ | रं ऽ ऽ ग |
२ ‍ ० ‍ ३ ‍ = ‍ २ ‍ ०

सा ‍ ‍ ‍ ‍ ऩी*
ऩी सा रे़ ग़ || म ऽ प ध़् | सांनी ध़्प मप ध़्प | मग़ मप मग़ रे़सा | ध़् ऩी सा रे़ || (सम)
त ब हि ह || मा ऽ रो ऽ | नाऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽव | स ब नि स ||
३ ‍ = ‍ २ ‍ ० ‍ ३

---

(३) राग – गुर्जरी तोडी (गूजरी)

इसका षाडव वर्ग है. आरोहावरोही में **पंचम** स्वर वर्ज है. **तोडी** रागमें **पंचम** स्वर वर्ज करनेसे यह **गूर्जरी** राग होता है. बाकि सब बात **तोडी** के तुल्य है. इसमें **"रें नी ध्"** इन स्वरों की संगती बारबार आती है.

आरोहावरोह स्वरुप

सा, रे् ग्, म ध् नी सां । सां, रें् नी ध्, म ग्, रे्, सा।

पकड :–नी़ सा, रे् ग्, म ध् म ग्; नी ध् म ग्, रे् ग्, रे्, सा.

नोट :—तोडी राग का स्वरविस्तारमें **पंचम** स्वर वर्ज करनेसे इस **गुर्जरी** राग का स्वरविस्तार होगा, अतएव वे यहां दुबारा नहीं लिखा.

सरगम – गुर्जरी – त्रिताल

म ग् म ध् ॥ रें् ऽ सां ऽ । नी ध् ऽ म । ध् म ग् ऽ । ध् म ग रे् ॥ ग् रे् सा ऽ ।
३ = (सम) २ ० ३ =

x
म ध् नी ध् । म ध् म ग् । म ग् म ध् ॥ सां ऽ सां ऽ । रें् गं् रें् सां । नी रें् नीं ध् ।
२ ० ३ = २ ०

*
ऽ गं् ऽ रें् ॥ सां रें् नी ध् । म ध् नी ध् । म ग् रे् सा । म ग् म ध् ॥ (सम)
३ = २ ० ३

गुर्जरी – त्रिताल

बेग लि आ पतिया पथिकवा, मोरे पिया सन मोरा संदेसवा.
घरिघरि पलपल छिनछिन मै का जुगसि बितत है,
बेग लि आ सियरी हो छतिया, पतिया पथिकवा.

	ध्	ध् ग्		सा ध्	
म ऽ म ध्	म ग् ऽ मध्	म ग् ऽ म	ग् रे् सा ऽ ‖	रे् ग् ऽ म	ध् नी ध् म
बे ऽ ग लि	आ ऽ ऽ पति	या ऽ ऽ प	थि क वा ऽ ‖	मो रे ऽ पि	या ऽ स न
= (सम)	२	०	३	=	• २

म म ग्		*	ध्	ग्	×
ध्म ग् ऽ म	ग् रे् सा ऽ ‖	म ऽ म ध्	म ग् ऽ मध्	म ग् ऽ म	म म ग् ग् ‖
मोऽ रा ऽ सं	दे स वा ऽ ‖	बे ऽ ग लि	आ ऽ ऽ पति	या ऽ ऽ प	घ रि घ रि ‖
०	३	=	२	०	३

ध्			सां	गं	सां
म· म ध् म	सां सां सां सां	नी रें सां ऽ	रें गं गं रें ‖	रें रें सां ऽ	नी ऽ सां रें
प ल प ल	छि न छि न	मै ऽ का ऽ	जु ग सि बि ‖	त त है ऽ	बे ऽ ग लि
=	२	०	३	=	२

रें	ध्			ध् ग्	
नी ऽ ध् ऽ	म ध् नी सां ‖	नी ध् ध् नी	ध् ऽ म ध्	म ग् ऽ म	ग् रे् सा ऽ ‖
आ ऽ ऽ ऽ	सि य री ऽ ‖	हो ऽ छ ति	या ऽ प ति	या ऽ ऽ प	थि क वा ऽ ‖
०	३	=	२	०	३

गुर्जरी तोडी – सूलताल

तेरो बल प्रताप ऐसो जैसो उडुगन में भानु है तू रब समान

अली बली महा बली प्रगट प्रबल रब निसान. ॥ तेरो ॥

वायू जल अकास परबत अग्नि भूम सब में तेरी धूम,

सप्त दीप नव खंडमें तेरो बखान.

सब दीप सब भूप सकल सो जन जन अनूप तेरी सर लागत कर प्रनाम तज गुमान.

तानसेन सत अजान, तूं है अत मेहरबान, जल थल में निशान, मुनिजन करत गान.

ध्	नी	ध्		म	ध्		ध्		
म ऽ	ध् रें	नी नी	ध् म	ध् ग् ‖	म ऽ	ध् ऽ	म ध्	सां ऽ	रें नी
ते ऽ	रो ऽ	ब ल	प्र ता	ऽ प ‖	ऐं ऽ	सो ऽ	जै ऽ	सो ऽ	उ डु
=(सम)	०	२	३	०	=	०	२	३	०

	ध्								
ध् नी	ध् म	ऽ ध्	धग् ऽ	ध् ऽ ‖	म ग्	रे् सा	ऽ सा	सा सा	ग् ग्
ग न	में भा	ऽ नु	हैऽ ऽ	तू ऽ ‖	र ब	स मा	ऽ न	अ ली	ऽ ब

	ध्			ध्				ध्	
ग् ऽ	म म	ऽ ध्	ध् ऽ	म ध् ‖	नी सां	रें नी	ध् नी	ध् म	ऽ ध्
ली ऽ	म हा	ऽ ब	ली ऽ	प्र ग ‖	ट प्र	ब ल	र ब	नि सा	ऽ न

ध् ×

म ध् | सां ऽ | सां सां | सां सां | ऽ सां || नी ध् | नी सां | गं् ऽ | रें् नी | ऽ ध्

वा ऽ | यू ऽ | ज ल | अ का | ऽ स || प र | ब त | अ ऽ | भि भू | ऽ म

ध् ध् ग् ध् ध्

म म | ध् ऽ | म ग् | ऽ रे् | ऽ सा || रे् ऽ | रे् ग् | ऽ ग् | म म | ध् ऽ |

स ब | में ऽ | ते री | ऽ धु | ऽ म || स ऽ | स दी | ऽ प | न व | खं ऽ |

(संचारी)

ध्

ध् म | ध् नी | ऽ सां | रें् सां | नी ध् || सा सा | ध् ऽ | ध् ध् | ध् नी | म ध्

ड में | ऽ ते | ऽ रो | ब खा | ऽ न || स ब | दी ऽ | प स | ब भू | ऽ प

ध्

म ध् | नी सां | रें् नी | ध् नी | ध् म || ऽ ध् | ध् म | ध् ऽ | म ग् | रे् ऽ

स क | ल सो | ज न | ज न | अ नू || ऽ प | ते ऽ | री ऽ | स र | ला ऽ

(आभोग)

ध् ध्

सा सा | सा सा | रे् ग् | ऽ ग् | म म || म ध् | ऽ ध् | म ऽ | म ध् | ऽ ध्

ग त | क र | प्र ना | ऽ म | त ज || गु मा | ऽ न | ता ऽ | न से | ऽ न

सां सां | सां सां | ऽ सां | सां ध् | ध् ऽ || नी सां | गं् ऽ | रें् सां | ऽ सां | नी रें्

स त | अ जा | ऽ न | तूं ऽ | है ऽ || अ त | म्हे ऽ | र बा | ऽ न | ज ल

ध्

नी ध् | ध् गं् | गं् गं् | रें् सां | रें् गं् || रें् ऽ | सां ऽ | ध् नी | ध् म | ऽ ध्

थ ल | में ऽ | नि शा | ऽ न | मु नि || ज ऽ | न ऽ | क र | त गा | ऽ न

गुर्जरी – धमार.

या बिरजमें कैसी धूम मचाई मानो मघवा झर लाई.

इतते आई कुंवरी राधिका, उतते कुंवर कन्हाई.

खेलत फाग परसपर हिलमिल, ये छबि बरानि न जाई.

उडत गुलाल लाल भयो बादर, केसर रंग की कीच मचाई.

नी नी ध्

ध् ऽ ऽ | म ग्म | ध् ऽ | म ग् ऽ | रे् ग् | रे् सा || ध् ऽ म | ध् म | ग् रे् |

या ऽ ऽ | बि जे | में ऽ | कै ऽ ऽ | ऽ ऽ | सी ऽ || धू ऽ म | ऽ म | चा ऽ |

= (सम) ० २ ० ३ ० = ० ३

सा ध्
ग् रे् सा | सा ऽ | नी रे् || ग् ग् रे् | सा ऽ | म ध् | म ग् रे् | ग् रे् | सा ऽ ||
ऽ ऽ ई | मा ऽ | नो ऽ || म ध ऽ | वा ऽ | झ र | ऽ ऽ ऽ | ला ऽ | ई ऽ ||
० ३ ० = ० २ ० ३ ०

×
म ध् ऽ | नी सां | सां ऽ | सां ऽ सां | सां सां | नी रें् || सां गं् रें् | सां नी | रें् नी |
इ त ऽ | ते ऽ | आ ऽ | ई ऽ कुं | व रि | ऽ ऽ || रा ऽ धि | का ऽ | उ त |
= ० २ ० ३ ० = ० २

ध्
ध् म ग् | म ध् | ध् म || ग् ऽ रे् | ग् ऽ | नी ध् | म ग् रे् | ग् ऽ | रे् सा ||
ते ऽ ऽ | कुं ऽ | व ऽ || र ऽ ऽ | क ऽ | न्हा ऽ | ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ | ई ऽ ||
० ३ ० = ० २ ० ३ ०

(संचारी)

सा नी़ सा ध्
सा ध् ध् | नी म | ध् ध् | रें् नी ध् | म ग् | रे् सा || नी़ रे् ध़् | नी़ रे् | ग् म |
खे ल त | फा ऽ | ऽ ग | प र स | प र | हि ल || मि ल थे | ऽ छ | बि ब |
= ० २ ० ३ ० = ० २

(आभोग)
ध् म ग् | रे् ग् | रे् सा || सा सां ऽ | सां ऽ | रें् गं् | ऽ गं् ऽ | मं ऽ | गं् गं् ||
र नी न | जा ऽ | ई ऽ || उ ड ऽ | त ऽ | गु ला | ऽ ल ऽ | ला ऽ | ऽ ल ||
० ३ ० = ० २ ० ३ ०

सां ध् सां ध्
रें् नी ऽ | रें् ऽ | म ध् | ध् ऽ ध् | नी रें् | नी ध् || म ध् म | ग् रे् | ग् रे् |
भ ऽ ऽ | यो ऽ | बा ऽ | द ऽ र | के ऽ | स र || रं ऽ ग | की ऽ | की ऽ |
= ० २ ० ३ ० = ० २

ध़्
म ध् म | ग् रे् | सा ऽ ||
च ऽ म | चा ऽ | ई ऽ || (सम)
० ३ ०

(४) राग लछमी तोडी.

यह राग **आसावरी** तथा **खमाज मेल** के मिलापसे बना हुआ प्रतीत होता है. इसमें दोनो **गंधार**, दोनो **धैवत** तथा दोनो **निषाद्** का व्यवहार होता है. आरोहमें **तीव्र गंधार**, **कोमल धैवत** तथा दोनो **निषाद**, और अवरोहमें **कोमल गंधार**, **तीव्र धैवत** तथा **कोमल निषाद** लगातें है. **तीव्र धैवत** स्वर बहोत थोडा प्रमाणमें "**नी् ध प**" ऐसा लगता है. इसमें "**नी् प**" इन स्वरों की संगती बारबार आती है. इसके अंतरे का उठाव "**म् प, प ध् प, नी सां**" अथवा "**म् म्, प प, नी सां**" ऐसा होता है. इसका वादी स्वर **म्** है. इसकी गती मध्य और तार सप्तकों में विशेष है. गानेका समय दिनका दूसरा प्रहर है. यह राग बहोत कम गातें हैं.

आरोहावरोह स्वरूप.

सा रे ग म्, नी् ध प, म्, प ध् नी् सां (अथवा **म् प नी सां**)।

सां, नी् प, म् ग्, रे, सारे ऩी् सा .

लछमी तोडी – चौताल

ए झूमत झामत आवत हाथन ले आरत ए कुवरी.
धूप सुगंधित पान फूल लिये धाई मन ईच्छा पाई सगरी.

	म्										
सा रे	ग् ऽ	म् प	प सां	नी् सां	प गम् ‖	म् म्	नी् ध	प प	म् ऽ	ग ऽ	प म्
ए ऽ	झू ऽ	म त	झा ऽ	म त	आ ऽ ‖	व त	हा ऽ	थ न	ले ऽ	आ ऽ	र त
=(सम)	०	२	०	३	४	=	०	२	०	३	४

						×					
ऽ ऽ	प सां	नी् प	म् ग्	ऽ सारे	ऽ सा ‖	म् प	प ध्	प प	नी सां	सां सां	ऽ सां
ऽ ऽ	ए ऽ	कु व	री ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ ‖	धू प	सु गं	धि त	पा ऽ	न फू	ऽ ल

				म्							
सां सां	नी सां	सां ऽ	रें सां	ग म्	म ऽ ‖	प ध्	नी् सां	नी् प	म् ग्	ऽ सारे	ऽ सां
लि ये	धा ऽ	ई ऽ	म न	ई ऽ	च्छा ऽ ‖	पा ऽ	ई ऽ	स ग	री ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ

लछमी तोडी – धमार.

धूम मची है बृजमें श्याम सुंदर की, आवत ले पिचकारी.

हिलमिल सखी सहेली आई करके सिंगार जोबनवा को.

सा ़नी्	सा रे	ग रेग म्	म् ऽ	प ध्	प सां ऽ	ग रेग	म् म्
ध् ऽ	म म	ची ऽ ऽ	है ऽ	बृ ज	ऽ में ऽ	श्या ऽ	ऽ म
३	०	=(सम)	०	२	०	३	०

म् प ध्	नी् सां	नी् ऽ	प प ऽ	म् प	नी् प	म् ग् ऽ	रे ऽ	सारे ऽ	़नी् ऽ सा
सुं द र	की ऽ	आ ऽ	व त ऽ	ले ऽ	पि च	का ऽ ऽ	री ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
=	०	२	०	३	०	=	०	२	०

×

म् म्	प प	नी् प ऽ	नी् ऽ	सां नी	सां ऽ ऽ	रें नी्	सां ऽ	रें सां ऽ
हि ल	मि ल	स खी ऽ	स ऽ	हे ऽ	ली ऽ ऽ	आ ऽ	ई ऽ	क र ऽ
३	०	=	०	२	०	३	०	=

ग म्	प ध्	नी् सां ऽ	नी् ऽ	प प	म् ग् ऽ	रे ऽ	सारे ऽ	़नी् ऽ सा
के सिं	गा ऽ	र ऽ ऽ	जो ऽ	ब न	वा ऽ ऽ	को ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
०	२	०	३	०	=	०	२	०

---

(५) राग मुलतानी

इसका ओडव संपूर्ण वर्ग है. आरोहमें **ऋषभ** तथा **धैवत** वर्ज है. **तोडी** रागमें "**रे़, सा**" ऐसा **ऋषभ** स्वर पर ठहरकर **षडज** स्वर लेतें है. इस रागमें उक्त स्वर "**रे़ सा**" ऐसा एक संग लिया जाता है, जिससे भिन्नता दिखाई पडती है. **तोडी** की **गांधार ऋषभ** आश्रित है, और इस रागकी **गांधार** स्वाधीन है. अवरोहमें **ऋषभ** और **धैवत** कमजोर है. उक्त स्वरों पर जोर देनेसे **तोडी** की आशंका है. इसमें **वसंत** रागके सदृश **मध्यम** तथा **गंधार** स्वर "**म ग, म ग्**" ऐसा दुबारा लिया जाता है. **मीया तानसेनजी** के घराणे के गायक **वसंत** रागमें सर्वदा **कोमल गंधार** का व्यवहार करतें है, और उसको "**उतरी वसंत**" कहतें है, जैसे रातको **उतरी वसंत** है वैसे दिनको यह **मुलतानी** राग है. जैसे

रातके ३ प्रहरमें **उतरी वसंत** गाये बाद संधिप्रकाश के रागों गातें है वैसे दिनके ३ प्रहरमें यह **मुलतानी** राग गायें बाद **पूर्वी थाट** के संधिप्रकाश रागों गातें है, अतएव **उतरी वसंत** और **मुलतानी** को परमेलप्रवेशक राग कहतें हैं.

"**प ग्, रे् सा**" यह तान इसमें प्रधान है, जो सुनतेही यह राग तुरत पयछाना जाता है. यह तान इसका रागवाचक भाग है अतएव उसको ध्यानमें रखना अवश्य है. इसमें **सा, प** तथा **नी** इन तीन स्वरों मुख्य विश्रांति स्थान है. उन स्वरों का इसमें बहुलत्व है. आरोहमें **निषाद** स्वरको स्थिर करतें है.

इसके अंतरे का उठाव "**प प ग्, म प, नी सां**" ऐसा बहुधा होता है. इसका वादी स्वर **प** है. इसकी गती मध्य और तार सप्तकों में विशेष है. इसको दिनके तीसरे प्रहरमें **काफी** थाट के **धनाश्री** अंग के रागों गायें बाद गातें है. इस राग की शकल भी **धनाश्री, भीमपलासी,** आदि रागों के समान है; सिर्फ स्वरों का भेद है. इसमें धृपद, ख्याल, तराने इत्यादि आसानीसे गायें जातें है. इसमें घूमना फिरना कुछ कठिन नहीं. यह राग बहोत मधुर होनेसे अति लोकप्रिय है. कोई गुणीजन इसमें **म** वादी और **नी** संवादी मानतें हैं.

आरोहावरोह स्वरूप.

ऩी सा, ग् म प, नी, सां । सां नी ध् प, म ग्, रे् सा

म म

पकड :– ऩी सा, म ग्, प म ध् प; नी ध् प म ग्; प ग्, रे् सा.

स्वरविस्तार.

सा, ऩी सा, म ग्, म प; म प, ध् म प, म ग्, म ग्; ग् म प म ग्, रे् सा; ऩी रे् सा। सा, ऩी सा, प़ ऩी सा; म ग्, प; ध् म प, नी ध्, प, ग् म प; सां, नी ध्, प, म ग्; ग्मपध्

म म म

मपग्; प ग्, रे् सा; ऩी रे् सा। ऩी सा ग् म प; ग् म प; म प, ध् प; नी ध्, प; सां नी ध्, प; ऩी सा ग् म प नी सां रें सां नी ध् प; नी ध्, प; म प ध् म प, म ग्, म ग्; ग्

म म म

म प म ग्, रे् सा; ग् म प नी सां गं् रें् सां नी ध् प ग्; प ग्, रे् सा; ऩी रे् सा। ऩी सा, म ग्; प म, ध् प, म ग्; ग् म प नी सां नी ध् प, म ग्; ग् म प नी सां, गं्, रें्, सां, नी ध्

प म ग़्; ग़् म प नी ध़् प म ग़्, रे़् सा; ऩी सा, म ग़्, प। प प, ग़्, म प, नी; सां रें़् सां;

ग़ं रें़् सां, नी, सां, ग़ं मं पं, ग़ं, रें़् सां नी; सां, रें़् सां, नी ध़् प; ग़् म प नी; सां, ग़ं रें़् सां,

नी ध़्, प; म प, ग़्, म ग़्; ग़् म प म ग़्; प ग़्, रे़् सा; ऩी सा, म ग़्, प.

सरगम – मुलतानी – चौताल.

नी ध़्। प म। ग़् म। प म। ग़म ग़रे़्। सा ऩीसा ॥ मग़् पम। ध़प नी। सांनी ध़प। मप नी।
=(सम) ० २ ० ३ ४ = ० २ ०

ध़प मग़्। रे़सा ऩीसा ॥ प मप। ग़म पनी। ऽसां मंग़ं। मंपं ऽमं। ग़ंमं ग़ंरें़्। सां सां ॥
३ ४ = ० २ ० ३ ४

रें़् सांनी। ध़प मप। ग़म पनी। ऽध़् ऽप। म ग़ग़्। ऽम ऽप ॥ सां पनी। सांरें़् सां। सां पनी।
= ० २ ० ३ ४ = ० २

पध़् मप। ग़म रे़ग़्। सारे़् ऩीसा ॥ (सम)
० ३ ४

मुलतानी – त्रिताल. (मध्य लय)

हमसे तुम रार न करो रे, तूं तो धीत लंगर मगवा रोके रे.
हूं जातीथी जमना के तट नीर भरनको, पकर छीन मोरी गगरि फोरी रे.

।। म प	ध़प मग़् रे़् सा	रे़ऩी सा ऩी सा	मग़् म ग़म पनी	सांनी ध़प मग़् मप
।। ह म	सेऽ ऽ तु म	राऽ ऽ ऽ र	नऽ क रोऽ ऽ	ऽ रेऽ ऽ हम
०	३	= (सम)	२	०

ध़प मग़् रे़् सा	रे़ऩी सा ऩी सा	मग़् ऽ ग़् म	प नी सां ग़ंरें़्	सां नी ध़् प
सेऽ ऽ तु म	राऽ ऽ ऽ र	नऽ ऽ तूं तो	धी ऽ त लंऽ	ग र म ग
३	=	२	०	३

मप ध़प मग़् ऽ	ग़् म ग़म पनी	सांनी ध़प मग़् मप	ध़प मग़् रे़् सा
वाऽ ऽ ऽ ऽ	रो ऽ केऽ ऽ	ऽ रेऽ ऽ हम	सेऽ ऽ तु म
=	२	०	३

×				
प ऽ प ऽ	म ध्प मग् म	ऽ ग्म प नी	सां गं् रें् सां ‖	नी सांनी ध् प
हूं ऽ जा ऽ	ती ऽ थीऽ ऽ	ऽ जम ना ऽ	के ऽ त ट ‖	नी ऽ र भ
=	२	०	३	=

म				
ग् ग् रे् सा	ऽ पनी सां गं्	ऽ रें् सां नी ‖	ऽ ध् प म	ग् म ग्म पनी
र न को ऽ	ऽ पक र छीं	ऽ न मो री ‖	ऽ ग ग रि	फो ऽ रीऽ ऽ
२	०	३	=	२

*		
सांनी ध्प मग् मप	ध्प मग् रे् सा ‖	(सम)
ऽ रेऽ ऽ हम	सेऽ ऽ तु म ‖	
०	३	

मुलतानी – चौताल

तूही बिधाता लोकपती नमो नमो संसार तारत भार उतारे.
ग्राह को मार गज के प्रान राखे प्रेम भक्त के हारे.
भक्त बिभीषन को राज दियो लंकापति रावन मारे.
कौरव मारे कंसहु मारे ग्वाल बने गोपिन के दुलारे.

ग् ऽ	प ऽ	प ऽ	प प	ऽ ग्	म ग् ‖	रे् सा	नी़ नी़	सा नी़	ध़् प़	नी़ सा	सा सा
तू ऽ	ऽ ऽ	ही ऽ	बि धा	ऽ ऽ	ता ऽ ‖	लो ऽ	क प	ऽ ती	ऽ ऽ	न मो	न मो
=	०	२	०	३	४	=	०	२	०	३	४

						प					
नी़ ऽ	सा सा	प प	ध् म	प ग्	म ग् ‖	म प	ऽ प	प नी	ध् प	म ग्	रे् सा
सं ऽ	ऽ सा	ऽ र	ता ऽ	ऽ ऽ	र त ‖	भा ऽ	ऽ र	उ ता	ऽ ऽ	रे ऽ	ऽ ऽ

×		म									
प ऽ	मग् म	ग् ऽ	प नी	सां सां	सां सां ‖	सां गं्	रें् सां	नी ऽ	ध् प	प ग्	म ग्
ग्रा ऽ	हऽ ऽ	को ऽ	मा ऽ	ऽ र	ग ज ‖	के प्रा	ऽ न	रा ऽ	ऽ खे	प्रे ऽ	ऽ म

(संचारी)

प											
नी ध्	प प	ऽ प	ग् म	ग् रे्	ऽ सा ‖	सा प	प ऽ	प म	ग् म	ग् रे्	सा सा
भ ऽ	क्त के	ऽ हा	ऽ ऽ	ऽ रे	ऽ ऽ ‖	भ ऽ	क्त ऽ	बि भी	ऽ ष	ऽ न	ऽ को

नी ऽ	सा सा	नी नी	ध् प	म प	नी सा ‖	सा सा	नी ऽ	सा ऽ	सा ऽ	म ग्	रे् नीसा
रा ऽ	ऽ ज	दि यो	ऽ ऽ	लं ऽ	का ऽ ‖	प ति	रा ऽ	व ऽ	न ऽ	मा ऽ	रे ऽ

(आभोग)

सा नी	नी सां	(सां) नी सां	सां ऽ	गं् रें्	सां सां ‖	नी ध्	प नी	सा मग्	मग् म	म प	प ऽ
कौ ऽ	र व	मा ऽ	रे ऽ	कं ऽ	स ह्रु ‖	मा ऽ	रे ग्वा	ऽ ल	ऽ ऽ	ब ऽ	ने ऽ

ध् म	(म) प ग्	म ग्	म प	(म) ग् ऽ	रे् नीसा ‖
गो ऽ	पि न	के ऽ	ढु ऽ	ला ऽ	रे ऽ ‖

मुलतानी - धमार

एरी तेरो कैसे निभेगो मान, कान्हा बिन कैसे आयो मदन अमान सो.
निपट निठुर सिख मान ले मोरी, भौवें न तान कमान सो.
मेरो कहो तू मान ले, माननी कर राखो हिया ज्ञान.
रतन निरपत चितचोर सांवरो छलबस करत सुजान.

सा रे् ग प

नी सा	ग् म ‖	प ऽ ऽ	प म	प सां	नी ध् ऽ	प ऽ	प ऽ ‖
ए री	ते रो ‖	कै ऽ ऽ	से ऽ	नि भे	गो मा ऽ	न ऽ	का ऽ ‖
३	०	=(सम)	०	२	०	३	०

प ऽ ग्	म ग्	म प	सां नी ध्प	प ग्	(ग्) म प ‖	म ग् रे्	सा ऽ	(सा) नी सा
न्ह ऽ ऽ	ऽ ऽ	बि न	कै से ऽ	आ ऽ	यो ऽ ‖	म द न	अ ऽ	मा ऽ
=	०	२	०	३	०	=	०	२

सा* रे् म प ×

ग् रे् नीसा	नी सा	ग् म ‖	प प प	ऽ ग्	म ग्	म प नी	ऽ ऽ	सां गं् ‖
न सो ऽ	ए री	ते रो ‖	नि प ट	ऽ ऽ	ऽ ऽ	नि ठु र	ऽ ऽ	सि ख ‖
०	३	०	=	०	२	०	३	०

सा* म प (संचारी)
ग़ रे़ सा | नी़ सा | ग़ म || म ग़ म | प प | प ऽ | ऽ प ऽ | म प | प ऽ ||
ऽ न सो | ए री | ते रो || भे ऽ रो | ऽ क | हो ऽ | ऽ तू ऽ | मा ऽ | न ऽ ||
० ३ ० = ० २ ० ३ ०

म सा
नी सां नी | ध़ प | प ऽ | ग़ म ग़ | म ग़ | म प || ग़ ऽ रे़ | सा ऽ | नी़ ऽ |
ले ऽ मा | ऽ न | नी ऽ | ऽ ऽ ऽ | क र | रा ऽ || खो ऽ हि | या ऽ | ज्ञा ऽ |
= ० २ ० ३ ० = ० २

(आभोग)
सा ग़ ऽ | रे़ सा | नी़ सा || म प म | ग़ म | प नी | ऽ सां गं़ | रें़ नी | सां रें़ ||
ऽ ऽ ऽ | न ऽ | ऽ ऽ || र त न | ऽ नि | धी त | ऽ चि त | चो ऽ | ऽ र ||
० ३ ० = ० २ ० ३ ०

म
नी सां नी | ध़ पम | प नी | ऽ सां रें़ | सां नी | ध़ प || प ग़ म | प ध़ | प म | ग़ रे़ सा |
सां ऽ व | रो ऽ | छ ल | ऽ ब स | क र | त ऽ || सु जा ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ न |
= ० २ ० ३ ० = ० २ ०

तराणा – मुलतानी – त्रिताल

नाद्र तुंद्र दीम तनन तन देरेना, तन देरेना तन देरेना तदारे दानि.

नाद्र तुंद्र दीम तादीम तादीम तादीम दीम तनन नानाना नारे नारे नारे.

नाद्र तुंद्र मौला ऐसे मुरशद को मिला दे, याद तेरी को मुझे जाम पिला दे.

प सा प, नी प ध़ म, प ग़ म प, नी सा ग़ म, प नी सा ग, रे़ नी ध़ प, ग़ रे़ सा.

|: नी़ सा ग़ म || प ऽ ऽ ध़ | म प ग़ म | प नी ऽ सां | नी रें़ सां नी || ध़ प म प |
ना द्र तुं द्र || दी ऽ ऽ म्त | न न त न | दे रे ऽ ना | त न दे रे || ना ऽ त न |
३ =(सम) २ ० ३ =

×प सां
म ग़ म प | म ग़ रे़ सा :| ध़ प मग़ मप || नी ऽ सां ध़ | ऽ नी प ऽ | ध़ म ऽ प |
दे रे ना त | दा रे दा नि :| ना द्र तुंऽ द्रऽ || दी ऽ म्ता दी | ऽ म्ता दी ऽ | म्ता दी ऽ म्दी |
२ ० ३ = २ ०